सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 208, नई दिल्ली, रविवार 05 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

03 एनडीसीसी कन्वेन्शन सेंटर में शिकायत निवारण सुविधा शिविर का आयोजन किया
06 संतुलित जीवनशैली से शरद ऋतु में रोग मुक्ति
08 रेलवे का बड़ा फैसला, ब्रह्मपुर सूरत अमृत भारत साप्ताहिक एक्सप्रेस नियमित रूप से चलेगी

डीटीसी बसों में महिला अपराध रोकने के लिए तैनात बस मार्शल में से कई अपराधी

दिल्ली में डीटीसी बसों में महिला अपराध रोकने के लिए तैनात बस मार्शल में से कई अपराधी निकले हैं। पुलिस जांच में 3500 होमगार्ड में से 80 आपराधिक पृष्ठभूमि के पाए गए। 374 के पते गलत मिले। डीटीसी ने इन्हें हटा दिया है। वेतन न मिलने से बस मार्शल परेशान हैं और उन्हें अपनी दीवाली काली होने का डर सता रहा है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। डीटीसी की बसों में जिन बस मार्शल पर महिला अपराध रोकने की जिम्मेदारी है, इनमें से ही कई अपराधी हैं। पुलिस जांच में बस मार्शल के तौर पर सेवा दे रहे 3500 होमगार्ड में से 80 आपराधिक पृष्ठभूमि के निकले हैं। इन पर महिलाओं की गरिमा भंग करने से लेकर शील भंग करने की धाराओं के तहत मुकदमे दर्ज हैं। 374 के पते और आधार कार्ड में गड़बड़ी सामने मिली है।

कइयों के पते भी मिले गलत

डीटीसी ने इन्हें बस मार्शल के काम से हटाकर वापस होम गार्ड मुख्यालय भेज दिया है। उधर, होम गार्ड मुख्यालय ने इन लोगों का पुनः पुलिस सत्यापन कराकर आपराधिक पृष्ठभूमि वालों को छोड़कर अन्य को क्लीनचिट दे दी है और इन लोगों को ड्यूटी देने के लिए पुनः फाइल दिल्ली सरकार के पास भेजी है।

बसों में महिला सुरक्षा को आधार बनाते हुए लगाए गए बस मार्शल को लेकर पिछले कुछ सालों से विवाद रहा है। यह विवाद उस समय और गहरा गया था जब 2022 में दिल्ली की तत्कालीन आप सरकार के समय बस मार्शल के तौर पर काम कर रहे 10 हजार सिविल डिफेंस वालंटियर को काम से हटा दिया गया था। हालांकि, उससे पहले से होमगार्ड भी बसों में बस मार्शल के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं, जिनकी संख्या अब तीन हजार के करीब रह गई है।

464 होमगार्ड के मामले में गड़बड़ी

बस मार्शल के आपराधिक पृष्ठभूमि के होने की सूचना मिलने पर दिल्ली में भाजपा सरकार आने पर परिवहन विभाग ने बसों में बस मार्शल के तौर पर लगे होमगार्ड का पुलिस सत्यापन कराने का का फैसला लिया था। परिवहन विभाग द्वारा दिल्ली पुलिस को लिखे गए पत्र के आधार पर जब दिल्ली पुलिस ने जांच की तो 464 होमगार्ड के मामले में गड़बड़ी पाई गई।

विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमे दर्ज

इनमें से 374 ऐसे थे कि बताए गए पते पर पहुंचने पर पुलिस टीम को इनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। उन पतों पर आसपास के लोगों ने भी ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में भी जानकारी होने से इंकार किया। इन्हीं पतों पर कई के आधार कार्ड भी पाए गए थे जबकि 80 पर विभिन्न धाराओं

के तहत मुकदमे दर्ज होने के बारे में पुलिस को जानकारी मिली। इस रिपोर्ट के मिलने के बाद दिल्ली परिवहन निगम ने 464 होमगार्ड को ड्यूटी हटा दिया।

19 के मामले में केस पेंडिंग

इस पर होमगार्ड मुख्यालय ने इस मामले में पुनः सत्सापन का फैसला लिया और होम गार्ड कमांडेंट एस के शौकीन के नेतृत्व में एक कमेटी गठित की। इस कमेटी में दिल्ली पुलिस के स्पेशल ब्रांच के एसीपी, आशीष अनन, दिल्ली पुलिस के निरीक्षक जितेंद्र कुमार और होम गार्ड से अधिकारी कंवरपाल सदस्य थे।

समिति ने काम से हटाए गए सभी 464 होम गार्ड के दस्तावेजों का सत्यापन किया, जिसमें आपराधिक पृष्ठभूमि वालों को छोड़कर अन्य सभी को क्लीनचिट दे दी है जबकि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले 80 होम गार्ड में से 61 को अदालतों से बरी बताया है। उनकी रिपोर्ट के अनुसार, केवल 19 के मामले में केस पेंडिंग हैं।

दीवाली काली होने का डर सता रहा

हालांकि, डीटीसी ने ड्यूटी से हटाए गए इन लोगों को फिर से नौकरी पर नहीं लिया है। कुछ दिन पहले होम गार्ड मुख्यालय ने फिर से स्पेशल ब्रांच के पुनः सत्यापन रिपोर्ट वाली फाइल डीटीसी के पास भेजी है।

बस मार्शल के तौर पर सेवाएं दे रहे तीन हजार होम गार्ड के वेतन को लेकर भी मुद्दा गरमा रहा है। बस मार्शल के तौर पर सेवाएं दे रहे इन लोगों को जून से लेकर अभी तक का वेतन नहीं मिला है।

होमगार्ड यहां तक परेशान हैं कि उन्हें दिल्ली परिवहन निगम की जगह होमगार्ड मुख्यालय किसी और विभाग में ड्यूटी दे दे। जिससे उन्हें समय पर वेतन मिल सके। इन लोगों को अपनी दीवाली काली होने का डर सता रहा है।

डीटीसी के प्रबंध निदेशक ने कहा

वेतन में देरी आदि के बारे में पूछे जाने पर दिल्ली परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक जितेंद्र यादव ने कहा कि उन्होंने अभी कुछ समय पहले डीटीसी में ज्वाइन किया है। उन्होंने आश्चसन दिया कि वह इस मामले को दिखाएंगे और समय पर वेतन दिलवाने की पूरी कोशिश करेंगे।

इन अपराधों के दर्ज हैं मामले

महिला की गरिमा का अपमान करने के इरादे से शब्द बोलने, महिला का शील भंग करने के इरादे से उसे पर हमला करना और आपराधिक बल का प्रयोग करना, धोखाधड़ी के उद्देश्य से जालसाजी के लिए दस्तावेजों को असली बता कर इस्तेमाल करना, सार्वजनिक स्थान पर शराब पीना, किसी व्यक्ति का अपहरण कर बंधक बनाना की धाराओं के तहत मुकदमे दर्ज हैं।

अपहरण करने के आरोप भी मिले

इसी के साथ किसी को चोट पहुंचाने, मारपीट करने, लापरवाही से वाहन चलाने, किसी विवाहित महिला को अपराधी इरादे से बहला कर उसका अपहरण की धाराओं के तहत मुकदमे दर्ज हैं। ये मुकदमे अदालत में पेंडिंग हैं। स्पेशल ब्रांच की रिपोर्ट के अनुसार हत्या, हत्या का प्रयास सहित कई अन्य धाराओं के तहत दर्ज मुकदमों का अब निपटारा हो चुका है।

दिल्ली भारत देश की राजधानी, ना महिला सुरक्षा, ना सुरक्षित और सुखद सड़के, ना जाम मुक्त सड़के, ना सुखद सुरक्षित, सार्वजनिक सवारी सेवा

क्या सच में ऐसे ही खूबसूरत होती हैं राजधानी ?

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ ने दिल्ली सरकार को दिया आखरी चेतावनी पत्र, कर्मचारियों की समस्या दूर न होने पर जल्द होगा आंदोलन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। DTC की मेजोरिटी यूनियन दिल्ली परिवहन मजदूर संघ ने डीटीसी विभाग और कर्मचारियों की दुर्दशा को देखते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री, परिवहन मंत्री, ट्रांसपोर्ट विभाग और MD डीटीसी को ज्ञापन देकर आंदोलन का आगाज कर दिया है। 8 से 10 दिनों के अंदर यदि सरकार बैठक कर कर्मचारियों की समस्या का समाधान नहीं करती है तो दिल्ली परिवहन मजदूर संघ डीटीसी की सभी यूनियन व संगठनों की सामूहिक बैठक बुलाकर एक बड़े आंदोलन की तारीख बहुत जल्द निर्धारित करने जा रहा है। मजदूर संघ ने डीटीसी के समस्त कर्मचारी सभी यूनियन एवं सभी संगठन इसके लिए पूरी तरह से तैयार रहने को कहा है कर्मचारियों की समस्या पिछले 15 सालों से चली आ रही है समस्या का समाधान जल्द सरकार को निकलना होगा अन्यथा दिल्ली की सड़कों पर बसे नजर धोने की आशंका बनी रहेगी 862 रुपए में कर्मचारी अपना परिवार नहीं चला पा रहे हैं।

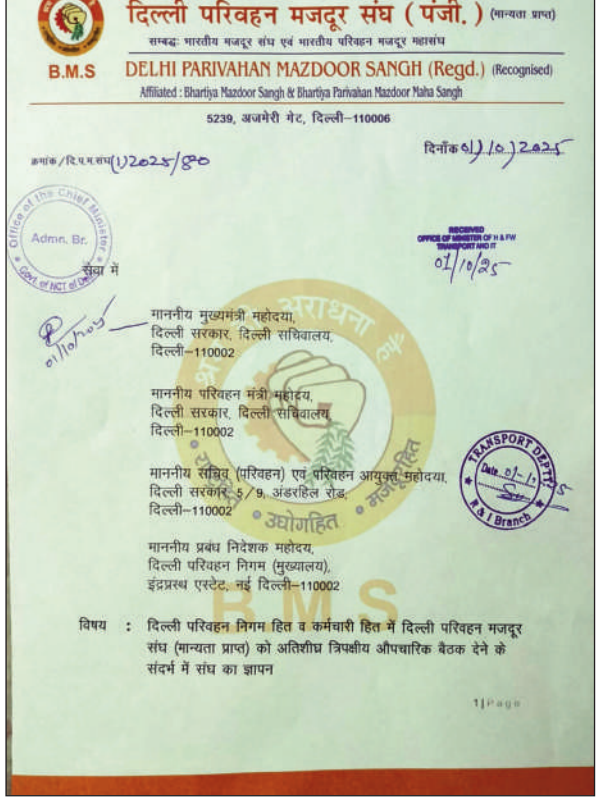

राष्ट्र हित — उद्योग हित — मजदूर हित
'वन्दे मातरम'
दिल्ली परिवहन मजदूर संघ (पंजी.) (मान्यता प्राप्त)
सम्बद्ध: भारतीय मजदूर संघ एवं भारतीय परिवहन मजदूर महासंघ
B.M.S
DELHI PARIVAHAN MAZDOOR SANGH (Regd.) (Recognised)
Affiliated : Bhartiya Mazdoor Sangh & Bhartiya Parivahan Mazdoor Maha Sangh
5239, अजमेरी गेट, दिल्ली–110006

क्रमांक/दि.प.म.संघ/(1)2025/80 — दिनाँक 01/10/2025

Office of the Chief Minister, Admn. Br., Govt. of NCT of Delhi

RECEIVED OFFICE OF MINISTER OF H & FW TRANSPORT AND IT 01/10/25

सेवा में

माननीय मुख्यमंत्री महोदया,
दिल्ली सरकार, दिल्ली सचिवालय,
दिल्ली–110002

माननीय परिवहन मंत्री महोदय,
दिल्ली सरकार, दिल्ली सचिवालय,
दिल्ली–110002

माननीय सचिव (परिवहन) एवं परिवहन आयुक्त महोदय,
दिल्ली सरकार, 5/9, अंडरहिल रोड,
दिल्ली–110002

TRANSPORT DEPTT. Date 01-10-25 R & I Branch

माननीय प्रबंध निदेशक महोदय,
दिल्ली परिवहन निगम (मुख्यालय),
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–110002

विषय : दिल्ली परिवहन निगम हित व कर्मचारी हित में दिल्ली परिवहन मजदूर संघ (मान्यता प्राप्त) को अतिशीघ्र त्रिपक्षीय औपचारिक बैठक देने के संदर्भ में संघ का ज्ञापन

1|Page

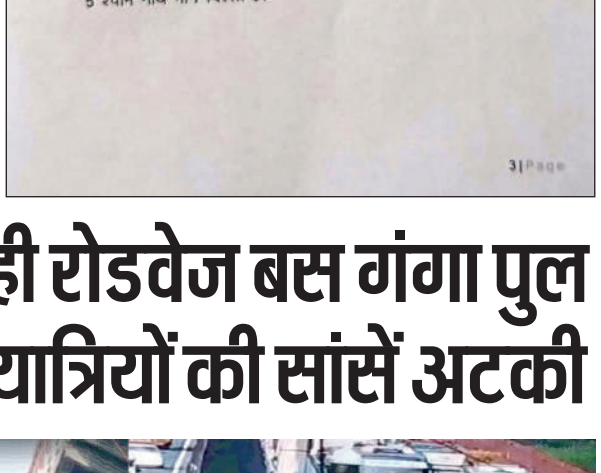

माननीय परिवहन मंत्री महोदय, दिल्ली सरकार ने उपरोक्त मांगों पर अतिशीघ्र त्रिपक्षीय बैठक नहीं बुलाई तो दिल्ली परिवहन मजदूर संघ (मान्यता प्राप्त) आंदोलन करने के लिए विवश होगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी दिल्ली सरकार की होगी।

अतः आपको इस पत्र के माध्यम से पूर्व सूचना दी जाती है कि उपरोक्त मांगों का समाधान किया जाए।

धन्यवाद सहित,

भवदीय
भानू भास्कर
महामंत्री
मोबाइल नं0 9971076364

प्रतिलिपि सूचनार्थ :–
माननीय उप–मुख्य महाप्रबंधक महोदय (औद्योगिक संबंध) DTC मुख्यालय

अग्रिम सूचनार्थ :–
माननीय श्रम आयुक्त महोदय,
श्रम विभाग, दिल्ली सरकार
5 श्याम नाथ मार्ग दिल्ली 54

3|Page

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

SCAN ME

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

रामपुर से दिल्ली जा रही रोडवेज बस गंगा पुल पर हवा में लटकी, 16 यात्रियों की सांसें अटकी

हापुड़ के ब्रजघाट स्थित गंगा पुल पर एक रोडवेज बस रेलिंग तोड़कर लटक गई। बस रामपुर से दिल्ली जा रही थी। संतुलन बिगड़ने से यह हादसा हुआ जिससे यात्रियों में हड़कंप मच गया। चीख–पुकार मच गई। पुलिस एवं राहगीरों की मदद से बस से सवारियों को उतरा। पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और बस को क्रेन के जरिये हटाया गया।

परिवहन विशेष न्यूज

गढ़मुक्तेश्वर। कल्पना कीजिए, आप बस से जा रहे हैं, तभी अचानक, बस की स्पीड बढ़ती है, चालक नियंत्रण खो देता है और अगले ही पल बस गंगा पुल की मजबूत रेलिंग को तोड़ते हुए दो फ्लाईओवर के बीच अटक कर हवा में लटक जाती है।

नीचे बहती गंगा नदी का गहरा पानी और सिर पर मौत का साया। शनिवार को ऐसी ही घटना ब्रजघाट के गंगा पुल पर घटी है, जहां एक बड़ा हादसा होने बाल-बाल टल गया। दुर्घटना के बाद बस सवार सभी 16 यात्री, चालक व परिचालक को सुरक्षित निकाल लिया गया। मगर, इस घटना ने सड़क सुरक्षा पर फिर से सवाल खड़े कर दिए हैं।

शनिवार की शाम करीब चार बजे चालक अनुपम रामपुर डिपो की रोडवेज बस को लेकर ब्रजघाट के गंगा पुल पर पहुंचा। बस में कुल 16 यात्री सवार थे, जो दिल्ली की ओर जा रहे थे। अचानक, उसका नियंत्रण बस पर नहीं रहा।

इस कारण अनियंत्रित बस तेज रफ्तार में रेलिंग से टकरा गई। जोरदार टक्कर की आवाज के साथ रेलिंग टूट गई और बस पास के दूसरे फ्लाईओवर (पुल) के बीम से अटक कर गंगा नदी के ऊपर लटक गई।

अगर, बस कुछ इंच और आगे बढ़ जाती तो वह गहरी नदी में समा जाती। दुर्घटना के बाद बस के अंदर यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। यात्री डर से कांप रहे थे। कुछ प्रार्थना कर रहे थे, तो कुछ एक-दूसरे को संभालने की कोशिश में लगे थे।

राहगीरों ने दिखाई हिम्मत और एकजुटता

घटना के दस मिनट बाद तक आसपास के राहगीरों की हिम्मत नहीं हुई कि वह बस से किसी भी यात्री को बाहर निकालने का प्रयास करें। मगर, इसके बाद हिम्मत दिखाते हुए राहगीरों ने बस से यात्रियों को निकालना शुरू कर दिया। इसी बीच पुलिस मौके पर पहुंची और क्रेन की मदद से बस को बाहर निकाला। यह प्रक्रिया करीब तीन घंटे चली और शाम करीब सात बजे बस सुरक्षित निकाली गई। पुलिस ने घायलों को प्राथमिक उपचार दिया और बाकी यात्रियों को दूसरी बस से उनके गंतव्य की ओर रवाना किया।

इस दौरान, दिल्ली-लखनऊ हाईवे पर भारी जाम लग गया। प्रति मिनट 60 से ज्यादा वाहनों का आवागमन होने वाले इस हाईवे पर अफरा-तफरी मच गई। कई किलोमीटर तक जाम की स्थिति बन गई।

ड्राइवर के बदलते बयान, ब्रेक फेल या लापरवाही

चालक अनुपम ने शुरुआत में कहा कि सामने एक वाहन आ गया था, जिसे बचाने के चक्कर में बस मोड़ी गई। लेकिन कुछ देर बाद उनका बयान बदल गया। अब वह दावा कर रहा हैं कि बस के ब्रेक फेल हो गए थे, इसलिए रेलिंग से टकराना पड़ा।

पुलिस जांच में यह साफ हो जाएगा कि असली वजह क्या थी। कोतवाली प्रभारी मनोज बालियान ने बताया कि दुर्घटना में किसी को गंभीर चोट नहीं आई है। बस को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। चालक को मामूली चोटें आईं, जबकि कुछ यात्रियों को भी हल्की खरोंचें लगीं।

बड़ा हादसा टला, कब सबक सीखेंगे हम?

अगर बस दूसरे पुल के बीम से नहीं अटकती, तो यह एक बड़ी त्रासदी बन सकती थी। विशेषज्ञों का मानना है कि पुरानी बसों की मेंटेनेंस और चालकों की ट्रेनिंग पर ध्यान देने की जरूरत है।

मामले में रोडवेज विभाग ने जांच के आदेश दे दिए हैं। वहीं, पुल की रेलिंग की मजबूती पर भी सवाल उठ रहे हैं।

मेवाड़ राजवंश के कुलदीपक को बचाने वाली महाबलिदानी क्षत्राणी माता पन्ना खींची 'धाय माँ जी' का सम्पूर्ण इतिहास

माता पन्ना खींची धाय का जन्म चित्तौड़गढ़ के निकट माताजी की पांडोली नामक गांव में हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर हरचंद सिंह पंवार{साँखला} था।

पन्ना धायमाँ का विवाह आमेट के निकट स्थित कमेरी गांव में रहने वाले कुँ. सूरजमल सिंह खींची{चौहान} से हुआ।

1527 ई. में खानवा के युद्ध के बाद 1528 ई. में महाराणा सांगा का स्वर्गवास हो गया। 1531 ई. तक महाराणा सांगा के पुत्र महाराणा रतन सिंह मेवाड़ के शासक रहे। फिर महाराणा विक्रमादित्य मेवाड़ की गद्दी पर बैठे, शासक बने थे।

1534 ई. में जब गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया, तब राजमाता कर्णावती ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। पन्नाधाय इन्हीं राजमाता कर्णावती की सेवा में नियुक्त थीं।

राजमाता कर्णावती ने पन्नाधाय को बुलाया और कहा कि "मेरे दोनों पुत्र विक्रमादित्य और उदयसिंह{महाराणा प्रताप जी के पिता} को अब मैं तुम्हें सौंपती हूँ, इनको इनके ननिहाल बूंदी लेकर जाना और जब चित्तौड़ से शत्रु खदेड़ दिए जावे, तभी इनको वापिस लाना"

राजमाता कर्णावती ने हज़ारों राजपूतानियों के साथ जौहर किया। बहादुरशाह ने चित्तौड़गढ़ जीत लिया। फिर मेवाड़ के सामन्तों के जोर-शोर से फिर से चित्तौड़गढ़ पर मेवाड़ का अधिकार हो गया।

महाराणा सांगा के बड़े भाई उड़न पृथ्वीराज सिंह की दासी पूतलदे से उनका एक बेटा हुआ, जिसका नाम बनवीर था। महाराणा सांगा ने बनवीर को बदचलनी के सबब से मेवाड़ से निकाल दिया था। मौका देखकर ये फिर मेवाड़ आया।

1535 ई. में दासी पुत्र बनवीर ने चित्तौड़ के कई खास सरदारो को अपनी तरफ मिलाया और तलवार से महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर दी। फिर बनवीर ने कुंवर उदयसिंह को मारने के लिए उनके कक्ष में प्रवेश किया।

पन्नाधाय ने कुंवर उदयसिंह के वस्त्र अपने पुत्र चन्दन को पहनाकर उसको कुंवर उदयसिंह के स्थान पर लिटा दिया। राजगद्दी के नशे में चूर बनवीर कुँवर उदयसिंह को ढूंढते हुए महलों में आया और पन्नाधाय से पूछा कि "उदयसिंह कहाँ है पन्ना, आज मेवाड़ की राजगद्दी और मेरे बीच आने वाले उस आख़िरी कांटे को भी निकाल फेंकने आया हूँ"

पन्नाधाय ने जान बूझकर बनवीर को रोकने का प्रयास किया, ताकि बनवीर को शक ना हो। बनवीर ने पन्नाधाय को हटाया और चन्दन को ही कुंवर उदयसिंह समझकर पन्नाधाय की आँखों के सामने तलवार से चन्दन के दो टुकड़े कर दिये।

अपने पुत्र के दो टुकड़े होते देख भी पन्नाधाय उफ़ तक न कर सकीं, उनका हृदय जैसे थम सा गया। बनवीर खुशी के मारे राजगद्दी की तरफ गया। पन्नाधाय कीरत बारी (वाल्मीकि) के सेवक के ज़रिए बड़े टोकरे में पत्तलों से ढंककर कुंवर उदयसिंह को छुपाकर निकलीं।

बहुत से लोग अज्ञानवश इस समय कुँवर उदयसिंह को एक दुधमुंहा बालक बताते हैं, जबकि वास्तविकता में कुँवर की आयु इस समय 13-14 वर्ष थी।

पन्नाधाय नदी किनारे पहुंची और यहीं अपने पुत्र चंदन का अंतिम संस्कार किया। एक माँ को इस समय आत्मग्लानि में डूबकर पश्चाताप करना चाहिए था, परन्तु प्रश्न मातृभूमि का था। पन्नाधाय यहां नहीं रुकीं, क्योंकि अभी कुँवर उदयसिंह के प्राणों का संकट टला नहीं था।

पुत्र की चिता की राख अभी ठंडी भी नहीं हुई थी कि पन्नाधाय अपने पति सूरजमल के साथ कुंवर उदयसिंह को लेकर देवलिया पहुंची। देवलिया के रावत रायसिंह सिसोदिया ने इनकी बड़ी खातिरदारी की, पर जब पन्नाधाय ने कुंवर उदयसिंह को देवलिया में शरण देने की बात कही, तो रावत रायसिंह ने बनवीर के खौफ से ये काम न किया।

रावत रायसिंह ने पन्नाधाय को एक घोड़ा देकर विदा किया। पन्नाधाय कुंवर उदयसिंह को लेकर डूंगरपुर पहुंची। डूंगरपुर के रावल आसकरण ने भी बनवीर के डर से उन्हें शरण नहीं दी। रावल आसकरण ने उन्हें खर्च व सवारी देकर विदा किया।

आखिरकार पन्नाधाय कुम्भलगढ़ पहुंची, जहाँ उन्हें शरण मिली। कुम्भलगढ़ के किलेदार आशा देवपुरा ने अपनी माँ से इजाजत लेने के बाद कुंवर उदयसिंह को अपने यहाँ रखना स्वीकार किया।

भला एक माँ द्वारा दिया गया ऐसा अद्वितीय बलिदान व्यर्थ कैसे जाता। धीरे-धीरे यह ख़बर फैलती गई कि महाराणा उदयसिंह जीवित हैं, सामन्तों ने महाराणा उदयसिंह का राज्याभिषेक कर दिया। 1540 ई. में महाराणा उदयसिंह ने महाराणा विक्रमादित्य व चन्दन के हत्यारे बनवीर को चित्तौड़गढ़ के युद्ध में परास्त करके उसका अस्तित्व ही नष्ट कर दिया।

महाराणा उदयसिंह ने पन्नाधाय को चित्तौड़गढ़ में बुलवाया, लेकिन पन्नाधाय वहां फिर कभी न आई। महाराणा उदयसिंह जानते थे कि पन्नाधाय के बलिदान के सामने उनके लिए कुछ भी कर पाना सूरज को रोशनी दिखाने के बराबर है, लेकिन फिर भी वे पन्नाधाय के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहते थे।

इसलिए 1564 ई. में चांदरास गाँव में महाराणा उदयसिंह ने साह आसकर्ण देवपुरा (आशा देवपुरा) को धाय माता पन्नाधाय की सुरक्षा के लिए 451 बीघा भूमि का ताम्रपत्र प्रदान किया। मेवाड़ में इतने बड़े भूभाग के अनुदान का यही एक मात्र लेख है। इस ताम्रपत्र पर "संवत1621 आसोज सुदी नवमी" अंकित है।

जय बलिदानी स्वामिभक्त खींची चौहान वंश गौरव पन्ना धाय माँ जी की

भगवान शंकर के श्रीमुख से श्रीराम जन्म प्रसंग की दिव्य कथा

सुखी भारती

यह सत्य है कि परम सत्ता के सभी अवतारों की कथा को शब्दों की सीमित मर्यादा में बांधना असंभव है। यहाँ तक कि भक्तवत्सल भगवान शंकर भी स्वयं को श्रीराम की अवतार कथा का पूर्ण रूप से गान करने में असमर्थ और निर्बल मानते हैं।

महादेव के श्रीमुख से जो श्रीराम जन्म के प्रसंग की मधुर कथा प्रवाहित हो रही है, वह अत्यंत रसभरी और आनंददायिनी है। जगदीश्वर शिव कहते हैं कि श्रीराम के पावन अवतार के एक नहीं, अनेकों कारण हैं। वे कारण इतने विचित्र और दिव्य हैं कि उनका वर्णन करना भी शब्दों की पहुँच से परे है—

"राम जन्म के हेतु अनेका। परम विचित्र एक ते एका।।"

यह सत्य है कि परम सत्ता के सभी अवतारों की कथा को शब्दों की सीमित मर्यादा में बांधना असंभव है। यहाँ तक कि भक्तवत्सल भगवान शंकर भी स्वयं को श्रीराम की अवतार कथा का पूर्ण रूप से गान करने में असमर्थ और निर्बल मानते हैं। इसका कारण यह है कि किसी एक कारण को ही अवतार का एकमात्र हेतु कह देना उचित नहीं होगा, क्योंकि ईश्वरीय लीला के रहस्य अत्यंत गहन होते हैं। इसीलिए, भगवान शंकर ने कुछेक प्रमुख जन्मों की गाथा कहने की ही तैयारी की, जिसकी अनुमति वे भगवती भवानी से लेते हैं—

"जन्म एक दूई कहऊँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी।।"

अर्थात्, हे सुंदर बुद्धि वाली भवानी! मैं उन प्रभु के दो-एक जन्मों का विस्तार से वर्णन करता हूँ। तुम इसे पूर्ण सावधानी और एकाग्र मन से सुनो।

जय और विजय का अहंकार तथा शाप

भगवान शंकर कथा को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि श्री हरि (भगवान विष्णु) के अत्यंत प्रिय दो द्वारपाल हैं, जिनके नाम जय और विजय हैं। इन दोनों को संसार में सब कोई जानता है—

"द्वारपाल हरि के प्रिय दो। जय अरु बिजय जान सब कोऊ।।"

किंतु इन दोनों के मन में अहंकार ने प्रवेश कर लिया। वे इस बात का गर्व करने लगे कि वे कोई सामान्य द्वारपाल नहीं हैं, अपितु साक्षात भगवान विष्णु के द्वार पर नियुक्त हैं। इस मद में चूर होकर उन्हें यह भ्रम हो गया कि वे जिसे चाहें, उसे भगवान विष्णु से मिलने से रोक सकते हैं, भले ही वह व्यक्ति कितना भी बलशाली या महान क्यों न हो। उनके मन में यह भाव उत्पन्न हो गया कि उनके सामने किसी की कोई प्रभुता नहीं है। उन्होंने यह मान लिया कि वैकुण्ठ धाम के भीतर भले ही भगवान विष्णु का राज चलता हो, किंतु बाहर के क्षेत्र में तो केवल उनकी ही प्रभुसत्ता है।

निस्संदेह, यह उनका गहरा अहम्ही था, जिसने उन्हें यह सोचने पर विवश किया कि एक द्वारपाल होते हुए भी वे किसी को भगवान विष्णु से मिलने से वंचित कर सकते हैं। अहंकार के वशीभूत होकर वे इस अटूट सत्य को भूल गए थे कि भगवान और भक्त का सम्बन्ध ठीक वैसा ही है जैसा अग्नि और उसके ताप का होता है। क्या आज तक कोई अग्नि से उसके ताप को पृथक कर पाया है? या कोई जल से उसकी तरलता, शीतलता अथवा अग्निशमन का सामर्थ्य छीन पाया है? भक्त भी अपने भगवान से ठीक इसी प्रकार एकाकार होता है। जैसे मिठास लड्डू में समाई होती है—क्या किसी ने कभी बिना मिठास का लड्डू देखा है? ठीक उसी प्रकार, भक्त को कोई भगवान से विलग कर सके, ऐसी कोई संभावना ही नहीं है।

किंतु भ्रम का क्या! जब वह उत्पन्न हो ही जाता है, तब जिसे भ्रम हो गया हो, उसे वास्तविकता भला कैसे दिखाई दे सकती है? उसे तो केवल वही दिखाई देता है, जो वह देखना चाहता है।

एक दिन जय और विजय ने देखा कि सनकादि ऋषि, जो ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं, अपनी मस्त और सहज चाल में वैकुण्ठ द्वार की ओर चले आ रहे हैं। दोनों द्वारपालों को यह आशा तो नहीं थी कि सनकादि ऋषि उनसे आज्ञा लेकर ही वैकुण्ठ में प्रवेश करेंगे, किंतु उनके अहंकार को गहरी ठेस तब लगी, जब सनकादि ऋषि ने जय और विजय दोनों को बिना पूछे ही भीतर प्रवेश करना आरंभ कर दिया।

सनकादि ऋषियों का ऐसा कोई भाव नहीं था कि वे किसी को नीचा दिखाएँ। वास्तव में, वे प्रभु के प्रेम-भाव में इस प्रकार मस्त थे कि उन्हें यह भान ही नहीं रहा कि उनके और भगवान के बीच कोई द्वारपाल भी हैं। क्योंकि भक्त और भगवान के मध्य तो केवल प्रेम ही होता है। यदि प्रेम नहीं है, तो उसके पीछे अहंकार ही होता है, जो भक्त व भगवान के मध्य दीवार बनकर आन खड़ा होता है।

जय और विजय भले ही भगवान के द्वारपाल थे, किंतु भगवान से उनकी दूरी उतनी ही थी, जितनी सागर के दो किनारों के मध्य होती है। सनकादि ऋषियों की यह सहज प्रेम वाली अवस्था उन्हें अप्रिय लगी। वे क्रोध से अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठे और ऋषि सनकादि को अपशब्द कहकर उनका अपमान करने लगे। उन्हें लगा कि सनकादि ऋषि उनके आगे हाथ-पाँव जोड़ेंगे और विनती करेंगे।

किंतु सनकादि ऋषि ने कुछ नहीं कहा। वे किसी गहरे सागर की भाँति स्थिर और शांत ही रहे। उन्हें इस प्रकार शांत देखकर दोनों भाई और भी भड़क गए। वे समझ ही नहीं पाए कि सनकादि ऋषि कोई प्रतिक्रिया क्यों नहीं दे रहे हैं। इसी अज्ञानता की खाई में गिरते हुए उन्होंने सनकादि ऋषि के अपमान करने की सभी हदें पार कर दीं और सारी मर्यादाओं को लांघ दिया।

तब सनकादि ऋषि ने देखा कि इन द्वारपालों का आचरण किसी भी प्रकार से देव-भाव वाला नहीं है, अपितु नख से सिर तक ये पूर्णतः राक्षस ही हैं। तो ऐसे राक्षसी स्वभाव वाले लोगों का भला भगवान के परम धाम में क्या कार्य!

तब क्रुद्ध होकर सनकादि ऋषि ने दोनों भाईयों को श्राप दिया कि रे जाओ, तुम दोनों राक्षस हो जाओ! इस प्रकार, ऋषि के श्राप से विवश होकर दोनों भाई अगले जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के रूप में राक्षस बनकर मृत्युलोक पर पैदा हुए। (क्रमशः)

वर्ल्ड टीचर्स डे आज

वर्ल्ड टीचर्स डे हर साल 5 अक्टूबर को मनाया जाता है, यह दिन शिक्षकों के योगदान को सम्मानित करने और उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करने का अवसर है, दुनियाभर में शिक्षकों की मेहनत और समर्पण को सराहा जाता है, इस दिन विभिन्न कार्यक्रम और समारोह आयोजित होते हैं, जो शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देते हैं, वर्ल्ड टीचर्स डे हमें याद दिलाता है कि शिक्षकों का काम केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि हमारे समाज को आकार देना भी है।

वर्ल्ड टीचर्स डे कब मनाया जाता है?

==========

वर्ल्ड टीचर्स डे हर साल 5 अक्टूबर को मनाया जाता है, यह दिन शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करने का अवसर होता है, दुनियाभर में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देने के लिए यह दिन विशेष है, इसे कई देशों में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है, इस दिन को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना है।

इस दिन का उद्देश्य क्या है?

==========

इस दिन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के योगदान को मान्यता देना है, यह शिक्षा में उनके समर्पण और मेहनत को सराहने का अवसर है, वर्ल्ड टीचर्स डे पर शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित होते हैं, इसके माध्यम से शिक्षा के महत्व को भी बढ़ावा दिया जाता है, यह दिन एकजुट होकर शिक्षकों के अधिकारों की रक्षा करने का भी संदेश देता है।

इस दिन को मनाने की शुरुआत कब हुई थी?

==========

वर्ल्ड टीचर्स डे की शुरुआत 1994 में हुई थी, इसे यूनेस्को द्वारा स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य शिक्षकों के अधिकारों और उनके योगदान को मान्यता देना था, पहले इसे कई देशों में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता था, अब यह एक वैश्विक घटना बन चुकी है।

इस दिन को कैसे मनाया जाता है?

==========

इस दिन विभिन्न स्कूलों और संस्थानों में विशेष कार्यक्रम और समारोह आयोजित किए जाते हैं, शिक्षक सम्मान समारोह, कार्यशालाएं, और पैनल चर्चाएं होती हैं, छात्रों द्वारा शिक्षकों को धन्यवाद देने के लिए कार्ड और उपहार भी दिए जाते हैं, मीडिया में भी इस दिन की विशेष कवरेज होती है, यह एक ऐसा दिन होता है जब शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

क्या यह दिन किसी विशेष घटना से जुड़ा है?

==========

हां, यह दिन 1966 में शिक्षकों के अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में यूनेस्को की सिफारिश के स्मरण में मनाया जाता है, इस सिफारिश में शिक्षकों की स्थिति और उनके कार्यों को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया था, वर्ल्ड टीचर्स डे इस ऐतिहासिक संदर्भ को भी ध्यान में रखता है, यह शिक्षकों के लिए एक समान और सम्मानजनक कार्य वातावरण बनाने का भी संदेश देता है, इस दिन को मनाने से शिक्षा के प्रति जागरूकता और सराहना बढ़ती है।

रावण ने जिससे साधा शिव को वो शिव तांडव स्त्रोत दिलाएगा आपको अपार

अनन्या मिश्रा

दशानन रावण ने शिव तांडव स्त्रोत से भगवान शिव को प्रसन्न किया था और भोलेनाथ की कृपा से शत्रु नाश और युद्ध में विजय प्राप्त कर अचल संपदा का स्वामी बन गया था। ऐसे में आज हम आपको शिव तांडव स्त्रोत के बारे में बताने जा रहे हैं।

महापंडित और महाज्ञानी रावण ने भगवान शिव की विशेष कृपा पाने के लिए उसने शिव ताण्डव स्त्रोत की रचना करके अनेक सिद्धियां प्राप्त की थीं। रावण रचित शिव स्त्रोत का नियमित रूप से पाठ करने वाला भगवान शिव की विशेष कृपा का पात्र होता है। साथ ही जातक का जीवन सुख-संपत्ति और धन-धान्य से पूर्ण होता है। बता दें कि सायंकाल में भगवान शिव प्रसन्न होकर भगवती त्रिपुर सुन्दरी को रत्न सिंहासन पर बैठाकर तांडव नृत्य करते थे, उसी समय की स्थिति का वर्णन शिव तांडव स्त्रोत में किया गया है।

दशानन रावण ने शिव तांडव स्त्रोत से भगवान शिव को प्रसन्न किया था और भोलेनाथ की कृपा से शत्रु नाश और युद्ध में विजय प्राप्त कर अचल संपदा का स्वामी बन गया था। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको शिव तांडव स्त्रोत के बारे में बताने जा रहे हैं। ऐसे में आप भी नियमित इस स्त्रोत का जाप करके भगवान शिव की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

रावणरचितशिवतांडवस्तोत्र

जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमनिनादवड्डमर्वयं
चकार चंडतांडवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥1॥
जटा कटा हसंभ्रम भ्रमन्निलिंपनिर्झरी ।
विलोलवी चिवल्लरी विराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्ध गज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके
किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं ममं ॥2॥
धरा धरेंद्र नंदिनी विलास बंधुवंधुर
स्फुरदृगंत संतति प्रमोद मानमानसे ।
कृपाकटा क्षधारणी निरुद्धदुर्धरापदि
कवचिद्विगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥3॥
जटा भुजं गपिंगल स्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदंबकुंकुम द्रवप्रलिप्त दिग्वधूमुखे ।
मदांध सिंधु रस्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदद्भुतं बिंभर्तु भूतभर्तरि ॥4॥
सहस्र लोचन प्रभृत्य शेषलेखशेखर-
प्रसून धूलिधोरणी विधूसरांघ्रिपीठभूः ।
भुजंगराज मालया निबद्धजाटजूटकः
श्रिये चिराय जायतां चकोर बंधुशेखरः ॥5॥
ललाट चत्वरज्वलद्धनंजयस्फुरिंगभा-
निपीतपंचसायकं निमन्निलिंपनायम् ।
सुधा मयुख लेखया विराजमानशेखरं
महा कपालि संपदे शिरोजयालमस्तू नः ॥6॥
कराल भाल पट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनंजया धरीकृतप्रचंडपंचसायके ।
धराधरेंद्र नंदिनी कुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥7॥
नवीन मेघ मंडली निरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहु निशीथिनीतमः प्रबंधबंधुकंधरः ।
निलिम्पनिर्झरि धरस्तनोतु कृत्ति सिंधुरः
कलानिधानबंधुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥8॥
प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंचकालिमच्छटा-
विडंबि कंठकंध रारुचि प्रबंधकंधरम्
स्मरच्छिदं पुरच्छिंद भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥9॥
अगर्वसर्वमंगला कलाकदम्बमंजरी-
रसप्रवाह माधुरी विजृंभणा मधुव्रतम् ।
स्मरांतकं पुरातकं भावंतकं मखांतकं
गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ॥10॥
जयत्वदभ्रविभ्रम भ्रमद्भुजंगमस्फुर-
द्धगद्धगद्वि निर्गमत्कराल भाल हव्यवाट्-
धिमिद्धिमिद्धिमि नन्मृदंगतुंगमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥11॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंग मौक्तिकमस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्टयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥12॥
कदा निलिंपनिर्झरी निकुजकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥13॥
निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका-
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं
परिश्रय परं पदं तदंगजत्विषां चयः ॥14॥
प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी
महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना ।
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥15॥
इमं हि नित्यमेव मुक्तमुक्तमोत्तम स्तवं
पठन्स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नांयथा गतिं
विमोहनं हि देहना तु शंकरस्य चिंतनम् ॥16॥
पूजाऽवसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भूपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेंद्रतुरंगयुक्तां
लक्ष्मी सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥17॥

फल श्रुति

प्रदोषकाल में पूजा करके रावण कृत शिव ताण्डव स्तोत्र।
जो पढ़ता है भाव भक्ति से, वह होता विजयी सर्वत्र।।
शिव शंकर शुभ लक्ष्मी देते सुख सम्पति, धन, अपरम्पार।
महिमा शिव की बड़ी निराली, नहीं किसी ने पाया पार।।

आयुर्वेदोक्त भोजन विधि: भोजन करने के नियम और आयुर्वेदिक दृष्टिकोण

आयुर्वेद में भोजन विधि (Rules of Eating Food) को स्वास्थ्य का आधार माना गया है। सही तरीके से भोजन करने से न केवल पाचन शक्ति मजबूत होती है बल्कि शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) भी बढ़ती है। आजकल की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में लोग सही भोजन पद्धति पर ध्यान नहीं देते, जिससे Acidity, Constipation, IBS, Fatty Liver जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं। आयुर्वेद के अनुसार भोजन केवल पेट भरने के लिए नहीं, बल्कि शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए है।

नीचे दी गई आयुर्वेदिक भोजन विधि आपके स्वास्थ्य और पाचन तंत्र (Digestive System) के लिए लाभकारी हो सकती है।

1. भोजन से पहले अदरक और सेंधा नमक का सेवन

आयुर्वेद कहता है कि भोजन शुरू करने से पहले अदरक का छोटा टुकड़ा और सेंधा नमक (Sendha Namak) खाना चाहिए। यह उपाय आपकी पाचन अग्नि (Digestive Fire) को जागृत करता है, जीभ और गले को साफ करता है और स्वाद इंद्रियों को सक्रिय करता है। इससे भोजन पचाना आसान हो जाता है।

2. भोजन का क्रम – घृत (Ghee), कठोर, नरम और फिर तरल

भोजन की शुरुआत में घृत (Ghee) का प्रयोग करें।
पहले कठोर भोजन जैसे रोटी आदि खाएँ।
फिर नरम भोजन लें।
अंत में छाछ (Buttermilk) जैसे तरल पदार्थ लें।
इससे शरीर को ऊर्जा और बल मिलता है और Digestive Problems से बचाव होता है।

3. एकाग्र होकर भोजन करना और स्वाद का क्रम

भोजन हमेशा एकाग्र होकर, शांति से करना चाहिए।
सबसे पहले मीठा भोजन (Sweet Taste) लें।
बीच में खट्टा (Sour) और नमकीन (Salty) लें।
अंत में कड़वा (Bitter), तीखा (Spicy) और कसैला (Astringent) लें।
यह क्रम शरीर को संतुलन और रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity Boost) प्रदान करता है।

4. भोजन से पहले फल – पर सही चयन ज़रूरी

भोजन की शुरुआत अनार (Pomegranate) जैसे फलों से करें।
लेकिन ध्यान रखें कि भोजन से पहले केला और खीरा न खाएँ। खीरे में अधिक मात्रा में पानी होता है जो पाचन अग्नि को कम कर देता है और Digestion Slow हो जाता है।

5. पेट की क्षमता का सही उपयोग

आयुर्वेद के अनुसार –
पेट के दो हिस्से ठोस भोजन से भरें।
एक हिस्सा तरल भोजन से भरें।
शेष हिस्सा वायु (Air) के लिए खाली छोड़ दें।
इससे पाचन तंत्र (Digestive System) पर दबाव नहीं पड़ता और भोजन ठीक से पचता है।

निष्कर्ष

Ayurvedic Food Habits का पालन करने से न केवल पाचन सुधरता है बल्कि शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। यदि आप किसी भी तरह की बीमारी जैसे Constipation, Acidity, IBS, Piles, Fatty Liver आदि से परेशान हैं, तो भोजन विधि पर ध्यान देना बेहद जरूरी है।

बिहार चुनाव में ओबीसी की महत्ता और भूमिका को कम न आंकेंः डॉ. राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर : ओबीसी अधिकार मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राजकुमार यादव ने आज एक बयान जारी कर कहा है कि आगामी बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की भूमिका और महत्व को किसी भी सूरत में कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। बिहार की राजनीति में ओबीसी समुदाय न केवल निर्णायक मतदाता है, बल्कि राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास की रीढ़ भी है। डॉ. यादव ने विभिन्न ऐतिहासिक और समसामयिक घटनाक्रमों का जिक्र करते हुए ओबीसी समुदाय के योगदान को रेखांकित किया और सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे ओबीसी के हितों को प्राथमिकता दें।

डॉ. यादव ने कहा, "बिहार में ओबीसी समुदाय की आबादी राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत (ओबीसी और अत्यंत पिछड़ा वर्ग मिलाकर) है, जैसा कि 2023 में जारी बिहार जाति सर्वेक्षण में सामने आया है। इस सर्वेक्षण के आधार पर नीतीश कुमार सरकार ने आरक्षण को 65 प्रतिशत तक बढ़ाने का फैसला लिया था, हालांकि अदालत ने इसे स्थगित कर दिया।यह घटना दर्शाती है कि ओबीसी के मुद्दे कितने संवेदनशील और निर्णायक हैं। यदि राजनीतिक दल ओबीसी के आरक्षण और सशक्तिकरण को नजरअंदाज करेंगे, तो चुनावी परिणाम उनके विरुद्ध जा सकते हैं।

उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा कि 1967 के विधानसभा चुनाव से ही बिहार में ओबीसी का उभार शुरू हुआ, जब विभिन्न पिछड़ी जातियां राजनीतिक रूप से जागरूक हुईं और सामाजिक न्याय की मांग की।मंडल आयोग की सिफारिशों के बाद 1990 के दशक में लालू प्रसाद यादव जैसे ओबीसी के कई नेता उभरे, जिन्होंने राज्य की राजनीति को नई दिशा दी। हाल के वर्षों में नीतीश कुमार की सरकार ने जाति आधारित सर्वेक्षण कराकर ओबीसी के लिए नई योजनाएं शुरू कीं, जिससे ईबीसी (अत्यंत पिछड़ा वर्ग) को विशेष ध्यान मिला।

डॉ. यादव ने समसामयिक घटनाक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा, 2024 के लोकसभा चुनाव में ओबीसी वोटों ने बिहार की सीटों पर निर्णायक भूमिका निभाई, जहां भाजपा और राजद जैसी पार्टियां ओबीसी आधारित गठबंधनों पर निर्भर रहीं। अब 2025 के विधानसभा चुनाव से पहले इंडिया गठबंधन ने ईबीसी के लिए विशेष एजेंडा जारी किया है, जिसमें रोजगार और शिक्षा पर जोर है।वहीं, भाजपा ने झारखंड में ओबीसी नेता आदित्य प्रसाद साहू को कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर ओबीसी वोटों को साधने की कोशिश की है। हाल ही में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा ओबीसी के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा भी बिहार चुनाव के संदर्भ में देखी जा रही है, जो ओबीसी समुदाय की बढ़ती ताकत को दर्शाती है। हालांकि, यह घोषणा विवादास्पद बनी हुई है और अदालत में लंबित है, लेकिन यह साबित करता है कि ओबीसी के बिना कोई दल चुनाव नहीं जीत सकता।

राष्ट्रीय संयोजक ने चेतावनी देते हुए कहा, "बिहार की राजनीति में जाति कारक हमेशा से प्रमुख रहा है। प्रायः सभी राजनैतिक दलों के नेता भी ओबीसी और ईबीसी पर फोकस कर रहे हैं।यदि कोई भी दल ओबीसी की मांगों जैसे जाति जनगणना, बढ़ा हुआ आरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण को नजरअंदाज करेंगे, तो मतदाता उन्हें सबक सिखाएंगे। ओबीसी अधिकार मंच सभी दलों से अपील करता है कि वे ओबीसी के हितों को चुनावी घोषणा-पत्र में प्रमुख स्थान दें।

डॉ. यादव ने अंत में कहा, "ओबीसी समुदाय बिहार के विकास का इंजन है। हमारी भूमिका को कम आंकना राजनीतिक आत्महत्या होगी। हम ओबीसी के अधिकारों के लिए संघर्ष जारी रखेंगे और चुनाव में सक्रिय भूमिका निभाते हुए हमारी कार्यकारिणी एंव टीम प्रायः सभी सीटों पर सक्रिय भूमिका निभाएगी।

गांधी भवन दिल्ली विश्वविद्यालय ने "स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर भारत" विषय पर आयोजित की संगोष्ठी

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। महात्मा गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती के अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन द्वारा ₹स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर भारत ₹ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में सभी वक्ताओं ने समाज हित एवं राष्ट्रहित में उपयोगी विचारों को सभी के साथ साझा किया। दीप प्रज्वलन, गांधी जी एवं शास्त्री जी के चित्र पर पुष्प अर्पण के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ।

गांधी भवन के निदेशक प्रो. के.पी. सिंह ने कार्यक्रम में आमंत्रित सभी अतिथियों का परिचय देते हुए अंगवस्त्र एवं फलों की टोकरी भेंट कर अभिनंदन किया। अपने स्वागत वक्तव्य में प्रो. सिंह ने वर्तमान परिदृश्य में वैश्विक पटल पर भारत की बढ़ती साख एवं आत्मनिर्भर भारत के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि आज भारत की आवाज विश्व पटल पर गूंज रही है। आज देश को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत गंभीरता से सुना जाता है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान समग्र विश्व ने देखा कि भारत ने आतंकवाद के खिलाफ मुंह तोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा की स्वदेशी केवल विचार नहीं है अपितु हमारे हृदय का स्पंदन है। स्वदेशी ही देश को आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर बनने के लिए आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का होना बहुत आवश्यक है।अब वह दिन दूर नहीं जब भारत संयुक्त राष्ट्र परिषद का स्थाई सदस्य भी बनेगा ।विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था भी बनेगा और 2047 तक विकसित राष्ट्र भी बनेगा। प्रो. सिंह ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पर सभी आंगुतकों को बधाई देते हुए बताया कि संघ ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने और स्वदेशी अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विशिष्ट अतिथि, विश्वविद्यालय के डीन, छात्र कल्याण, प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी ने स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत की बात भारतीय दर्शन के माध्यम से प्रारंभ की। उन्होंने कहा कि कोई भी युग रहा हो दो तरह की शक्तियां रही हैं। एक देव संस्कृति एवं एक दानव संस्कृति और देव संस्कृति ने सदैव अपने आत्म बल से दानव संस्कृति को पराजित किया है। गांधी जयंती के अवसर का उल्लेख करते हुए उन्होंने गांधी के दर्शन का भी उल्लेख करते हुए बताया कि गांधी जी पर सदैव राम का प्रभाव रहा है ।जिस प्रकार राम राजकुमार की परिधि से बाहर जाकर के 14 वर्ष के वनवास और लंका पर विजय प्राप्त करके विभीषण को लंका का राजा बनाकर अयोध्या लौटते हैं तो वह राम से मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनने की यात्रा है। ठीक इसी प्रकार एक संपन्न परिवार का बालक अपने समस्त ज्ञान को अर्जित कर एक धोती पहनकर लाठी लेकर चल पड़ता है और राष्ट्र को एक कर देता है वह महात्मा गांधी हैं। उन्होंने राम के दिए हुए व्रत (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह) का सदैव पालन किया। उन्होंने कहा कि भारत केवल देश नहीं है ;भारत एक जीवन पद्धति है ।

विशिष्ट अतिथि सर्जरी विभाग, जीबी पंत अस्पताल के प्रमुख डॉ दिनेश अग्रवाल ने सभी को संबोधित करते प्रोफेसर और विद्यार्थियों के संबंध को प्रतिपादित हुआ । उन्होंने कहा कि आज समग्र विश्व महात्मा गांधी से सीख रहा है। गांधी को केवल पढ़ना नहीं है अपितु जीवन में उतारना भी है। आत्मनिर्भर भारत के विषय पर उन्होंने कहा कि आज जब पूरी दुनिया में उथल-पुथल मची हुई है कहीं टैरिफ को लेकर कहीं युद्ध को लेकर और कहीं बाजार को लेकर। फिर भी भारत आराम से चल रहा है क्यों कि भारत ने स्वदेशी से आत्मनिर्भर बनने की ठान ली है। आज जिस गति से भारत आत्मनिर्भर बनने की तरफ अग्रसर है । वह सराहनीय है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध अपनी स्मृतियों को साझा करते हुए शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता इंडिया हैबिटेट सेंटर के निदेशक प्रो. के.जी. सुरेश ने₹ स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर भारत₹ विषय पर अपने व्याख्यान में बहुत महत्वपूर्व तथ्यों को उजागर किया। स्वदेशी विषय पर बात करते हुए उन्होंने कहा की स्वदेशी का विचार हमारी चेतना का केंद्र बिंदु होना चाहिए ।यह केवल आवरण या वस्त्र या उत्पादों तक सीमित नहीं हैं। हमारी सोच स्वदेशी हो हमें अपनी भाषा पर गर्व हो। आज 2 अक्टूबर के अवसर पर संघ के शताब्दी वर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि संघ ने जो पांच परिवर्तन का संकल्प लिया है उन पांच परिवर्तनों में एक ₹स्वदेशी₹ भी एक संकल्प है। प्रचारकों के जीवन में यथार्थ रूप में गांधी परिलक्षित होते हैं। स्वदेशी हमारे घर से आरंभ हो। हमारे खाने में, हमारे पहनावे में, हमारी बातचीत में, हमारे चिंतन में एवं हमारे कार्यों में स्वदेशी परिलक्षित हो। हमें देश, भाषा और देश की संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। आत्मनिर्भर भारत के विषय में बात करते हुए उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता के बहुत सारे प्रकल्प सरकार ने तैयार कर लिए हैं। परंतु हमें और आगे बढ़ना होगा। यहां पर किसी भी देश के मोबाइल या गैजेट का केवल उत्पादन न हो अपितु भारत के भी किसी ब्रांड के गैजेट का उत्पादन हो। हमें स्वदेशी की मानसिकता बनाकर आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास करना होगा। कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना और देश के भीतर ही पर्यटन को बढ़ावा देना हमारी प्रमुखता होनी चाहिए। साथ ही साथ उद्यमियों की भी जिम्मेदारी है कि वह केवल स्वदेशी की भावना के लिए नहीं अपितु गुणवत्ता पर भी ध्यान दें। स्वदेशी से आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु हमें अपने महापुरुषों को भी जीवन में आत्मसात करना होगा। गांधी जी के जीवन दर्शन को पढ़ना होगा और शास्त्री जी की जीवन शैली को अपनाना होगा । मुख्य अतिथि, विज्ञान एवं तकनीकी मोदी विश्वविद्यालय, राजस्थान के कुलपति, प्रो. आशुतोष भारद्वाज ने शांति संदेश का वाचन किया। उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा का कोई विकल्प नहीं है।

अंत में डॉ. राजकुमार फलवारिया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में नव निर्वाचित डूटा एग्जीक्यूटिव सदस्य मनीष कुमार एवं संजय कुमार का स्वागत अभिनंदन किया गया। साथ ही साथ कुछ समय पूर्व स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत पर गांधी भवन द्वारा आयोजित की गई चित्रकला प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम का सुन्दर संचालन डॉ. रमन गांधी ने किया। कार्यक्रम में, समाज विज्ञान विभाग के डीन प्रो. संजय रॉय, संयुक्त अधिष्ठाता छात्र कल्याण ,प्रो अंजन कुमार सिंह, हिन्दी विभाग के प्रो. रामनारायण पटेल, रसायन विभाग के प्रो श्रीकांत कुकरेती, हिंदू अध्ययन केंद्र की संयुक्त निदेशक डॉ प्रेरणा मल्होत्रा, अदिति महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो.नीलम राठी, रामजस कॉलेज के बर्सर प्रो. सुरेश कुमार, लायब्रेरी साइंस के डॉ उस्मानी, डॉ आर.पी कुमार, डॉ अनुराधा, डॉ मनीष, डॉ पिंकी, डॉ नरेन्द्र रावत, डॉ आर के भारद्वाज, डॉ महेश चंद, प्रो राजपाल त्यागी, उर्दू विभाग के मुश्ताक कादरी, अरविंदो कॉलेज के प्राध्यापक डॉ हंसराज सुमन, श्री कटारिया ,प्रो सुनीता पारीख, प्रो संजय पंवार प्रो मंजू रानी, डॉ रश्मि गुप्ता, डॉ रितु खत्री, डीआरडीओ के संयुक्त निदेशक डॉ सुधांशु भूषण, एक्सेल इंडिया पब्लिकेशन के श्री संजय कुमार आदि अन्य प्राध्यापक और छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

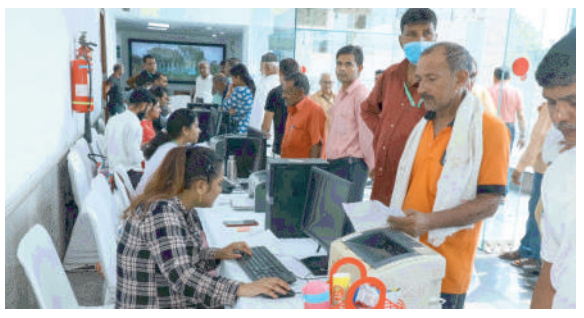

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद ने एनडीसीसी कन्वेन्शन सेंटर में शिकायत निवारण सुविधा शिविर का आयोजन किया

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (NDMC) ने अपने क्षेत्र के निवासियों और सेवा उपयोगकर्ताओं को सूचना, सुविधा और शिकायत निवारण प्रदान करने के लिए एनडीसीसी कन्वेंशन सेंटर, जयसिंह रोड, नई दिल्ली में एक सुविधा शिविर का आयोजन किया नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के संबंधित अधिकारियों ने शिविर में जनता से 78 शिकायतें प्राप्त की। निवासियों की अधिकांश शिकायतें कार्मिक, सिविल इंजीनियरिंग, बागवानी, सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्रवर्तन, वाणिज्यिक, कर और संपदा विभागों से संबंधित हैं। इसके अलावा सैकड़ों स्थानीय निवासियों और सेवा उपयोगकर्ताओं ने नागरिक सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए सुविधा शिविर का दौरा किया।

पालिका परिषद द्वारा शिकायतों के शीघ्र समाधान के लिए विभिन्न विभागों से संबंधित अधिकारियों ने जनता से उनकी जन शिकायतों पर आमने-सामने चर्चा की और उनका समाधान किया गया । नीति स्तर के निर्णयों की आवश्यकता वाली शिकायतों को उनके निवारण की संभावित समय-सीमा के साथ समझाया गया। पालिका परिषद के 30 विभागों के सौ से अधिक अधिकारी/कर्मचारी शिकायतों के मौके पर निवारण के लिए शिविर में मौके पर मौजूद रहे। विभिन्न विभागों के हेल्प डेस्क की निगरानी उनके विभागाध्यक्ष करते रहे । इन सुविधा शिविरों के आयोजन के अलावा पालिका परिषद क्षेत्र के निवासियों और सेवा उपयोगकर्ताओं के लिए संपर्क रहित शिकायत निवारण तंत्र के रूप में एक ₹जन सुविधा पोर्टल₹ भी लॉन्च किया हुआ है। इस जन सुविधा पोर्टल का लिंक एनडीएमसी की वेबसाइट (https://www.ndmc.gov.in/complaints.aspx) पर उपलब्ध है। जन सुविधा पोर्टल का उपयोग शिकायत दर्ज करने, उनकी शिकायत की स्थिति पर नज़र रखने और शिकायत निवारण तंत्र पर प्रतिक्रिया देने के लिए किया जा सकता है। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद सोशल मीडिया प्लैटफ़ार्म जैसे ट्विटर के माध्यम से जनता से शिकायतें प्राप्त कर रही है। इन शिकायतों की निगरानी पालिका परिषद के विभिन्न विभागाध्यक्षों द्वारा निगरानी की जा रही है और इनका यथासंभव जल्द से जल्द समाधान किया जा रहा है।

ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ कॉन्फ्रेंस में 101 समाजिक संगठनों को अवार्ड से नवाज़ा गया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : ऐवान-ए-ग़ालिब, माता सुंदरि रोड, आईटीओ दिल्ली में पसमांदा विकास फ़ाउंडेशन और सब जन सेवा मंच के संयुक्त तत्वावधान में "ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ कॉन्फ्रेंस" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 101 सामाजिक संगठनों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

इस मौके पर पद्मश्री प्रोफ़ेसर अख़्तर उल वासे ने अपने संबोधन में कहा कि भारत इस समय मोहब्बत की जगह नफ़रतों का बोझ उठा रहा है, इसलिए ज़रूरी है कि हम मोहब्बत के चराग जलाएँ। इस सफल कार्यक्रम के आयोजन पर मैं आयोजकों को बधाई देता हूँ।

मेराज राईन, डायरेक्टर पसमांदा विकास फ़ाउंडेशन ने इस कॉन्फ्रेंस को इस तरह का पहला और अहम कार्यक्रम बताया। उन्होंने कहा कि एनजीओ का असली काम सेवा है, लेकिन अफ़सोस कि कुछ लोग इसे धार्मिक रंग देने की कोशिश करते हैं। अक्सर राजनीतिक नेता शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाओं पर ध्यान नहीं देते, जबकि एनजीओ इस कमी को पूरा कर रहे हैं। बेहतर होगा कि ये संगठन राजनीति से दूर रहकर सिर्फ़ सामाजिक सेवाओं पर ध्यान दें। साथ ही धार्मिक शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा पर भी बराबर ध्यान देना ज़रूरी है ताकि एक संतुलित और उद्देश्यपूर्ण पीढ़ी तैयार हो सके।

सामाजिक कार्यकर्ता एवं सब जन सेवा मंच के अध्यक्ष तथा जमीयत उलेमा-ए-हिंद के दीनी एजुकेशन बोर्ड दिल्ली के उपाध्यक्ष जावेद क़ासमी ने कहा कि जो संगठन सेवा भाव से काम कर रहे हैं, उन्हें सम्मानित करना हमारे लिए गर्व की बात है। जब देश की इज़्ज़त और क़ुर्बानी की बात आती है तो कोई धर्म आड़े नहीं आता, हर इंसान इसके लिए तैयार रहता है।

मौलाना ज़ाहिद आलम मज़ाहिरी, अध्यक्ष उलेमा टीम पसमांदा विकास फ़ाउंडेशन ने कहा कि इस कॉन्फ्रेंस में हर धर्म के लोगों की मौजूदगी ने भाईचारे और सौहार्द का पैग़ाम दिया। पसमांदा विकास फ़ाउंडेशन हर क्षेत्र में अहम सेवाएँ दे रही है। राष्ट्रीय शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रम के तहत मदरसों में कंप्यूटर और एजुकेशनल किट बाँटी जा रही हैं ताकि वे विद्यार्थी, जिन्हें किसी कारणवश पढ़ाई में रुकावटों का सामना है, आगे बढ़ सकें और आधुनिक शिक्षा के माध्यम से तरक्की कर सकें। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। इस अवसर पर फ़ाउंडेशन से अशरफ़ ख़ान (सरपरस्त), मोहम्मद समीर और मोहम्मद मुशर्रफ़ ने भी भाग लिया।

वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल में 'मन महोत्सव' के साथ विश्व मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह 2025 समारोह की शुरुआत

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नईदिल्लीः वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल के मनोचिकित्सा विभाग ने आज 'मन महोत्सव' के तहत परिसर में एक जीवंत जागरूकता मार्च के साथ विश्व मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह 2025 समारोह का उद्घाटन किया। इस मार्च में निदेशक डॉ. संदीप बंसल, प्राचार्य डॉ. गीतिका खन्ना, सभी अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक और मनोचिकित्सा विभागाध्यक्ष डॉ. पंकज वर्मा के साथ-साथ संकाय, रेजिडेंट, छात्र और कर्मचारी शामिल हुए और इसका नेतृत्व किया। इस मार्च का उद्देश्य जागरूकता फैलाना, कलंक को तोड़ना और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में खुली बातचीत को प्रोत्साहित करना था। इस वर्ष का विश्व मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह सेवाओं तक पहुँच - आपदाओं और आपात स्थितियों में मानसिक स्वास्थ्य विषय पर केंद्रित है। इसके अनुरूप, मान महोत्सव में पूरे सप्ताह आकर्षक और शैक्षिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला होगी, जिनमें शामिल हैं: मनोचिकित्सा और मानसिक स्वास्थ्य पर पीजी क्विज़ प्रतियोगिता, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने के लिए पोस्टर और पेंटिंग प्रतियोगिताएं, मानसिक कल्याण पर युवाओं की आवाज़ के लिए माइक ड्रॉप इवेंट, विशेषज्ञों के साथ पैनल चर्चा, संकट और आपात स्थिति के दौरान मानसिक स्वास्थ्य पहुंच सुनिश्चित करने में चुनौतियों और समाधानों पर प्रकाश डालना।

इस अवसर पर बोलते हुए, वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने समाज में सबसे वंचित और जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता सुनिश्चित करने में सामूहिक जिम्मेदारी के महत्व पर जोर दिया। वीएमएमसी की प्रिंसिपल डॉ. गीतिका खन्ना ने जागरूकता के संदेश को आगे बढ़ाने में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला, जबकि मनोचिकित्सा विभागाध्यक्ष डॉ. पंकज वर्मा ने सप्ताह भर चलने वाले समारोह को सभी के लिए एक सहायक और समावेशी वातावरण बनाने के अवसर के रूप में रेखांकित किया।

इस दिवाली, ZEE5 प्रस्तुत भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस में जबरदस्त टकराव देखें,

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। भारत के सबसे बड़े स्वदेशी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ZEE5 ने आज अपने आगामी ओरिजिनल फिल्म भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस का रोमांचक ट्रेलर लॉन्च किया, जो 17 अक्टूबर को विशेष रूप से प्रीमियर होगा। जियो स्टूडियोज़ द्वारा, बावजा स्टूडियोज़ और डॉग 'एन' बोन पिक्चर्स के सहयोग से निर्मित, यह ट्रेलर एक दमदार और रोमांच से भरी पीछा करने वाली थ्रिलर कहानी दिखाता है, जिसकी पृष्ठभूमि उत्तर प्रदेश के रॉबर्ट्सगंज में बनी है। कहानी में इंस्पेक्टर विश्वास भगवत/ भागवत (अरशद वारसी) को दिखाया गया है, जो खौफनाक हत्याओं की श्रृंखला की जाँच करते हैं और साथ ही अपने भीतर के संघर्ष से भी जूझते हैं। कहानी में और रहस्य जोड़ते हुए, जितेंद्र कुमार एक बिल्कुल नए और अनोखे रूप में नजर आएंगे, वे राजकुमार सिरतिया का किरदार निभा रहे हैं, जो बाहर से एक आम इंसान लगता है लेकिन उसके भीतर कई चौंकाने वाले राज छिपे हैं।

ZEE5 ने दशहरे के शुभ मौके पर दिल्ली के पश्चिम विहार स्थित दशहरा ग्राउंड में 'भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस' का ट्रेलर शानदार तरीके से लॉन्च किया। इस मौके पर फिल्म के मुख्य अभिनेता जितेंद्र कुमार और निर्देशक अक्षय शेरे ने भी शिरकत की और दर्शकों से सीधे जुड़कर माहौल को और खास बना दिया। कार्यक्रम में लगभग XXX लोग शामिल हुए, जिससे पूरा वातावरण उत्साह, खुशी और त्योहार की ऊर्जा से भर गया। मौका और जगह का चुनाव भी बेहद खास रहा, क्योंकि यह अच्छाई की बुराई पर जीत के संदेश को खूबसूरती से दर्शाता है। इस तरह ट्रेलर लॉन्च सिर्फ एक इवेंट नहीं रहा, बल्कि यह एक भव्य सांस्कृतिक उत्सव बन गया—जहाँ कहानी कहने की कला, त्योहार की खुशी और साथ होने का जश्न मनाया गया।

जबरदस्त सीक्वेंस, सिहरन पैदा कर देने वाले दृश्यों और अरशद तथा जितेंद्र के किरदारों के बीच खौफनाक टकराव के साथ, ट्रेलर "भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस" को अच्छाई और बुराई की रोमांचक कहानी के रूप में पेश करता है। तनाव से भरे बैकग्राउंड म्यूजिक और दमदार संवादों से सजे इस झलक ने एक भव्य कहानी का माहौल तैयार कर दिया है, जो 17 अक्टूबर को केवल ZEE5 पर उजागर होगा।

निर्देशक अक्षय शेरे ने कहा, "भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस सिर्फ एक क्राइम थ्रिलर नहीं है, यह नैतिकता, प्रायश्चित और उन फैसलों की खोज है जो हमें परिभाषित करते हैं। अरशद और जितेंद्र के साथ काम करना एक शानदार अनुभव रहा, क्योंकि उन्होंने अपने किरदारों में इतनी सच्चाई और गहराई लाई कि हर सीन और भी प्रभावशाली बन गया। ट्रेलर लॉन्च का असली जादू तब देखने को मिला जब सैकड़ों लोग दशहरा ग्राउंड में मौजूद थे और उन्होंने लाइव ट्रेलर देखकर जोश और तालियों से माहौल को जीवंत बना दिया और उस पल ने हमें याद दिलाया कि हम कहानियाँ क्यों सुनाते हैं। मैं बेताबी से इंतजार कर रहा हूँ कि दर्शक इस अक्टूबर ZEE5 पर विश्वास भगवत और समीर की इस भावनात्मक और रोमांचक यात्रा का अनुभव करें।"

अभिनेता अरशद वारसी कहते हैं, "विश्वास भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस निभाना मेरे लिए एक बेहद गहरा और भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण अनुभव रहा, लेकिन यह मेरे करियर का सबसे संतोषजनक अनुभवों में से एक भी है। वह आपका आम हीरो नहीं है, वह दोषपूर्ण,

क्रोधित और अपने अतीत से परेशान है, फिर भी न्याय कायम करने के लिए संकल्पित है। ट्रेलर आपको उनके जीवन की एक झलक दिखाता है, लेकिन फिल्म आपको उनके संघर्ष और साहस की पूरी यात्रा से परिचित कराएगी। मेरे लिए भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस को खास बनाने वाली बात यह है कि यह सिर्फ किसी अपराध को सुलझाने की कहानी नहीं है, बल्कि अपने अंदर की लड़ाइयों का सामना करने की कहानी है। मैं दर्शकों को इस यात्रा का अनुभव करने के लिए उत्साहित हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि यह उन्हें आखिरी पल तक पूरी तरह बांधे रखेगी।"

जितेंद्र कुमार ने कहा, " भगवत/ भागवत चैप्टर वनः राक्षस में यह भूमिका मेरे अब तक किए गए किसी भी किरदार से बिल्कुल अलग है। समीर एक ऐसा किरदार है जिसमें कई पहलू हैं -बाहर से साधारण, कभी-कभी संवेदनशील और रोमांटिक भी, लेकिन इसके भीतर जटिल और कहीं अधिक असहज परतें छिपी हुई हैं। इसे निभाना मुझे उस छवि से बाहर आने का अवसर मिला, जिससे दर्शक मुझे आमतौर पर जोड़ते हैं, और यह मेरे लिए एक अभिनेता के रूप में चुनौतीपूर्ण और मुक्तिदायक अनुभव दोनों रहा। ट्रेलर केवल उनके जटिल व्यक्तित्व की एक झलक दिखाता है, और मैं उत्सुक हूँ कि ZEE5 के दर्शक उनकी पूरी यात्रा का अनुभव करें। ट्रेलर लॉन्च को खास बनाने वाली सबसे बड़ी बात यह थी कि इसे दिल्ली में हजारों लोगों के बीच लाइव देखना, उनकी ऊर्जा, जय-जयकार और हमारे चारों ओर अच्छाई और बुराई का प्रतीक - सभी ने मिलकर भगवत/ भागवत को दुनिया के सामने पेश करने का एक परिपूर्ण अनुभव बना दिया।"

श्रीकृष्ण कृपा धाम में दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ त्रिदिवसीय शरदोत्सव

जीवात्मा व परमात्मा के रास रस के आनंद का केंद्र है शरद पूर्णिमा : गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण कृपा धाम में त्रिदिवसीय दिव्य व भव्य शरदोत्सव का शुभारंभ अनेक संतों-विद्वानों ने श्रीराधाकृष्ण के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके एवं पुष्प अर्पित करके किया।तत्पश्चात आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में भानुपुरा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ज्ञानानंद तीर्थ महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा का चंद्रमा और उसकी उज्ज्वल चंद्रिका सभी को माधुर्य व आनंद की अनुभूति कराती है। शरद पूर्णिमा की दिव्य व भव्य रात्रि के चंद्रमा की चांदनी में अमृत समाहित होकर पृथ्वी पर बरसता है।इसीलिए शरद पूर्णिमा को शीत ऋतु का विशिष्ट पर्व कहा जाता है।

श्रीकृष्ण कृपा धाम के अधिष्ठाता महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा ग्रीष्म ऋतु से शरद ऋतु में प्रवेश का द्वार है।इसे भक्ति व प्रेम के रस का सागर भी माना गया है।शरद पूर्णिमा कन्हैया की वंशी का प्रेम नाद एवं जीवात्मा व परमात्मा के रास रस के आनंद का केंद्र है।इसीलिए इसे लोक कथाओं से लेकर शास्त्रों तक में शुभ व मंगलकारी बताया गया है।

श्रीपीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज एवं जगद्गुरु श्रीमद्विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (वल्लभगढ़ वाले) ने कहा कि शरद पूर्णिमा जितनी पावन व पुनीत किसी भी ऋतु की कोई रात्रि नहीं है।शरद पूर्णिमा महालक्ष्मी का भी पर्व है।ऐसी मान्यता है कि धन संपति की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी शरद पूर्णिमा की रात्रि में पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं।अतः यह लक्ष्मी पूजा का भी पर्व है।

सेवा मंगलम्के अध्यक्ष सन्त प्रवर स्वामी गोविंदानंद तीर्थ महाराज एवं आचार्य विवेक मुनि महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा की महिमा इतनी अधिक है कि इस तिथि को देवराज इंद्र तक ने मां महालक्ष्मी की स्तुति की थी।क्योंकि महालक्ष्मी धन के अतिरिक्त यश,उन्नति,सौभाग्य व सौंदर्य आदि की भी देवी हैं।

उत्तरप्रदेश शासन के पूर्व गृह सचिव मणिप्रसाद मिश्रा व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि शरद पूर्णिमा जीवन को एक नई प्रेरणा देने के साथ-साथ जीवन के उत्थान का आधार और उसे सही दिशा दिखाने का माध्यम भी है।इसीलिए इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

सन्त-विद्वत सम्मेलन में महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. आदित्यानन्द गिरि महाराज, उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजा कांत मिश्र, महामंडलेश्वर स्वामी नवल गिरि महाराज, गोरे दाउजी आश्रम के महंत प्रह्लाद दास महाराज, सन्त सेवानंद ब्रह्मचारी, आचार्य रामविलास चतुर्वेदी, भागवताचार्य श्रीराम मुद्गल महाराज, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा, वासुदेव शरण, शक्ति स्वरूप ब्रह्मचारी, भजन गायक रतन रसिक, दयानन्द बेनीवाल (हिसार,हरियाणा),अशोक चावला आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बेकाबू कार का कहर, मॉर्निंग वॉक पर निकले चार लोगों को मारी टक्कर; तीन महिलाओं की मौत

गाजियाबाद में जीटी रोड स्थित राकेश मार्ग कट पर शनिवार सुबह करीब छह बजे एक दुखद घटना घटी। सैर कर रहे चार लोगों को एक अनियंत्रित कार ने टक्कर मार दी जिसमें तीन महिलाओं की मौत हो गई जबकि एक व्यक्ति घायल हो गया। घायल को अस्पताल में उपचार देने के बाद छुट्टी दे दी गई। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। गाजियाबाद में जीटी रोड स्थित राकेश मार्ग कट पर शनिवार सुबह करीब पौने छह बजे सैर के लिए निकले चार लोगों को तेज रफ्तार बेकाबू कार ने टक्कर मार दी। हादसे में तीन महिलाओं की मौत हो गई जबकि एक व्यक्ति घायल है। हादसे के बाद चालक मौके से फरार हो गया। हादसे का शिकार हुई तीनों महिलाएं न्यू कोट गांव की रहने वाली थीं।

शनिवार को भी तीनों सुबह करीब पौने छह बजे घर से सैर के लिए निकली थीं। जीटी रोड पर डिवाइडर के पास महिलाएं सड़क पार करने के लिए खड़ी थीं। उनके साथ ही कोट गांव के पास स्थित श्याम विहार कालोनी निवासी 40 वर्षीय विपिन शर्मा भी सड़क पार करने के लिए खड़े थे। इसी बीच लालकुआं की तरफ से आई तेज रफ्तार टाटा टियागो कार ने जोरदार टक्कर मार दी। तीनों महिलाएं और विपिन डिवाइडर और कार के बीच में आ गए।

इस हादसे में मीनू प्रजापति और सावित्री देवी की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कमलेश ने अस्पताल में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया। श्याम विहार कालोनी निवासी विपिन शर्मा हादसे में चोटिल हुए हैं। उन्हें अस्पताल से प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। कार चालक मौक पर कार छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने कार कब्जे में ले ली है।

एक कार चालक टक्कर लगने के बाद रूका तक नहीं घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है जिसमें टक्कर लगते ही चौधरी मोड़ की तरफ से आई एक कार भी घायलों से टकराते हुए दिख रही है। लेकिन कार चालक ने कार रोकने की बजाय कार थोड़ा पीछे कर फरार हो गया। हादसे के समय विपिन और तीन महिलाओं के अलावा एक अन्य महिला भी वीडियो में दिख रही है, लेकिन पुलिस और घायल विपिन को उस महिला के संबंध में कोई जानकारी नहीं है।

जीटी रोड से सटी न्यू कोट गांव कालोनी में शनिवार सुबह हादसे की सूचना मिलते ही कोहराम मच गया। पड़ोसियों ने किसी तरह स्वजन को संभाला। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे। मृतक सावित्री देवी के दो बेटे और दो बेटी हैं। सभी बच्चों की शादी हो गई है। उनके बेटे राकेश की गुड़ मंडी में किराना की दुकान है।

राकेश ने बताया कि रोजाना पड़ोसी महिलाओं के साथ मां सैर के लिए जाती थीं। शनिवार को भी सैर के लिए निकली थीं, लेकिन कुछ ही देर में हादसे की सूचना आ गई। मीनू प्रजापति के दो लड़के और एक लड़की है। तीनों बच्चों की शादी हो गई है। उनके पति निजी कंपनी में काम करते हैं। कमलेश देवी के एक बेटा और एक बेटी है। दोनों बच्चों की शादी हो गई है।

सोशल मीडिया का सूक्ष्म और आकर्षक भ्रमजाल

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

हरदा मध्य प्रदेश

सोशल मीडिया आज संपर्क और संवाद का सबसे तेज़ माध्यम बन चुका है, लेकिन यह भूल जाना ख़तरनाक है कि वहाँ दिखने वाली दुनिया असलियत नहीं होती। यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ लोग अपनी ज़िंदगी के केवल चमकदार हिस्से दिखाते हैं, जबकि हक़ीक़त के बोझिल, थके हुए, और टूटी हुई परतें कैमरे के बाहर रह जाती हैं। हर पोस्ट, हर तस्वीर, हर वीडियो के पीछे एक चयनित सच्चाई होती है, यानी जो दिखाना चाहें बस वही दिखाई देता है। नतीजा यह कि धीरे-धीरे लोगों ने असल ज़िंदगी की सादगी को छोड़कर आभासी जीवन की झूठी भव्यता को अपना आदर्श मान लिया है। इंसान अपने वास्तविक चेहरे से अधिक उस डिजिटल पहचान में डूबता जा रहा है, जो दूसरों के सामने "परफेक्ट" दिखती है। लेकिन यह परिपूर्णता की चाह मन की प्राकृतिक शांति छीन लेती है। आज अधिकांश लोग अनजाने में तुलना के दलदल में फँस चुके हैं, जहाँ दूसरों की मुस्कराहटें ईर्ष्या जगाती हैं, और दूसरों के सुख-दुख पर अंगूठा उठाना ही आत्म-संतुष्टि का माध्यम बन गया है।यह ठीक वैसा ही है जैसे दर्पण के सामने खड़े होकर ख़ुद की जगह दूसरों की परछाईं देखने लगना। सोशल मीडिया ने हमें "देखे जाने" की लत लगा दी है; अब हम जीवन जीने से ज़्यादा पोस्ट करने में व्यस्त हैं। खुशियाँ मनाने के बजाय उन्हें प्रमाणित करने की जिद ने आत्मिक शांति छीन ली है। यह भ्रमजाल इतना सूक्ष्म और आकर्षक है कि व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी वास्तविकता से कटने लगता है। रिश्ते केवल ऑनलाइन चैट तक सीमित हैं, भावनाएँ स्टेटस अपडेट बन चुकी हैं, और व्यक्तित्व लाइक्स की गिनती पर

निर्भर रहने लगा है। यह स्थिति न केवल मानसिक तनाव को बढ़ाती है, बल्कि इंसान को भीतर से रिक्त कर देती है।सच्ची समझदारी यही है कि इंसान सोशल मीडिया को अपनी ज़िंदगी का आईना नहीं, एक उपकरण माने। इसका उपयोग जानकारी, संवाद और संपर्क के लिए करें, किंतु अपनी अस्मिता का निर्धारण इससे न करें। वास्तविक जीवन वही है जहाँ असफलताएँ हैं, संघर्ष हैं, लेकिन भावनाओं की गर्माहट भी है; जहाँ सच्चे रिश्तों में दिखावा नहीं, अपनापन है। आभासी मंच पर सच्चाई खोजने वाला व्यक्ति भ्रम में रहेगा, और भ्रम ही मनुष्य की सबसे बड़ी बर्बादी है। जब हम आभासी चमक से मोहित होकर वास्तविकता से मुँह मोड़ लेते हैं, तब हम आत्म-भ्रम के दलदल में उतरते हैं, जहाँ सच्चाई धीरे-धीरे मरती जाती है और बचता है मात्र दिखावा। इसलिए आवश्यक है कि इस काल्पनिक समाज से दूरी नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण संतुलन बनाया जाए, ताकि सोशल मीडिया हमें नियंत्रित न करे बल्कि हम उसे नियंत्रित करें। जीवन की खूबसूरती फ़िल्टर के नीचे नहीं, बल्कि अपूर्णता में छिपी है, और यही अपूर्णता हमारी सच्ची पहचान है।

वाराणसी उर्दू शिक्षक की पत्नी ने की हत्या: सोते समय रॉड से सिर फोड़ा, फिर चाकू से रेत दिया गला, पकड़े जाने पर बताई वजह

परिवहन विशेष न्यूज

वाराणसी सिगरा थाना क्षेत्र के बादशाहबाग में गुरुवार की रात दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई। फरोग-ए-उर्दू मदरसा के शिक्षक दानिश रजा (40) की उनकी पत्नी रूबीना ने धारदार हथियार से गला रेतकर और रॉड से सिर पर वार कर हत्या कर दी। पुलिस ने शुक्रवार देर शाम आरोपी पत्नी को गिरफ्तार कर लिया।

पत्नी बोली- पति करता था प्रताड़ित

पुलिस पूछताछ में रूबीना ने खुलासा किया कि उसका पति आए दिन मारपीट और प्रताड़ना करता था। गुरुवार शाम को भी झगड़ा और पिटाई के बाद उसने पति को मौत के घाट उतारने की ठान ली। रात में सोते समय पहले रॉड से सिर पर वार किया और फिर चाकू से गले व चेहरे पर हमला कर दिया।

चारपाई पर खून से लथपथ मिला शव

शुक्रवार सुबह मोहल्ले वालों ने सूचना दी तो सिगरा पुलिस मौके पर पहुंची। कमरे में फोल्डिंग चारपाई पर दानिश का शव पड़ा था। सिर, गले, चेहरे और सीने पर गहरे जख्म थे और चारों तरफ खून फैला था। दीवारों पर भी खून के छींटे मिले। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए।

पोस्टमार्टम के बाद हत्या का मुकदमा दर्ज

सिगरा इंस्पेक्टर संजय कुमार मिश्रा ने बताया कि खून सूख चुका था, जिससे साफ था कि हत्या एक दिन पहले ही की गई थी। पुलिस ने शक के आधार पर पत्नी को हिरासत में लिया तो वह टूट गई। मृतक की बहन अंदलीब जहरा की तहरीर पर पत्नी के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है।

परिवार में मातम

दानिश चार बहन और दो भाइयों में सबसे छोटे थे। बड़े भाई छत्तीसगढ़ में चिकित्सक हैं। दानिश की 8 वर्षीय बेटी और 5 वर्षीय बेटा है। घटना से परिवार और मोहल्ले में सनसनी फैल गई है।

घर के बाहर टहल रहे युवक पर आवारा सांड ने किया हमला पेट से नीचे आई गंभीर चोट, परिजनों ने निजी अस्पताल में युवक को कराया भर्ती

परिवहन विशेष न्यूज

कुंवर गांव। सालारपुर ब्लाक क्षेत्र के गांव यूसुफ नगर में एक युवक को आवारा सांड ने हमला कर घायल कर दिया परिजनों ने युवक को निजी अस्पताल में भर्ती कराया है।

यूसुफ नगर निवासी कुलदीप पुत्र कृष्णपाल शनिवार बार देर शाम लगभग साढ़े सात बजे घर के बाहर घूम रहा था जहां रोड़ पर आवारा सांड ने कुलदीप पर हमला कर दिया कुलदीप के पेट के नीचे सांड का सींग लगने से गंभीर चोट आई है। यूसुफ नगर में राजकीय इंटर कालेज के मैदान में दर्जनों गौवंशीय पशुओं का झुंड बैठा रहता है जिनको आज तक संरक्षित नहीं किया गया है जबकि गांव में स्थाई गौशाला संचालित है।

ग्रामीणों का कहना है कि सांड खूंखार हो चुका है जो पहले भी गांव के विशाल और कल्लू पर हमला कर चुका है लेकिन विभाग उसके बाबजूद भी संज्ञान नहीं ले रहा है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार- भारत की स्थायी सदस्यता व वीटो शक्ति-विभाजन,समर्थन और बाधाएँ-सटीक विश्लेषण

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता और वीटो शक्ति को शामिल करने से आतंकवाद,जलवायु परिवर्तन, महामारी, क्षेत्रीय संघर्ष के समाधान में भारत महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकता है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर दुनियाँ में अनेकों डेवलपमेंट्स के बीच 29 सितंबर 2025 को समाप्त हुई संयुक्त राष्ट्र महासभा की एक महत्वपूर्ण वाद-विवाद सत्र में विश्व समुदाय ने सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) सुधार की दिशा में एक नए विमर्श को आगे बढ़ाया। इस सत्र में भारत की स्थायी सदस्यता और वीटो शक्ति (निरस्त्रीकरण शक्ति) देने का प्रस्ताव खासतौर पर चर्चा का केंद्र बना। कई देशों ने इस प्रस्ताव का जोरदार स्वागत किया, जबकि कुछ प्रमुख शक्तियों ने इसके विरोध में अपनी आपत्तियाँ प्रकट कीं। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपना दृष्टिकोण दृढ़ता से प्रस्तुत किया और यह स्पष्ट किया कि यदि यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाए, तो यह न केवल भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाएगा,बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन और विकासशील देशों की आवाज़ को सशक्त करेगा। पिछले कई दशकों से यूएनएससी सुधार की माँग उठ रही है, विशेष रूप से नये स्थायी सदस्यों को शामिल करना, वीटो शक्ति का दायरा बदलना या सीमित करना,और निर्णय प्रक्रिया में पारदर्शिता व जवाबदेही लाना।भारत इस सुधार आंदोलन का एक प्रमुख प्रस्तावक रहा है।भारत का तर्क रहा है कि एक बढ़ी हुई, अधिक प्रतिनिधि और न्यायसंगत परिषद ही आज की जटिल चुनौतियों (जैसे आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, महामारी, क्षेत्रीय संघर्ष) को अधिक प्रभावी रूप से संभाल सकती है हालाँकि, सुधार प्रक्रिया बेहद जटिल है क्योंकि चार्टर संशोधन की प्रक्रिया में न केवल महासभा बल्कि सभी पांच स्थायी सदस्यों की स्वीकृति आवश्यक होती है। इसके अतिरिक्त, कई देश नए स्थायी सदस्यों को वीटो शक्ति देने पर संकोच करते हैं, उन्हें डर रहता है कि इससे उनकी मौलिक प्रभावशीलता अथवा वैश्विक शक्ति संतुलन प्रभावित होगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि इस पृष्ठभूमि में, 2025 की यूएनएससी जनरल असेंबली सत्र में भारत की स्थायी सदस्यता और वीटो शक्ति को शामिल करने की चर्चा एक ऐतिहासिक एवं निर्णायक प्रस्ताव बनकर सामने आई।बता दें कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की संरचना और उसके अभ्यस्त कार्यप्रणाली की जड़ें 1945 की यूएन चार्टर में हैं। आज यूएनएससी में पाँच (पी5) स्थायी सदस्य,चीन, फ्रांस, रूस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका वीटो शक्ति रखते हैं, जबकि दस अन्य सदस्य गैर-स्थायी होते हैं, जिनका कार्यकाल दो वर्ष का होता है और वे वीटो शक्ति नहीं रखते। इस व्यवस्था ने दशकों तक वैश्विक शांति और सुरक्षा में भूमिका निभाई, लेकिन समय के साथ इसके प्रति आलोचनाएँ भी बढ़ीं- विशेष रूप से यह तर्क कि यह संरचना 1945 के विश्व व्यवस्था को निरंतर बनाए रखती है और आधुनिक शक्ति संतुलन, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व एवं वैश्विक बहुसंख्यकता को प्रतिबिंबित नहीं करती।

साथियों बात अगर हम भारत को वीटो पावर मिलने के पक्ष और विपक्ष में उठी आवाजों की करें तो समर्थन की आवाजें-(1) उभरते विश्व अर्थशक्तियों का प्रतिनिधित्वः-आज की दुनियाँ विभिन्न महाशक्तियों,आर्थिक शक्ति केन्द्रों और क्षेत्रीय समूहों (जैसे ब्रिक्स,जी20) द्वारा संचालित है। इन समूहों में भारत एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बन चुका है। कई देशों ने स्वीकार किया है कि यूएएससी का ढांचा 1945 की स्थिति पर आधारित बनावट को प्रतिबिंबित करता है और उसमें परिवर्तन आवश्यक है। उदाहरणतः,भूटान के प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से भारत और जापान को स्थायी सदस्यता का "योग्य राष्ट्र" घोषित करते हुए उनकी वकालत की।(2) ब्रिक्स एवं साझी घोषणाएँः-ब्रिक्स देशों (ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) ने संयुक्त रूप से प्रस्ताव रखा है कि यूएनएससी को व्यापक, अधिक प्रतिनिधि और समावेशी बनाना आवश्यक है। वे भारत एवं ब्राज़ील को स्थायी सदस्यता दिलाने की अपील करते हैं। रूस,जो स्वयं एक पी5 सदस्य है,ने भी सार्वजनिक रूप से 2025 सत्र में भारत को स्थायी सदस्यता के हकदार बताया।

(3)कार्यक्षमता एवं जवाबदेही में सुधारः-नए सदस्यों के शामिल होने से परिषद की निर्णय क्षमता और वैधता बढ़ सकती है। साथ ही, कई प्रस्तावों में यह भी कहा गया कि नए सदस्यों को प्रारंभ में वीटो शक्ति "स्थगित" (फ्रीज) कर दी जाए-जैसे जापान की जी 4 प्रस्तावना कि नए सदस्यों के वीटो अधिकारों को 15 वर्षों के लिए स्थगित रखा जाए।(4) वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को सशक्त करनाः-विकसित देशों और पश्चिमी शक्तियों के दबदबे को तोड़ने की दिशा में यह कदम एक प्रतीक हो सकता है कि विकासशील देशों की सुरक्षा, न्याय और भागीदारी की मांग गंभीरता से ली जा रही है। विरोध एवं संदेह-(1)स्थायी सदस्यों की अनिच्छा और शक्ति संतुलन का डरः-वर्तमान पी5 सदस्यों में से कुछ,विशेष रूप से चीन-वे बदलाव स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं जो उनकी शक्ति को प्रभावित कर सकें।चीन ने भारत की यूएनएससी स्थायी सदस्यता कासमर्थन नहीं किया है।यह विरोध रणनीतिक और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण भी है।(2)वीटो शक्तिदेने संबंधी संवेदनशीलता :- यदि नए स्थायी सदस्यों को वीटो शक्ति दी जाए, तो प्रश्न उठते हैं: क्या उन्हें ऐसी शक्ति देना उचित है यदि वे पहले निर्दलीय या विकासशील देश रहे हों? और यह शक्ति दुरुपयोग का खतरा भी रखती है। इस कारण कई देशों ने यह प्रस्ताव कि नए सदस्यों को तत्काल वीटो शक्ति न मिले, या सीमित अधिकार हो, को स्वीकार किया। लेकिन भारत ने यह स्पष्ट किया कि यदि सदस्यता दी जाए तो वीटो शक्ति अनिवार्य हो।(3)संशोधन प्रक्रिया की जटिलताः- यूएनएससी सुधार करने के लिए यूएन चार्टर के अनुसार संशोधन करना होगा। यह प्रक्रिया दो चरणों में होती हैः (1) महासभा में दो तिहाई अनुपालन(अप्रोक्स 128 सदस्य) से प्रस्ताव पारित करना,और (2) प्रत्येक सदस्य देश (उन देशों की राष्ट्रीय स्वीकृति प्रक्रिया) द्वारा अनुमोदन जिसमें सभी पाँच स्थायी सदस्यों का स्वीकृति देना अनिवार्य है। यदि कोई स्थायी सदस्य इस प्रस्ताव को स्वीकृत न करे, तो entire सुधार प्रक्रिया विफल हो सकती है।(4)पार्टियल समाधान का विरोधः-कुछ प्रस्ताव केवल नए सदस्यों को स्थायी सदस्यता देना चाहते हैं, पर वीटो शक्ति न देना या अस्थायी वीटो देना। भारत इस तरह के "पार्टियल" या "मध्यवर्ती" समाधान को स्वीकार नहीं करता। भारत की स्पष्ट नीति रही है कि स्थायी सदस्यता के साथ वीटो शक्ति होना चाहिए।(5) भेदभाव एवं नए चयन मानदंडों पर बहसः-सुधार प्रस्तावों में कभी-कभी धर्म, जाति, जीडीपी, सैन्य शक्ति आदि जैसे पैरामीटर प्रस्तावित होते हैं।भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि यूएनएससी प्रतिनिधित्व में धर्म या धार्मिक आधार आधारित मानदंडों को स्वीकार नहीं किया जाएगा; प्रतिनिधित्व क्षेत्रीय आधार पर होना चाहिए।

साथियों बात अगर हम भारत का दृढ़ दृष्टिकोण और रणनीति की करें तो,भारत ने इस प्रस्ताव को केवल एक महत्वाकांक्षी राजनीतिक प्रस्ताव नहीं, बल्कि एक न्यायोचित, तर्कसंगत और वैध माँग के रूप में पेश किया। निम्नलिखित बिंदु उसके दृष्टिकोण और रणनीति को स्पष्ट करते हैंः (1)योग्यता एवं स्वाभाविक दावेदारीः-भारत का तर्क है कि उसने आर्थिक, वैज्ञानिक सैन्य, राजनयिक और जनसंख्या स्तर पर वह शक्ति और प्रभाव अर्जित किया है जो उसे स्थायी सदस्यता का हकदार बनाती है। इसके अलावा, भारत लगातार संयुक्त राष्ट्र की कार्रवाइयों में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है।(2)वीटो पहल प्रस्तावः भारत ने 2022 में "वीटो पहल" (वीटो इनिशिटिव) का प्रस्ताव रखा, जिसमें यह सुझाव दिया गया कि यदि कोई स्थायी सदस्य वीटो शक्ति का उपयोग करता है, तो उसे महासभा में आकर स्पष्ट रूप से कारण बताना आवश्यक हो। यह पहल सुरक्षा परिषद को अधिक जवाबदेह बनाना चाहती है। (3) संविधान संशोधन की बाधाओं को समझने की रणनीतिः- भारत यह अच्छी तरह जानता है कि सुधार प्रक्रिया में स्थायी सदस्यों की सहमति अनिवार्य हैइसलिए वह सहमत प्रयास, गठबंधन और कूटनीतिक दबाव की रणनीति पर निर्भर है। उसे यह समझ है कि चीन या अन्य बड़े सदस्य विरोध कर सकते हैं।(4)बहुबाहु साझेदारी एवं समर्थन जुटाने का कदमः-भारत ने अनेक देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संवाद बढ़ाए हैं। उदाहरणतः भूटान ने समर्थन दिया। रूस ने सार्वजनिक भाषण में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया।भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि अधिक से अधिक देश इस प्रस्ताव का समर्थन करें और इसे व्यापक वैश्विक बहुमत मिले।

साथियों बात अगर हम चुनौतियाँ एवं निहिताएँ को समझने की करें तो (1) स्थायी सदस्यों काविरोधः यदि कोई पी5 सदस्य (जैसेचीन) इस प्रस्ताव का विरोध करे और वह सुधार प्रस्ताव को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत न करे, तो सुधार प्रक्रिया ठप हो सकती है।(2)भविष्य की शक्ति संरचना बदलने का भयः-कुछ देशों को डर है कि यदि कई देशों को वीटो शक्ति दी जाए, तो निर्णय प्रक्रिया अधिक जटकशील हो सकती है,अर्थात्निर्णय लेने में समय बढ़ सकता है।(3)नवस्थापित सदस्यों की जवाबदेही व विश्वासः-यदि नए सदस्यों को वीटो शक्ति दी जाए, तब उनसे उम्मीद की जाएगी कि वे इसे विवेकपूर्ण एवं अंतरराष्ट्रीय हितों की दिशा में उपयोग करें। यदि यह शक्ति दुरुपयोग में चली जाए, तो परिषद की साख पर प्रश्न खड़ा होगा।(4)समयनिष्ठता बनाए रखनाः-प्रस्तावना के अनुसार सुधार जल्द करना आवश्यक है, किंतु समय की कसौटी यह है कि महासभा और राष्ट्रीय अनुमोदन प्रक्रिया समय ले सकती है। इस बीच विश्व में संघर्ष, युद्ध या अन्य आपात स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं (5) भागीदारी की असमानता और मानदंड विवादः-यदि नए सदस्यों को चुने जाने का मानदंड स्पष्ट न हो, तो विवाद उत्पन्न हो सकते हैं -किन देशों को स्थायी सदस्यता मिले, किन देशों को न मिले,और यह वैश्विक ध्रुवीकरण को जन्म दे सकता है।

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, संयुक्त राष्ट्र महासभा की 29 सितंबर 2025 तक की सभा ने वास्तव में एक ऐतिहासिक प्रस्ताव को,भारत को संयुक्त राष्ट्र रक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाना और वीटो शक्ति देना वैश्विक स्तर पर चर्चा योग बनाए रखा। इस प्रस्ताव ने उजागर किया कि विश्व व्यवस्था बदल रही है और वैश्विक समुदाय अब पुराने ढाँचे से आगे बढ़ने की मांग कर रहा है।भारत ने इस प्रस्ताव को न केवल एक व्यक्तिगत आकांक्षा के रूप में उठाया है, बल्कि एक व्यापक दृष्टि के साथ, वह यह दिखाना चाहता है कि वैश्वीकरण, विकेंद्रीकरण और बहुध्रुवीय शक्ति संरचनाएं अब समय की माँग हैं।

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं चंद्रचूड़ और भागवत

(आलेख : सवेरा, अनुवाद : संजय पराते)

भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ द्वारा हाल ही में ऑनलाइन पोर्टल न्यूज़लॉन्ड्री को दिए गए साक्षात्कार में उनके विचारों के कुछ सनसनीखेज और भयावह खुलासे हुए हैं। स्वाभाविक रूप से इससे पहले, पूर्व न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति-पश्चात के विचारों के बारे जैसी हलचल मची है, वह शायद ही कभी देखी गई है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उनके बयान न केवल उनकी वास्तविक सोच को उजागर करते हैं, बल्कि हाल के दिनों में भारत को परेशान करने वाले सबसे भड़काऊ और विभाजनकारी मुद्दों में से एक -- धार्मिक संघर्ष और उसका इतिहास, खासकर पूजा स्थलों के संबंध में -- पर लगातार बन रहे सार्वजनिक विमर्श को भी बल देते हैं। इसलिए चंद्रचूड़ ने जो कहा है, उसे समझना ज़रूरी है।

इंटरव्यू के क्लिप के अनुसार, न्यूज़लॉन्ड्री के श्रीनिवासन जैन ने चंद्रचूड़ से इस धारणा पर टिप्पणी करने को कहा कि 2019 का अयोध्या फ़ैसला सिर्फ़ इसलिए हिंदू पक्ष के पक्ष में गया, क्योंकि उन्होंने 1949 में राम लला की मूर्ति को अवैध रूप से भीतरी प्रांगण में रखकर हंगामा किया और अपवित्रता में लिप्त रहे, जबकि मुस्लिम पक्ष ने बाहरी प्रांगण पर हिंदुओं के कब्ज़े का कोई विरोध नहीं किया था। इस पर चंद्रचूड़ ने काफ़ी भावुक होकर कहा, ₹जब आपने कहा कि हिंदू ही भीतरी प्रांगण को अपवित्र कर रहे थे, तो अपवित्रता के मूल कृत्य -- मस्जिद के निर्माण -- के बारे में क्या? आप वो सब भूल गए, जो हुआ था? हम भूल गए कि इतिहास में क्या हुआ था?₹

सीधे शब्दों में कहें तो, पूर्व मुख्य न्यायाधीश कह रहे हैं कि मस्जिद का निर्माण (जिसके लगभग पाँच शताब्दियों पहले 1528-29 में किए जाने की रिपोर्ट है) ही अपवित्र कृत्य था। यह अपवित्र काम क्यों है? क्योंकि, उनका आशय यह है कि यह उसी स्थान पर बनाई गई थी, जहाँ हिंदुओं की मान्यता के अनुसार भगवान राम का जन्म हुआ था, और जहाँ कभी एक मंदिर हुआ करता था।

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने 2019 के फैसले में दर्ज किया था कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की जाँच से पता चला था कि मस्जिद के नीचे एक हिंदू धार्मिक स्थल के अवशेष थे, लेकिन उसने इन अवशेषों को 12वीं शताब्दी का पाया था। न्यायालय ने कहा था कि मंदिर के अस्तित्व और मस्जिद के निर्माण के बीच 400 वर्षों के अंतराल का कोई स्पष्टीकरण नहीं है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह स्थापित नहीं हुआ कि मस्जिद का निर्माण मंदिर को नष्ट करके किया गया था। सर्वोच्च न्यायालय के 1045 पृष्ठों के फैसले का प्रासंगिक अंश इस प्रकार है :

"II. एएसआई रिपोर्ट में हिंदू धार्मिक मूल की एक अंतर्निहित संरचना, जो बारहवीं शताब्दी के मंदिर वास्तुकला का प्रतीक है, के अवशेषों के बारे में संदर्भ के निष्कर्षों के निम्नलिखित चेतावनियों के साथ पढ़ा जाना चाहिए :

(i) जबकि एएसआई रिपोर्ट में पहले से मौजूद संरचना के खंडहरों का अस्तित्व पाया गया है, रिपोर्ट में यह नहीं बताया गया है : (क) पहले से मौजूद संरचना के विनाश का कारण ; और (ख) क्या मस्जिद के निर्माण के उद्देश्य से पहले की संरचना को ध्वस्त किया गया था।

(ii) चूँकि एएसआई की रिपोर्ट में अंतर्निहित संरचना की तिथि बारहवीं शताब्दी बताई गई है, इसलिए अंतर्निहित संरचना और मस्जिद के निर्माण के बीच लगभग चार शताब्दियों का समय अंतराल है। लगभग चार शताब्दियों की अंतराल अवधि में क्या घटित हुआ, यह समझाने के लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है;

(iii) एएसआई की रिपोर्ट यह निष्कर्ष नहीं निकालती कि (पूर्ववर्ती संरचना की नींव पर मस्जिद के निर्माण के अलावा) मस्जिद के निर्माण के लिए पहले से मौजूद संरचना के अवशेषों का इस्तेमाल किया गया था; और

(iv) मस्जिद के निर्माण में जिन स्तंभों का इस्तेमाल किया गया था, वे काले कसौटी पत्थर के स्तंभ थे। एएसआई को ऐसा कोई सबूत नहीं मिला है, जिससे पता चले कि मस्जिद के नीचे की संरचना में ये कसौटी स्तंभ खुदाई के दौरान मिले स्तंभों के आधार से संबंधित हैं।

III. एएसआई द्वारा प्राप्त पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर कानूनी तौर पर स्वामित्व का निर्धारण नहीं किया जा सकता। बारहवीं शताब्दी, जिसमें अंतर्निहित संरचना का काल बताया गया है, और सोलहवीं शताब्दी में मस्जिद के निर्माण के बीच, चार शताब्दियों का अंतराल है। बारहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच मानव इतिहास के क्रम से संबंधित कोई साक्ष्य अभिलेखों में प्रस्तुत नहीं किया गया है। इस प्राचीनता के मामले में (i) अंतर्निहित संरचना के विनाश के कारण; और (ii) क्या मस्जिद के निर्माण के लिए पहले से मौजूद संरचना को ध्वस्त किया गया था, इस पर कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। भूमि के स्वामित्व का निर्णय स्थापित कानूनी सिद्धांतों और एक दीवानी मुकदमे को नियंत्रित करने वाले साक्ष्य मानकों के आधार पर किया जाना चाहिए। ['अयोध्या अंतिम निर्णय' से उद्धरण ; अध्याय पी -- स्वामित्व पर विश्लेषण ; अनुच्छेद 788 ; पृष्ठ 906-907]

मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ सुप्रीम कोर्ट के उन पाँच न्यायाधीशों में से एक थे, जिन्होंने इस फैसले को साथ में लिखा था। इसलिए, उन्हें न केवल उपरोक्त निष्कर्ष की जानकारी है, बल्कि वे इसके पक्षकार भी हैं। फिर भी अब वे दावा करते हैं कि अपवित्रीकरण का 'मूल' कृत्य बाबरी मस्जिद का निर्माण ही था।

इतना ही नहीं, वह उन लोगों की भी आलोचना करते हैं जो संपूर्ण इतिहास को नहीं देखते, बल्कि अपनी सुविधानुसार कुछ अंशों या प्रकरणों का चयन कर लेते हैं।

उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा, ₹अब, जब आप स्वीकार करते हैं कि इतिहास में ऐसा हुआ है, और हमारे पास पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में सबूत मौजूद हैं, तो आप अपनी आंखें कैसे बंद कर सकते हैं? तो, इनमें से कई टिप्पणीकार, जिनका आपने उल्लेख किया है, वास्तव में इतिहास के बारे में एक चयनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, इतिहास में एक निश्चित अवधि के बाद जो हुआ है, उसके साक्ष्य को नजरअंदाज करते हैं और ऐसे साक्ष्य की ओर देखना शुरू करते हैं, जो ज्यादा तुलनात्मक है।₹

पूर्व मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ के अनुसार इतिहास

इस प्रकार, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, जो एक प्रकांड और विद्वान न्यायाधीश माने जाते हैं, इस बात की वकालत कर रहे हैं कि क्या सही था और क्या गलत, यह स्थापित करने के लिए इतिहास को यथासंभव पीछे तक खंगाला जाना चाहिए। विशिष्ट मुद्दों के निर्धारण के लिए स्वामित्व, प्रतिकूल कब्ज़ा आदि से संबंधित कानूनों सहित, विधि के नियमों का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन -- चंद्रचूड़ का तर्क है कि -- व्यापक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इस व्यापक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखने का एक परिणाम यह हो सकता है कि सर्वोच्च न्यायालय ने अंततः विवादित भूमि का स्वामित्व हिंदू पक्ष को दे दिया, इस तथ्य के आधार पर कि विवादित क्षेत्र के एक बड़े हिस्से पर उनका कब्ज़ा था, और उन्होंने मुस्लिमों के घुसपैठ का लगातार विरोध किया था। यह तब हुआ, जब फैसले में बार-बार यह कहा गया कि अतीत में मुस्लिम पक्ष को उनके पूजा स्थल से वंचित करके उनके साथ अन्याय किया गया था, और 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद का निर्दयतापूर्वक विध्वंस अवैध था। फैसले से उनके कुछ अंश यहां दिए जा रहे हैं :

"मस्जिद का विध्वंस और इस्लामी ढांचे का विनाश कानून के शासन का घोर उल्लंघन था;" (पृष्ठ 913).

"1934 में मस्जिद को नुकसान पहुँचने और 1949 में उसको अपवित्र करने के कारण मुस्लिमों को वहाँ से निकलना पड़ा और अंततः 6 दिसंबर 1992 को उसका विध्वंस करना, कानून के शासन का गंभीर उल्लंघन था;" (पृ.914).

₹22/23 दिसंबर 1949 की दरम्यानी रात को, जब हिंदू मूर्तियों की स्थापना करके मस्जिद को अपवित्र किया गया, मुस्लिमों को इबादत और कब्ज़े से वंचित होना पड़ा। उस अवसर पर मुस्लिमों की बेदखली किसी वैध प्राधिकारी द्वारा नहीं, बल्कि एक ऐसे कृत्य के माध्यम से की गई थी, जो उन्हें उनके इबादत स्थल से वंचित करने के लिए सोचा गया था। 1898 की दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 145 के तहत कार्यवाही शुरू होने और आंतरिक प्रांगण की कुर्की के बाद, एक रिसीवर नियुक्त होने के बाद, हिंदू मूर्तियों की पूजा की अनुमति दी गई। मुकदमे के लंबित रहने के दौरान, एक सार्वजनिक इबादत स्थल को नष्ट करने की एक सोची-समझी कार्रवाई में मस्जिद के पूरे ढांचे को गिरा दिया गया। मुस्लिमों को एक ऐसी मस्जिद से गलत तरीके से वंचित किया गया है, जिसका निर्माण 450 साल से भी पहले हुआ था।₹ (पृष्ठ 921).

हिंदू पक्ष के कृत्यों को कानून का घोर उल्लंघन बताने और फिर भी उनके निरंतर कब्जे (भले ही वह अवैध हो) के आधार पर उन्हें भूमि का स्वामित्व प्रदान करने का यह गूढ़ विरोधाभास ही इस फैसले की विशेषता है। चंद्रचूड़ जिस व्यापक परिप्रेक्ष्य की बात करते हैं, शायद उसने इस विचित्र न्याय में योगदान दिया। न्यायालय ने अतीत के इस अन्याय के मुआवजे के रूप में मुस्लिम पक्ष को एक अलग स्थान पर 5 एकड़ ज़मीन प्रदान की है और कहा है कि ₹न्याय नहीं होगा, यदि न्यायालय उन मुस्लिमों के अधिकारों की अनदेखी करता है, जिन्हें मस्जिद के ढांचे से ऐसे तरीकों से वंचित किया गया है, जो कानून के शासन के लिए प्रतिबद्ध एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में नहीं अपनाए जाने चाहिए थे।₹ (पृष्ठ 922-23).

अब, मथुरा और काशी?

कुछ हफ़्ते पहले, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने दिल्ली में एक बैठक में घोषणा की थी कि वाराणसी/काशी में काशी विश्वनाथ मंदिर से सटी ज्ञानवापी मस्जिद और मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि मंदिर से सटी शाही ईदगाह मस्जिद परिसर ऐसे मुद्दे हैं, जो अभी भी लंबित हैं। उन्होंने कहा था कि एक संगठन के रूप में आरएसएस इन्हें विशुद्ध रूप से हिंदू धार्मिक स्थल के रूप में स्थापित करने के किसी भी आंदोलन में शामिल नहीं होगा, लेकिन आरएसएस के सदस्य इसमें शामिल होने के लिए स्वतंत्र हैं। आरएसएस के सदस्य भाजपा, विश्व हिंदू परिषद और कई अन्य संगठनों का नेतृत्व करते हैं। इसलिए, इन विभाजनकारी आंदोलनों को हरी झंडी मिल गई है। ऐतिहासिक ₹मौलिक अपवित्रता₹ के बारे में चंद्रचूड़ का बयान निश्चित रूप से आरएसएस कार्यकर्ताओं के लिए इसमें उपयोगी साबित होगा।

ऐसा लगता है कि इस तरह के कदमों को अवैध घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम (पीडब्लूए), 1991, स्वतंत्रता के समय प्राप्त यथास्थिति पर रोक लगाता है। लेकिन यहां भी चंद्रचूड़ नए दावों के द्वार खोलने में मददगार रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने 2023 में ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वेक्षण करने की अनुमति दी थी, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या मस्जिद एक नष्ट हिंदू मंदिर पर बनाई गई थी, जैसा कि हिंदू याचिकाकर्ताओं ने दावा किया था। इससे पहले, 2022 में, चंद्रचूड़ ने ज्ञानवापी विवाद की सुनवाई करते हुए मौखिक रूप से कहा था कि पूजा स्थल के धार्मिक चरित्र का पता लगाना पूजा स्थल अधिनियम के तहत वर्जित नहीं है। ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वेक्षण में, एएसआई ने दावा किया था कि उसे मस्जिद के नीचे एक हिंदू मंदिर के अवशेष मिले हैं। इस आदेश के बाद मथुरा, संभल, अजमेर, भोजशाला आदि कम से कम 17 स्थानों पर तथाकथित विवादित स्थलों पर सर्वेक्षण की मांग की गई, तथा कुछ स्थानों पर हिंसा भी भड़क उठी।

न्यूज़लॉन्ड्री के साथ साक्षात्कार में इस बारे में पूछे जाने पर, चंद्रचूड़ ने कहा कि पीडब्लूए के यथास्थिति संबंधी प्रावधान में दो अपवाद थे : पहला, अयोध्या विवाद (जो बहुत पहले से चल रहा था) और दूसरा, ऐसे मामले, जहाँ यह निर्धारित किया जाना था कि कोई स्थल पुरातात्विक महत्व का है या नहीं। दूसरे मामले में, अदालतों को इस प्रकार के मामले की जाँच करने का अधिकार था। इस प्रकार, उन्होंने पीडब्लूए में ही एक छोटी सी दरार डाल दी है : अदालत सर्वेक्षण का आदेश दे सकती है, और फिर इतिहास और आस्था, और पूरा 'व्यापक परिप्रेक्ष्य' सामने आ जाएगा।

अयोध्या और ज्ञानवापी मामलों के फैसलों के बाद पिछले कुछ वर्षों से कथित ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने की अनेकों मांगों का संगम, आरएसएस द्वारा इसे हरी झंडी दिखाना और अब चंद्रचूड़ द्वारा इसका विद्वत्तापूर्ण औचित्य प्रतिपादन, ये सब मिलकर एक ऐसा ज़बरदस्त मिश्रण तैयार कर रहे हैं, जो एक चिंताजनक भविष्य की ओर इशारा करता है। ऐसे समय में जब मोदी सरकार बेरोज़गारी, विनिर्माण क्षेत्र के विकास दर में ठहराव, महंगाई और राज्य सरकार के घटते संसाधनों जैसे गंभीर आर्थिक संकटों से निपटने में लाचार है, ये विभाजनकारी मांगें शायद लोगों का ध्यान और ऊर्जा भटकाने का काम करेंगी।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं)

विरोध के बाद भी 76 साल की उम्र में डी राजा फिर सीपीआई मुखिया बने !

रामस्वरूप रावतसरे

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) का 25वां राष्ट्रीय अधिवेशन हाल ही में चंडीगढ़ में संपन्न हुआ। इसमें वरिष्ठ नेता डी राजा को तीसरी बार पार्टी का महासचिव चुना गया। ये अधिवेशन 21 से 25 सितंबर 2025 तक चंडीगढ़ में राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत हुआ। इसमें देशभर से 800 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इससे पहले मदुरै कॉन्ग्रेस में जब उन्हें दूसरी बार महासचिव चुना गया तब उन्होंने कहा कि अगली बार वे 75 साल के हो चुके होंगे और पार्टी उनको तीसरी बार महासचिव नहीं चुनेगी लेकिन तीसरी बार उनके चयन के बाद पार्टी के अंदर कई तरह की चर्चा शुरू हो गई। पार्टी के अंदर केरल और कुछ छोटे राज्यों की कई इकाइयों ने 75 वर्ष की आयु सीमा को सख्ती से लागू करने की माँग की थी लेकिन 76 वर्ष के हो चुके राजा को अपवाद के तौर पर फिर चुना गया।

सीपीआई इस वर्ष अपनी शताब्दी मना रही है। इसी साल पार्टी ने बड़े पदों पर नेतृत्व के लिए 75 वर्ष की आयु सीमा तय की थी लेकिन इस अधिवेशन में 'निरंतरता बनाए रखने' के नाम पर इस नियम को दरकिनार कर दिया गया। राजा ही नहीं, केंद्रीय नियंत्रण आयोग के अध्यक्ष चुने गए के नारायण भी 75 वर्ष की आयु सीमा से ऊपर हैं। गौरतलब है कि सीपीआई वही पार्टी है जिसने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर 'रिटायरमेंट' का प्रोपेगेंडा यह कहते हुए चलाया था कि 75 पार नेता को पद छोड़ देना चाहिए। इसके बाद खुद की पार्टी में ये निर्णय लिए जाने के बाद पार्टी खुद ही सवालों के घेरे में आ गई है। विपक्षियों का कहना है कि क्या यह नियम सिर्फ दूसरों पर लागू होता है?

जानकारी के अनुसार पार्टी में महासचिव पद के लिए पहले अमरजीत कौर का नाम सामने आया था। अगर उन्हें चुना जाता तो वह भारत में किसी वामपंथी पार्टी की पहली महिला प्रमुख होतीं लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पार्टी के शीर्ष पदों पर अब भी 70 से अधिक आयु के नेता ही बने हुए हैं। जब पार्टी कॉन्ग्रेस में नए नेशनल काउंसिल और नियंत्रण आयोग के नाम प्रस्तुत किए गए तो डी राजा के चयन के बाद अधिवेशन में केरल के सीपीआई नेता राजाजी मैथ्यू थॉमस और दिल्ली इकाई के सचिव दिनेश वर्श्नेय ने सार्वजनिक तौर पर राजा को दी गई छूट का विरोध किया। थॉमस ने तो मंच पर चढ़कर अपना विरोध दर्ज कराया।

डी राजा सीपीआई के पहले दलित महासचिव हैं। उनसे पहले सुधाकर रेड्डी महासचिव के पद पर थे। रेड्डी ने स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा दिया तो 2019 में महासचिव पद संभाला था। इसके बाद उन्हें 2022 में विजयवाड़ा में हुए पार्टी कॉन्ग्रेस में फिर से चुना गया। मदुरै की पार्टी कॉन्ग्रेस में 75 वर्ष की आयु सीमा को लागू किया जाने के बाद प्रकाश करात, बृंदा करात, सूर्यकांत मिश्रा, सुभाषिनी अली, माणिक सरकार और जी रामकृष्णन जैसे वरिष्ठ नेता पोलित ब्यूरो से हट गए थे लेकिन उस समय भी केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन को अपवाद के तौर पर 79 वर्ष की आयु में पोलित ब्यूरो में जगह मिली। इसके पीछे राज्य में अगले वर्ष होने वाले चुनावों को कारण बताया गया था।

जानकारों के अनुसार सीपीआई के राष्ट्रीय सम्मेलन से पहले नेतृत्व को लेकर काफी बहस हुई। केरल और कुछ अन्य राज्यों की इकाइयाँ आयु सीमा को सख्ती से लागू करने के पक्ष में थी। वहीं उत्तर भारत के बिहार जैसी कुछ इकाइयाँ राजा को छूट देने के पक्ष में थी। दिल्ली में पार्टी का सबसे प्रमुख चेहरा होने के कारण राजा को समर्थन मिला।

वामपंथी दलों की राजनीति में सीपीआई असल में दो चेहरे लिए है। विचारधारा के स्तर पर पार्टी समानता, भागीदारी और सामाजिक न्याय की बात करते हैं लेकिन जब बात अपने संगठन की आती है तो वही पुराना नेतृत्व, वही चेहरे और वही ढाँचा बनाए रखते हैं। बात महिला राजनेताओं की हों तो सीपीआई और सीपीआई(एम) जैसे दलों में महिला महासचिव आज तक नहीं बनीं। अमरजीत कौर जैसी वरिष्ठ नेता का नाम महासचिव पद के लिए सामने तो आया लेकिन उन्हें शीर्ष पद नहीं दिया गया। इन दलों में महिला कार्यकर्ताओं की भूमिका जमीनी आंदोलनों तक सीमित है, नेतृत्व के आधार पर उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता।

आज भी शीर्ष पदों पर पुराने नेताओं का ही बोलबाला है फिर चाहे महासचिव की बात हो तो 76 वर्षीय डी राजा के साथ, 82 वर्षीय एमए बेबी और 70 वर्ष से अधिक दीपांकर भट्टाचार्य जैसे नेता दशकों से शीर्ष पदों पर बैठे हैं। पार्टी की तय आयु सीमा को 75 वर्ष को खुद ही तोड़ा गया, फिर भी महासचिव की बारी आई तो इसे अपवाद बता दिया गया।

वामपंथी दल सत्ता पक्ष पर तो लोकतंत्र, जवाबदेही और भागीदारी के सवाल जोर शोर से उठाते हैं लेकिन खुद की पार्टी में न आंतरिक लोकतंत्र दिखता है और न नेतृत्व परिवर्तन की परंपरा नजर आती है। युवा और महिला कार्यकर्ताओं को तो सिर्फ नारे लगाने, स्टेज और दरी बिछाने तक सीमित रखा गया है।

धरती पर चलते तीर्थ: विहार में मोक्ष का मार्ग

[बिना स्थायित्व के स्थिरता: दिगंबर जैन साधु-साध्वियों का विहार]

धरती पर शायद ही कोई जीवन दिगंबर जैन साधु-साध्वियों के विहार जितना कठोर, अनुशासित और आध्यात्मिक हो। जहाँ साधारण मनुष्य घर, संपत्ति और भौतिक सुखों के पीछे भागता है, वहीं दिगंबर साधु इनका पूर्ण त्याग कर निरंतर विहार में रहते हैं। नग्न, बिना किसी संग्रह के, प्रकृति के कठोर ताप सहते हुए वे आंतरिक शांति और स्थिरता के प्रतीक बनते हैं। यह जीवन अहिंसा और अपरिग्रह का जीवंत उदाहरण है, जो सिद्ध करता है कि सच्ची स्थिरता बाहरी सुखों में नहीं, बल्कि आत्मिक संयम और अनासक्ति में है। दिगंबर परंपरा में वस्त्रों का त्याग मोक्ष का प्रथम द्वार माना जाता है, जो साधु को संसार की माया से मुक्त करता है।

दिगंबर जैन विहार का सार है—निरंतर यात्रा, सजगता और जीव-करुणा। साधु-साध्वियाँ नंगे पाँव पैदल चलते हैं, चाहे धरती सूरज की तपिश से जल रही हो या बारिश की बूंदें चुभती हों। जैन आगमों के अनुसार, उनकी नग्नता—जिसमें दिशाएँ ही वस्त्र हैं—अपरिग्रह का प्रतीक है। वे लंबे समय तक कहीं नहीं रुकते, सिवाय चातुर्मास के, जब चार माह साधना और प्रवचन में बिताते हैं। यह विहार उन्हें संसार की नश्वरता की याद दिलाता है, क्योंकि दिगंबर दर्शन में आत्मा ही शाश्वत है, शरीर और बाह्य वस्तुएँ क्षणिक। परिषह (कष्ट सहन) उनके जीवन का हिस्सा है—भूख, प्यास, ठंड, गर्मी को सहते हुए वे परिषह जय प्राप्त करते हैं। 'सर्वार्थसिद्धि' ग्रंथ कहता है कि परिषह स्वाभाविक हैं, जबकि बाह्य तप इच्छा से किए जाते हैं, और दिगंबर साधु इन्हें सहजता से अपनाते हैं।

इस विहार की स्थिरता का रहस्य आत्मबल और संयम है। बिना घर-द्वार के भी वे अडिग रहते हैं, क्योंकि उनकी स्थिरता आंतरिक है। आचार्य विद्यासागर जी महाराज, जिन्होंने 22 वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन त्यागा और कठोर नियमों का पालन किया, ने कहा था: ₹सच्ची स्थिरता संग्रह में नहीं, त्याग में है। अपरिग्रह अपनाने पर संसार की हलचल मन को छू नहीं पाती।₹ उनका जीवन इसका प्रमाण है—नमक, चीनी, हरी सब्जियाँ, दूध-दही का त्याग; दिन में एक बार जल ग्रहण; अनियत विहार। वे न एयर कंडीशंड कमरों में रुके, न मौसमी वस्त्र अपनाए। ठंड में बिना कंबल, गर्मी में बिना छत्र, वे विहार करते रहे। मुनि प्रणम्यसागर जी ने 'अनासक्त महायोगी' में लिखा कि आचार्य विद्यासागर जी का प्रत्येक कदम आत्म-जागृति का संदेश था: ₹मनुष्य स्थायित्व की खोज में भटकता है, पर स्थिरता अनासक्ति से जन्म लेती है।₹ 2024 में चंद्रगिरि तीर्थ पर सल्लेखना द्वारा समाधि तक, उनका जीवन दिगंबर विहार का आदर्श रहा।

दिगंबर जैन विहार अनुशासन और संयम की जीवंत मिसाल है। साधु का संग्रह केवल पिच्छी (सूक्ष्म जीवों की रक्षा हेतु), कमंडल और शास्त्र तक सीमित है। नींद बिना बिस्तर के, जमीन पर। 18 परिषह—भय, रोग, शीत—सहते हुए वे चारित्र की रक्षा करते हैं। तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णित छह बाह्य तप—अनशन, रसायन, प्रभुधे—उनके दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। यह कठोरता उन्हें असाधारण बनाती है। दिगंबर दर्शन में साध्वियाँ भी समान नियमों का पालन करती हैं, हालाँकि कुछ परंपराएँ उन्हें नग्नता से अलग रखती हैं, फिर भी वे पूर्ण मोक्ष की पात्र हैं।

यह विहार केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, समाज के लिए प्रेरणा है। जब दिगंबर साधु बिना संपत्ति के संतुष्ट रह सकता है, तो गृहस्थ अपनी आवश्यकताओं को क्यों नहीं सीमित कर सकता? आचार्य विद्यासागर जी ने कहा: "अहिंसा केवल भोजन का त्याग नहीं, हर कदम पर जीव-रक्षा है। विहार सिखाता है कि करुणा से स्थिरता मिलती है।" मुनि प्रमाणसागर जी ने बल दिया: "परिवर्तनशील संसार में स्थिरता का रहस्य अनासक्ति है।" उनका जीवन बताता है कि बाहरी स्थायित्व क्षणिक है, पर आंतरिक स्थिरता शाश्वत। आज के उपभोक्तावादी युग में, जहाँ भौतिकता हावी है, दिगंबर विहार का संदेश प्रासंगिक है: सुख त्याग में है, संग्रह में नहीं।

दिगंबर साधु-साध्वियों का विहार जीवन की नश्वरता का बोध कराता है। आज का स्थान कल बदल जाएगा, आज का संबंध कल टूट सकता है। फिर मोह के बंधन क्यों? यह साधना मोह-माया से मुक्ति दिलाकर परम शांति की ओर ले जाती है। नग्न वेष में, पिच्छी हाथ में, नंगे पाँव धूल भरे रास्तों पर चलते साधु चलते-फिरते तीर्थ हैं। उनका मौन, संयम और सजगता मानवता को पुकारती है: स्थिरता के लिए स्थायित्व जरूरी नहीं। आचार्य विद्यासागर जी के शब्द हैं: "आत्मा का बोध ही सच्चा आश्रय है।" प्रमाणसागर जी ने स्पष्ट किया: "विहार में स्थिरता का रहस्य है—सब त्यागकर स्वयं को पाना।"

दिगंबर विहार का संदेश है कि शांति बाहरी खोज में नहीं, आंतरिक यात्रा में है। बाहरी स्थायित्व क्षणभंगुर, पर आंतरिक स्थिरता अनंत। साधु-साध्वियों का जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि सुख धन में नहीं, संयम और त्याग में है। उनका हर कदम चीखता है—बिना स्थायित्व के भी स्थिरता संभव है। यह परंपरा हमें आत्म-निरीक्षण का अवसर देती है: क्या हम इच्छाओं को सीमित कर सकते हैं? क्या अहिंसा को जीवन का आधार बना सकते हैं? क्या मोह त्यागकर स्थिरता पा सकते हैं? यह विहार केवल साधना नहीं, एक दर्शन और क्रांति है, जो मानवता को मुक्ति का मार्ग दिखाती है। इस संदेश को अपनाकर हम संसार की अस्थिरता से अडिग रह सकते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

संघ का शताब्दी वर्ष : संघ के योगदान पर एक दृष्टि

डॉ.बालमुकुंद पांडे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(संघ) एक सामाजिक, सांस्कृतिक, गैर-राजनीतिक एवं राष्ट्रवादी संगठन है जिसकी स्थापना सन् 1925 में महाराष्ट्र के नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने की थी। हेडगवार जी प्रारंभ में कांग्रेस से जुड़े नेता थे लेकिन कांग्रेस से वैचारिक मतभेदों की वजह से वह कांग्रेस पार्टी छोड़ दिए और "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ" की स्थापना किए थे। (माधव गोविंद वैध, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय, पृष्ठ, 11- 13)। संघ वैश्विक स्तर का सबसे बड़ा सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन है। इसका लक्ष्य भारत को अखंड सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में स्थापना है। संघ ने भारत की बुनियाद को मजबूत किया है। भारत की संप्रभुता की रक्षा किया है। कमजोर वर्गों को सशक्त बनाया है, और भारतीय सभ्यता के मूल्यों का उन्नयन किया है।

संघ निःस्वार्थ सेवा का जीवंत प्रतीक है। राष्ट्र का निर्माण व्यक्तियों के उत्तम एवं संगत चरित्र से होता है। संघ दैनिक शाखाओं एवं साप्ताहिक मिलन कार्यक्रमों से, एवं संकल्पित भावना से राष्ट्र- निर्माण में सहयोग करता है। समर्पित एवं आत्माप्रित भाव से समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्वयंसेवक काम कर रहे हैं। उनका मौलिक उद्देश्य भारत को परम वैभव, सर्वशक्तिमान एवं वैश्विक गुरु के तौर पर स्थापित करना है। शताब्दी वर्ष का यही संकेत है कि हिंदू समाज को संगठित करके, समाज में सज्जन शक्तियों का प्रसार करके, समाज को एकजुट करके, सभी व्यक्तियों में सदभाव व स्नेह का वातावरण उत्पन्न करके राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक गौरव का उन्नयन किया जा सके।

पंच परिवर्तन के द्वारा संघ समाज और व्यवस्था में परिवर्तन का संदेश देता है। सामाजिक समरसता में जाति के भेदभाव से ऊपर उठकर समाज की एकात्मकता पर बल दिया जाता है। सशक्त समाज के लिए जाति रूढ़ मानसिकता को तोड़ना होगा। परिवार-प्रबोधन को भारतीय जीवन का मूल आधार माना गया है। पर्यावरण संरक्षण के द्वारा प्रकृति और पर्यावरण के मध्य समन्वय स्थापित करके सतत विकास का रोडमैप तैयार किया जाता हैं । पर्यावरण संरक्षण भारत के संविधान के अंतर्गत मौलिक कर्तव्य की श्रेणी में है जो नागरिकों का मूल कर्तव्य है और इसकी प्रकृति नैतिक आधार की है। आत्मपरिष्कार एवं स्वाध्याय से प्रत्येक स्वयंसेवक को अपने भीतर अनुशासन एवं साधना का भाव जागृत करने की प्रेरणा मिलती है। राष्ट्रीय आत्मनिर्भर एवं एकात्मकता से समाज एवं राष्ट्र के प्रति सेवा ,समर्पण, एवं त्याग का भाव उत्पन्न हो सकेगा ।

भारत में भूकंप, बाढ़, चक्रवात, महामारी एवं अन्य प्राकृतिक आपदाएं आती रहती हैं, इन आपदाओं में स्वयंसेवकों ने राहत कार्यों में उल्लेखनीय योगदान दिए हैं। संघ के दूसरे सरसंघचालक आदरणीय माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य गुरूजी ने भारत विभाजन की क्रूर परिस्थितियों में अपने प्राणों की परवाह किए बिना कराची में मुस्लिम उन्मादियों के विरुद्ध हिंदुओं को संगठित किया था । 1947 - 48 में पाकिस्तान समर्थित कबायली हमलावरों ने तत्कालीन जम्मू - कश्मीर पर आक्रमण किया तो तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने महाराजा हरिसिंह जी को विलय के लिए सहमत करने के लिए दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य गुरूजी का सहयोग माँगा । गुरुजी ने श्रीनगर जाकर हरिसिंहजी को विलय के लिए राजी किया था । संघ के स्वयंसेवकों ने 1947- 48 के युद्ध के दौरान सेना की सहायता की थी । शरणार्थियों के लिए राहत कार्यों की व्यवस्था संभाली थी। दादरा एवं नगरहवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्त करने में स्वयंसेवकों ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। पुर्तगाली सैनिकों की गोलीबारी में कई स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया था ।

संघ ने सामाजिक समरसता को बढ़ाने में बहुत अधिक कार्य किया है। सामाजिक समरसता में संघ ने जाति भेदभाव से ऊपर उठकर समाज की एकात्मकता पर जोड़ दिया है। संघ के पंचम सर - संघचालक के .सी.सुदर्शन जी ने हिंदू समाज की कुरीतियों को समाप्त करने में अग्रणी भूमिका निभाए थे । वह सामाजिक कुरीतियों को विकास और सशक्त समाज के निर्माण में बाधा मानते थे। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में समाज के भूमिका को आवाहन किए थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समय-समय पर व्याख्यान ,कार्यशालाएं, सामाजिक समरसता को लेकर जन जागरण ,सेवा कार्यों को लेकर समाजिक एकता और सहयोग को प्रोत्साहित किए है। संघ का मूल उद्देश्य एक समरस ,संगठित, एवं सशक्त राष्ट्र- निर्माण में है जहां किसी व्यक्ति में उच्च - नीच का भेदभाव ना हो और सभी को समान अधिकार, सम्मान, एवं अवसर मिले। संघ के " पंच परिवर्तन" एवं विभिन्न कार्यक्रमों जैसे रक्षाबंधन , समरसता भोज सभी समाज में बंधुता, समभाव, एवं एकात्मकता के उन्नयन में सहयोगी है। सामाजिक एकता, समरसता, तथा राष्ट्र भावना के प्रत्यय को बढ़ाकर समाज के सभी वर्गों के समन्वय को उत्कृष्ट प्रयास किया है।

संघ ने राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पथ को नवीन आयाम एवं दिशा प्रदान किया है। अपने असाधारण कार्य क्षमता, विवेकी कौशल एवं रचनात्मक कार्यक्रमों से राष्ट्र की सेवा किया है। यह भारत माता के प्रति सच्ची भावना, व्यक्तिगत त्याग एवं उद्देश्य की स्पष्टता से भारतमाता को परम वैभवशाली बनाने में समर्पित रहे हैं। स्वयं शाखाओं के माध्यम से एवं अपने विवेकी कौशल से निरंतर कार्यकर्ताओं से संपर्क एवं संवाद करके राष्ट्र के लिए समर्पित रहते हैं। संघ सदैव श्रेष्ठकार्यपद्ति और बदलते समय के प्रति खुले दिमाग एवं मन से काम करना स्वयंसेवकों की ऊर्जा है। उनके विचारों में स्पष्टता ,कार्यों में भरपूर ऊर्जा एवं लक्ष्य के प्रति मजबूत संकल्प संघ की विशिष्ट विशेषता है।

शाखा संघ की आधारभूत संगठनात्मक इकाई है जो संघ को जमीनी स्तर पर जोड़ती है। शाखा वह कार्यस्थल है जहां संघ के स्वयंसेवकों को वैचारिक और शारीरिक रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। अधिकांश शाखाएं प्रत्येक दिन सुबह और शाम को चलाई जाती हैं। कुछ मंडलों एवं जिलों में साप्ताहिक मिलन के स्तर पर चलती हैं। भारत में 83000 से ज्यादा शाखाएं हैं। शाखा में शारीरिक व्यायाम एवं खेलों के साथ-साथ ' सामूहिक काम ' एवं ' नेतृत्व कौशल' से जुड़े काम होते हैं एवं ' आवागमन' (Marching) और आत्मरक्षा की तकनीक सिखाई जाती है। शाखाओं में स्वयंसेवकों को वैचारिक शिक्षा दी जाती है। शाखा में ही स्वयंसेवकों को हिंदुत्व, हिंदू राष्ट्रवाद एवं संघ के अन्य मौलिक सिद्धांतों के विषय में सिखाया जाता है।

संघ एक आत्मनिर्भर संगठन है और संघ अपने कार्यों के लिए बाहर से कोई पैसा नहीं लेता है, भले ही वह स्वेच्छा से दिया हो। संघ अपना खर्चा 'गुरुदक्षिणा' से पूरा करता है जो वर्ष में एक बार संघ के स्वयंसेवक "भगवाध्वज " को गुरु मानकर समर्पित करते हैं। स्वयंसेवक बहुत सी समाजसेवा की गतिविधियां करते हैं एवं उन्हें समाज से सहायता मिलती है। इन सामाजिक कार्यों के लिए स्वयंसेवकों ने ' न्यास ' बनाया है जो विधि के सीमाओं में रहकर पैसा एकत्रित करते हैं और संगठन के काम चलाते हैं। डॉ. मोहन भागवत जी के अनुसार संघ व्यक्तियों का एक समूह है।(body of individuals)। संघ के मुताबिक, 922 जिले 6597 खंड और 27720 मंडल में 83129 दैनिक शाखाएं हैं। प्रत्येक मंडल में 12 से 15 गांव शामिल है। संघ कई संगठनों का समूह है. इन संगठनों को संघ का " आनुषांगिक संगठन" कहा जाता है। इस पूरे समूह को संघ परिवार कहा जाता है।

संघ का स्वयंसेवक वैभव संपन्न भारत माता का सपना साकार होते देखना चाहता है। इस सपने को पूरा करने के लिए जिस दृष्टिकोण एवं कार्ययोजना पर कार्य की आवश्यकता है। संघ निरंतर इस कार्ययोजना एवं सम्मिलित दृष्टिकोण पर कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संगठन सचिव

संतुलित जीवनशैली से शरद ऋतु में रोग मुक्ति

विजय गर्ग

वर्षा ऋतु में शरीर में संचित दोष शरद ऋतु में प्रकट होने लगते हैं। सूर्य की प्रखर किरणें विशेष रूप से पित्त दोष की वृद्धि करते हैं, जिसके कारण पित्तजन्य रोग अधिक देखने को मिलते हैं। इस समय पीलिया, अम्लपित्त और अन्य पित्त वृद्धि संबंधी विकार सामान्य हो जाते हैं। त्वचा संबंधी रोग जैसे रिंगवोर्म, खाज, खुजली, फोड़े-फुंसी और मुंह व जीभ पर छाले भी इस ऋतु में बढ़ जाते हैं।

वर्षा ऋतु के उपरांत शरद ऋतु के आगमन से आकाश स्वच्छ हो जाता है और सूर्य की किरणें प्रखर होने लगती हैं। इससे प्रकृति का स्वरूप बदल जाता है। नदियों और तालाबों का जल निर्मल हो जाता है। भूमि पर छायी हरियाली और भी मनभावन लगती है। पूरे वातावरण में एक विशेष तरह की निर्मलता का संचार होता है। यह ऋतु मन और शरीर दोनों को संतुलित करने वाली मानी गई है। भारतीय सांस्कृतिक जीवन में नवरात्र, दुर्गा पूजा, दशहरा और दीपावली व शरद पूर्णिमा जैसे प्रमुख पर्व इस काल में आने से शरद ऋतु का अलग ही महत्व है। यह काल आनंद, पवित्रता और उल्लास का संदेश देता हैं। शरद ऋतु के पश्चात शीत काल का आगमन होता है। इस ऋतु के अन्त में सर्दी के मौसम की शुरुआत होती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से शरद ऋतु

वर्षा ऋतु में शरीर में संचित दोष शरद ऋतु में प्रकट होने लगते हैं। सूर्य की प्रखर किरणें विशेष रूप से पित्त दोष की वृद्धि करते हैं, जिसके कारण पित्तजन्य रोग अधिक देखने को मिलते हैं। इस समय पीलिया, अम्लपित्त और अन्य पित्त वृद्धि संबंधी विकार सामान्य हो जाते हैं। त्वचा संबंधी रोग जैसे रिंगवोर्म, खाज, खुजली, फोड़े-फुंसी और मुंह व जीभ पर छाले भी इस ऋतु में बढ़ जाते हैं। आंखों में जलन और लालिमा, सिरदर्द व शरीर में जलन जैसी परेशानियां अधिक होती हैं। इस समय पित्तदोष वृद्धि के कारण रक्तदोष संबंधी अन्य विकार और अपच की समस्या भी बढ़ने लगती है। इसलिए शरद ऋतु में आहार, दिनचर्या और जीवनशैली का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

आहार की भूमिका

इस ऋतु में आहार विशेष रूप से पित्तशमन और शरीर के संतुलन के लिए महत्वपूर्ण है। इस समय मधुर, शीतल और हल्के आहार का सेवन करना चाहिए। तिक्त द्रव्य जैसे नीम, करेला, परवल आदि पित्तशमन में सहायक होते हैं। अनाजों में जौ, गेहूं, चावल और दालों में मूंग जैसी दालें शरीर को पोषण और ऊर्जा प्रदान करती हैं। फल जैसे अनार, अंगूर मौसमी विशेष रूप से हितकारी माने गए हैं। इसके अतिरिक्त, दूध और घी का सेवन पित्त को शान्त कर शरीर को ठंडक और स्फूर्ति प्रदान करता है। संतुलित आहार से इस ऋतु में स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है और रोगों की संभावना कम होती है।

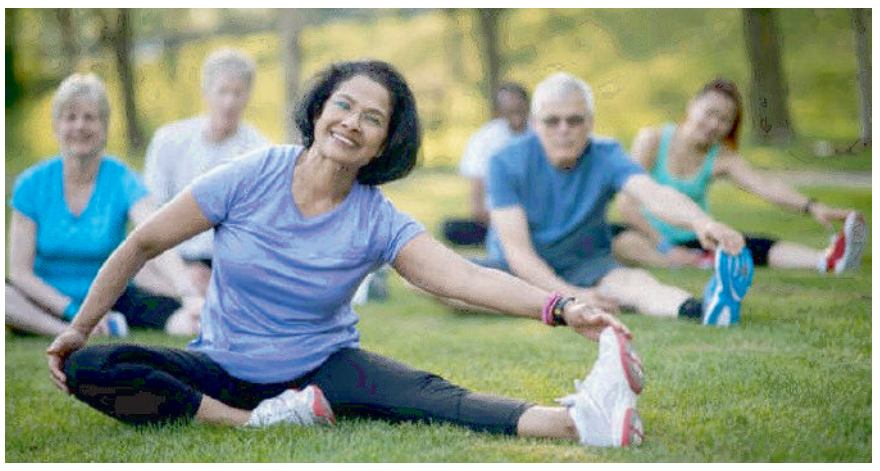

वस्त्र और दिनचर्या

इस ऋतु में स्वच्छ और हल्के वस्त्र धारण करने चाहिए। चंदन, शीतल वायु और पुष्पों की सुगंध का सेवन स्वास्थ्यवर्धक होता है। रात्रि में चंद्रमा की चांदनी का आनंद लेना और दिन में धूप से बचना उत्तम है। इन दिनों परिश्रम संयमित हो और नींद का उचित पालन हो, यही स्वास्थ्य का सूत्र है।

शोधन एवं चिकित्सा

शरद ऋतु में पित्त प्रकोप को नियंत्रित और शान्त करने के लिए शोधन उपक्रम अत्यंत प्रभावी होते हैं। इस समय विरेचन को विशेष रूप से श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि यह पित्त दोष को जड़ से बाहर निकालकर शरीर को संतुलित करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसके साथ ही तिक्त घृत और रक्तमोक्षण भी पित्त और रक्त संबंधित दोषों के निवारण में अत्यंत लाभकारी होते हैं। शीतल जल का सेवन शरीर को ठंडक और ताजगी प्रदान करता है। औषधियां जैसे चंदन, शतावरी और आंवला भी इस ऋतु में पित्त को शान्त करने और शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होते हैं। नियमित शोधन और औषधियों के प्रयोग से इस ऋतु में होने वाले पित्तजन्य रोगों की संभावना कम होती है।

गुणकारी निर्मल जल

इस ऋतु का जल विशेष गुणकारी होता है। अगर शरद ऋतु में आकाश से जल बरसता है तो जल तनु, स्वच्छ, पचने में हल्का होता है। इन दिनों का पानी कफ भी नहीं बढ़ाता है। सूर्य की किरणों और चंद्रमा की शीतलता से परिपक्व होकर यह जल निर्मल और जीवनदायी बनता है। इसे पाचन क्रिया और स्नान के लिए श्रेष्ठ माना गया है। आयुर्वेद में इसे अमृत के समान लाभकारी कहा गया है।

शरद ऋतु संबंधी महत्वपूर्ण बातें

ग्रीष्म और वसन्त ऋतु की ही तरह शरद ऋतु में भी दही का सेवन आयुर्वेद में निषिद्ध है। इन दिनों जड़ी-बूटियों को औषधि निर्माण के लिए एकत्रित करना होता है। उनके प्रयोज्य अंग विशिष्ट ऋतु में अपने गुणों के उत्कृष्ट भाव से युक्त होते हैं। शरद ऋतु में पौधों की छाल, कंद और क्षीर अपने चरम औषधीय गुणों पर होते हैं जो विभिन्न रोगों के उपचार में प्रभावशाली होते हैं। इसलिए इनको इस समय एकत्रित करना चाहिए। यह भी खास तौर पर जेहन में रखने काबिल बात है कि सभी ऋतुओं में अधिक मात्रा में जल न पीने का निर्देश है लेकिन ग्रीष्म और शरद दो ऐसी ऋतुएं हैं जिसमें इच्छा अनुसार जल पिया जा सकता है। शरद ऋतु हमें यह अवसर देती है कि हम उचित आहार, शोधन और संतुलित जीवनशैली से अपने शरीर को शुद्ध करें और रोगों से सुरक्षित रखें। यह ऋतु न केवल आनंद और उत्सव का प्रतीक है बल्कि स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक साधना का स्वर्णिम अवसर भी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

संयम की शक्ति : विजय गर्ग

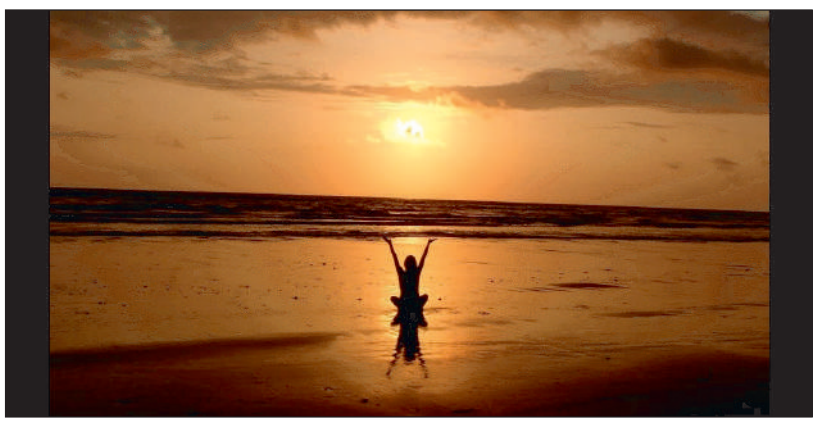

मानव जीवन का सबसे बड़ा रहस्य बाहर की परिस्थितियों में नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपा होता है। इस रहस्य का नाम है संयम । यह ऐसा गुण है जो साधारण व्यक्ति को भी असाधारण बना देता है। संयम केवल इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं, बल्कि मन, वाणी और कर्मों को सही दिशा देने की कला है। अगर विश्वास जीवन का आधार है, तो संयम उसकी दिशा है । मनुष्य के भीतर अपार ऊर्जा होती है। यही ऊर्जा कभी सृजन का साधन बनती है और कभी विनाश का कारण । जैसे नदी जब अपने किनारों में बहती है, तो जीवनदायिनी बनती है, लेकिन बाढ़ बनकर बहती है तो सब कुछ उजाड़ देती है । यही स्थिति मनुष्य की प्रवृत्तियों की भी है। अगर वे संयमित हों, तो सुख, शांति और सफलता लाती हैं और असंयमित हों तो दुख और अशांति । संयम का अर्थ इच्छाओं को दबाना नहीं है। यह आत्मसंयम की वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने भीतर उठने वाले विचारों और भावनाओं को उचित दिशा देता है। मसलन, क्रोध हर इंसान को आता है। अगर वह अनियंत्रित हो तो संबंध बिगाड़ देता है, लेकिन संयमित होकर अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति बन जाता है। इसी तरह वाणी पर संयम रखने वाला व्यक्ति कटुता के बजाय संवाद और समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है ।

आज की तेज-तर्रार दुनिया में संयम की आवश्यकता और बढ़ गई है। सोशल मीडिया के युग में लोग बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया दे बैठते हैं। इससे संबंधों में कड़वाहट और समाज तनाव फैलता है। अगर व्यक्ति बोलने से पहले ठहर जाए और सोच ले कि उसके शब्द किसी को चोट तो नहीं देंगे तो अनेक विवाद जन्म ही नहीं लेंगे। यह संयम की छोटी-सी आदत बड़े परिणाम ला सकती है। संयम का दूसरा आयाम है इंद्रिय संयम । भोग-विलास की प्रवृत्तियां मनुष्य को आकर्षित करती हैं। खाने-पीने में अति, मनोरंजन में अति या धन की लालसा जीवन का संतुलन बिगाड़ देती है । जो व्यक्ति मितव्ययी होकर जीना सीख लेता है और संसाधनों का संतुलित उपयोग करता है, वह दीर्घकालिक सुख और स्वास्थ्य पाता है । प्राचीन भारतीय संस्कृति में इसी कारण संयम को तपस्या कहा गया है।

संयम का एक रूप समय प्रबंधन में भी झलकता है। असंयमी व्यक्ति समय को गंवा देता है और पछताता है, जबकि संयमी व्यक्ति समय का महत्त्व समझकर हर पल का सदुपयोग करता है । इसलिए संयम को सफलता का मूल मंत्र माना गया है। मानव संबंधों में भी संयम अनिवार्य है। परिवार, मित्रता या दांपत्य जीवन- ये सब धैर्य और संयम पर टिके होते हैं। अगर व्यक्ति अपने स्वार्थ और क्रोध को संयमित न करे, तो रिश्ते टूट जाते हैं, लेकिन जब वह अहंकार पर नियंत्रण करता है तो रिश्ते मधुर बने रहते हैं। यहां संयम त्याग और समझदारी का दूसरा नाम है। संयम का जादू यह है कि यह धीरे-धीरे स्वभाव का हिस्सा बन जाता है। शुरुआत में यह अभ्यास जैसा लगता है, जैसे बोलने से पहले सोचना, गुस्से में प्रतिक्रिया न देना, खाने में मितव्ययिता या समय का नियमित उपयोग करना, लेकिन धीरे-धीरे यह सहज आदत बन जाता है। तब व्यक्ति की वाणी मधुर हो जाती है, विचार सकारात्मक और कर्म सृजनशील । यही परिवर्तन उसे भीतर से सशक्त करता है ।

संयम व्यक्तिगत ही नहीं, सामाजिक जीवन में भी आवश्यक है । छोटी घटनाओं पर हिंसा और विवाद इसी असंयम का परिणाम है। जबकि संयमित समाज में सहयोग, सहिष्णुता और सामंजस्य बढ़ता है । इसलिए संयम को सामाजिक मूल्य भी माना गया है। धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से संयम आध्यात्मिक यात्रा का प्रथम चरण है। योगशास्त्र में इसे विशेष महत्त्व दिया गया है। योगसूत्रों में संयम का उल्लेख यम और नियम के अंतर्गत है । संयम साधक को भीतर की शांति और आत्मज्ञान की ओर ले जाता है। ऋषि-मुनियों ने इसे आत्मा की शक्ति कहा है। इसे संभाल न पाने और टूट जाने के परिणाम हर जगह दिखते हैं। आवेश में लिए निर्णय जीवन भर का पछतावा दे जाते हैं। असंयमित जीवनशैली स्वास्थ्य बिगाड़ देती है । अनियंत्रित वाणी रिश्ते तोड़ देती है। जबकि संयमी व्यक्ति कठिनाइयों को अवसर में बदल देता है और दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है ।

यह भी सत्य है कि संयम का मार्ग आसान नहीं है । मन चंचल है, इंद्रियां आकर्षित करती हैं और परिस्थितियां उकसाती हैं, लेकिन यही चुनौती इसे मूल्यवान बनाती है। संयम धैर्य, अभ्यास और आत्म-जागरूकता से आता है । जब व्यक्ति यह समझ लेता है कि क्षणिक सुख के पीछे भागना आखिर दुख देगा, तब वह संयम अपनाता है। धीरे-धीरे यह उसकी स्थायी शक्ति बन जाता है। संयम का अर्थ जीवन को सीमाओं में बांधना नहीं, बल्कि उसे सशक्त और उद्देश्यपूर्ण बनाना है। जिस प्रकार वाद्ययंत्र की तारें ढीली हों तो उससे धुन नहीं निकलता और अत्यधिक कसी हों तो टूट जाती हैं, उसी प्रकार जीवन भी बिना संयम के या तो सुस्त हो जाता है या तनाव में टूट जाता है। यही वह संतुलन है जो मनुष्य को अपनी शक्ति से परिचित कराता है और उसे जीवन की सच्ची ऊंचाइयों तक ले जाता है। जो स्वयं पर विजय पा लेता है, वही संसार में सच्चा विजेता कहलाता है।

कहा जा सकता है कि संयम उपदेश का नहीं, अनुभव का विषय है। इसे शब्दों से नहीं, अभ्यास से समझा जा सकता है। संयमित जीवन जीना कठिन अवश्य है, पर असंभव नहीं। बोलने से पहले ठहरना, क्रोध पर काबू पाना और समय का सदुपयोग करना जैसी छोटी शुरुआत बड़े परिवर्तन लाती है। यही परिवर्तन जीवन को सशक्त, संतुलित और सार्थक बनाते हैं। संयम ही वह जादू है, जो साधारण मनुष्य को असाधारण बना देता है और स्वयं पर विजय दिलाता है, क्योंकि सबसे बड़ी जीत दूसरों पर नहीं, स्वयं पर होती है।

हरियाणा शिक्षक स्थानांतरण: नीति, प्रक्रिया और उलझन

(वित्त विभाग की मंजूरी, स्थानांतरण में देरी, दंपत्ति मामलों, मध्य-अवधि स्थानांतरण, ऑनलाइन प्रणाली, नई नियुक्तियाँ, प्रत्यायोजन और निष्पक्षता के बहाने।)

फाइनेंस विभाग से अतिरिक्त भत्ते की मंजूरी होने के बावजूद फ़ाइलों का बार-बार लंबित रहना कर्मचारियों में भ्रम पैदा करता है। दंपत्ति मामलों में पहले से चल रहे मामलों के बावजूद पुनः प्रक्रिया शुरू होना यह संकेत देता है कि नीति जानबूझकर जटिल बनाई जाती है, जिससे निर्णय बाधित हों। शिक्षा मंत्री ने कहा कि मध्य-अवधि स्थानांतरण का कोई प्रभाव नहीं होगा, लेकिन जमीन पर इसका असर नहीं दिखाई देता। इन सभी कारणों से शिक्षक असंतोष में हैं और वे चाहते हैं कि स्थानांतरण प्रक्रिया स्पष्ट, समयबद्ध और निष्पक्ष हो, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता और संतुलन बनाए रखा जा सके। शिक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया था कि मध्य-अवधि स्थानांतरण का कोई प्रभाव नहीं होगा, लेकिन वास्तविकता में प्रशासन इसे अक्सर बहाना बनाने के तरीके के रूप में इस्तेमाल करता है। केवल पारदर्शी, समयबद्ध और निष्पक्ष प्रक्रिया ही शिक्षक और छात्रों के हित में स्थिरता और गुणवत्ता सुनिश्चित कर सकती है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण और पदस्थापन की प्रक्रिया वर्षों से विवादों और असंतोष का कारण रही है। शिक्षक और कर्मचारी यह महसूस करते हैं कि नीतियाँ जितनी स्पष्ट घोषणाओं में दिखाई देती हैं, उतनी ही वास्तविकता में जटिल और उलझी हुई हैं। यह मामला केवल कर्मचारियों के हित का नहीं है, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की पारदर्शिता, निष्पक्षता और गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है। जब वित्त विभाग से किसी पद की स्वीकृति मिल जाती है, तब भी कई बार स्थानांतरण प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब हो जाता है। ऐसा बजट संबंधी बाधाओं, दस्तावेजी प्रक्रियाओं या प्रशासनिक स्तर पर बार- बार अनुमोदन की अनावश्यकता के कारण होता है। इस विलंब से केवल प्रक्रिया धीमी नहीं होती, बल्कि नीति के उचित और समय पर पालन में बाधा आती है। कर्मचारी महीनों तक अनिश्चितता में रहते हैं, जिससे उनका मनोबल गिरता है और शिक्षा प्रणाली की दक्षता प्रभावित होती है। दंपत्ति मामलों में, जहाँ शिक्षक अपने जीवनसाथी के साथ पदस्थापन चाहते हैं, पहले से लंबित मामलों के बावजूद पुनः जांच और अनुमोदन की प्रक्रिया शुरू कर दी जाती है। इससे कर्मचारी अनावश्यक असुविधा में पड़ते हैं और यह नीति की जटिलता को स्पष्ट करता है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि प्रशासन कई बार प्रक्रिया को जानबूझकर लंबा खींचता है।

स्थानांतरण रोकने वाले पक्षों की बात करें, तो इसमें कई स्तर शामिल हैं। लंबे समय से किसी स्थान पर तैनात कर्मचारी अपने स्थान से हटना नहीं चाहते। संघ और संगठन अपने सदस्यों के हित की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करते हैं। इसके अलावा, प्रशासन भी अनुभवी कर्मचारियों को संवेदनशील पदों पर लंबे समय तक बनाए रखना पसंद करता है। इन सभी कारकों के कारण स्थानांतरण प्रक्रिया अक्सर संतुलित और निष्पक्ष नहीं होती।

शिक्षा मंत्री ने प्रेस में कहा था कि मध्य-अवधि स्थानांतरण लागू होंगे, लेकिन वास्तविकता में इसका कोई प्रभाव नजर नहीं आता। यह विरोधाभास कर्मचारियों में भ्रम और असंतोष पैदा करता है। घोषणाओं और वास्तविक कार्यान्वयन के बीच यह अंतर यह संदेश देता है कि केवल बयानों से नीति लागू नहीं होती। अन्य विभागों में ऑनलाइन स्थानांतरण प्रणाली सहज रूप से लागू हो रही है, जबकि शिक्षा विभाग में यह प्रक्रिया धीमी और जटिल बनी हुई है। इसका कारण केवल तकनीकी कठिनाई नहीं है। प्रशासनिक प्रतिरोध, पारंपरिक कार्य संस्कृति और स्थानीय अधिकारियों की प्राथमिकताएँ इसमें योगदान करती हैं। जब तक सभी पक्ष पारदर्शिता और समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित नहीं करेंगे, ऑनलाइन प्रणाली प्रभावी नहीं हो सकती।

नई नियुक्तियों के समय पर्याप्त स्थान उपलब्ध होने के बावजूद स्थानांतरण में देरी होती है। इससे प्रश्न उठता है कि क्या कर्मचारियों को जानबूझकर दूर भेजा जा रहा है या कुछ को सुविधा दी जा रही है। आने वाले वर्ष में जनगणना के कारण स्थानांतरण न होने की संभावना इस प्रश्न को और गंभीर बना देती है। प्रत्यायोजन की प्रथा भी समस्या बनी हुई है। इसके तहत अपने कर्मचारियों को विशेष पदों या स्थानों पर समायोजित किया जाता है। यह न केवल पारदर्शिता और निष्पक्षता पर प्रश्न उठाता है, बल्कि पक्षपात और प्रशासनिक भेदभाव को भी बढ़ावा देता है। यदि समय रहते इसे रोका और सुधारात्मक कदम उठाए जाएँ, तो शिक्षक और विभाग दोनों को लाभ होगा।

इन सभी जटिलताओं के बावजूद शिक्षक समुदाय चाहता है कि नीति स्पष्ट, समयबद्ध और निष्पक्ष हो। केवल घोषणाओं और प्रेस विज्ञप्तियों से समाधान नहीं होगा। आवश्यकता है कि प्रशासन ऑनलाइन प्रणाली को प्रभावी बनाए, पक्षपात और व्यक्तिगत लाभ पर आधारित निर्णयों को रोके। शिक्षक और छात्र यह विश्वास रखें कि स्थानांतरण प्रक्रिया शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और संतुलन बनाए रखने के लिए है, न कि किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए। हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण नीति केवल जटिल और उलझी हुई नहीं है, बल्कि इसका कार्यान्वयन भी संतुलित और निष्पक्ष नहीं है। प्रशासनिक देरी, अनावश्यक अनुमोदन, पक्षपात और तकनीकी बाधाओं के कारण शिक्षक असंतोष में हैं। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सरकार को चाहिए कि वह स्पष्ट नियमावली और नीति लागू करे, समयबद्ध और पारदर्शी प्रक्रिया सुनिश्चित करे, ऑनलाइन प्रणाली को प्रभावी बनाए, और पक्षपात तथा व्यक्तिगत लाभ पर आधारित निर्णयों को रोके। तभी शिक्षक अपने कार्य में संतुष्ट रह पाएँगे और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सकेगी। अन्यथा यह प्रक्रिया केवल विवाद, असंतोष और भ्रम का स्रोत बनी रहेगी। हरियाणा सरकार के सामने यह चुनौती है कि वह शिक्षक स्थानांतरण प्रक्रिया में स्थिरता, न्याय और पारदर्शिता सुनिश्चित करे। तभी शिक्षा प्रणाली का वास्तविक उद्देश्य – गुणवत्ता, संतुलन और विद्यार्थियों के हित – पूरा हो सकेगा।

हरियाणा में शिक्षक स्थानांतरण नीति केवल जटिल और उलझी हुई नहीं है, बल्कि इसका कार्यान्वयन भी संतुलित और निष्पक्ष नहीं है। वित्त विभाग से अनुमोदन मिलने के बावजूद विलंब, दंपत्ति मामलों में पुनः प्रक्रिया, और प्रत्यायोजन के माध्यम से पक्षपात जैसी समस्याएँ लगातार बनी हुई हैं। शिक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया था कि मध्य-अवधि स्थानांतरण का कोई प्रभाव नहीं होगा, लेकिन वास्तविकता में प्रशासन इसे अक्सर बहाना बनाने के तरीके के रूप में इस्तेमाल करता है। केवल पारदर्शी, समयबद्ध और निष्पक्ष प्रक्रिया ही शिक्षक और छात्रों के हित में स्थिरता और गुणवत्ता सुनिश्चित कर सकती है।

महिलाओं की सेहत के समांतर जोखिम

विजय गर्ग

आधुनिक जीवनशैली की भाग-दौड़ में महिलाएं अपनी जरूरत या सुविधा के लिए कई बार ऐसे निर्णय लेती हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए घातक साबित हो सकते हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य का मतलब उनका संपूर्ण हित है। यह हमारे समाज की भी नैतिक जिम्मेदारी है कि महिलाओं को सुरक्षित और स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान की जाए। कुछ समय पहले दिल्ली में एक युवती की असामयिक मृत्यु ने एक बार फिर हमारे सामने महिलाओं के स्वास्थ्य और दवाओं के अनियंत्रित उपयोग की गंभीर समस्या को उजागर किया है। । इस युवती की मृत्यु इसलिए हो गई, क्योंकि उसने बिना चिकित्सीय सलाह के हार्मोन दवाओं का सेवन किया था, जिससे उसे 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' (डीवीटी) की समस्या हो गई थी। यह घटना न केवल दवाओं के दुरुपयोग की समस्या को दर्शाती है, बल्कि महिला स्वास्थ्य के प्रति हमारे माज की उदासीनता को भी उजागर करती है।

यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि जागरूकता के अभाव में कई महिलाएं अपनी किसी बीमारी का इलाज समय पर नहीं करा पातीं और उसका खमियाजा या तो वे लंबे समय तक उठाती या फिर शरीर में कोई जटिल रोग बैठ जाता है, जो उनके सहज जीवन को बाधित कर देता है। दिल्ली में जिस । युवती की 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' से मौत हुई, उसके मामले में भी कुछ इसी तरह की जटिलता कारण बनी यह ऐसी गंभीर बीमारी है, जिसमें शरीर की गहरी नसों में रक्त के थक्के बन जाते हैं। चिकित्सकों ने जब इस मामले में गहन जांच की तो पता चला कि रक्त का थक्का नाभि तक फैल गया था। यह घटना हमारे समाज की उस मानसिकता को दर्शाती है, जहां महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया जाता। 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' की पहचान करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके लक्षण अक्सर सूक्ष्म होते हैं। पैरों में सूजन, तेज दर्द, गर्माहट की अनुभूति और त्वचा का लाल या नीला पड़ना इसके प्रमुख संकेत हैं। अगर समय पर इलाज न कराया जाए तो ये थक्के फेफड़ों तक पहुंच जाते जाते हैं जिसे 'पल्मोनरी एम्बोलिज्म' कहा जाता है और यह समस्या अक्सर जानलेवा साबित होती है। ऐसे में चिकित्सकों से उम्मीद की जाती है कि वे मरीजों को विभिन्न दवाओं के संभावित दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दें और यह भी समझाएं कि किन स्थितियों में तत्काल चिकित्सीय सहायता लेनी चाहिए।

इस मामले में अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में सामने आए आंकड़े अत्यंत चिंताजनक हैं। हार्मोन से संबंधित गर्भनिरोधक दवाओं का उपयोग करने वाली महिलाओं में 'वेनस थ्रोम्बोएम्बोलिज्म' का खतरा सामान्य महिलाओं की तुलना में दो से छह गुना तक बढ़ जाता है। सामान्य परिस्थितियों में प्रति एक लाख महिलाओं में से केवल पांच से दस महिलाएं ही प्राकृतिक रूप से इस बीमारी की शिकार होती हैं, लेकिन दूसरी पीढ़ी की हार्मोन से जुड़ी दवाओं के उपयोग से यह जोखिम तीन-चार गुना और तीसरी पीढ़ी की दवाओं से छह से आठ गुना तक बढ़ जाता है। अमेरिकन कालेज आफ आब्स्टेट्रिशियन एंड गायनेकोलाजिस्ट्स के अध्ययन के अनुसार, जो महिलाएं छह महीने तक लगातार हार्मोन से जुड़ी दवाओं का उपयोग करती हैं, उनमें डीवीटी, पक्षाघात और दिल के दौरे का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। खासकर उपयोग के पहले वर्ष में यह जोखिम सबसे अधिक होता है।

भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़े कुछ जरूरी

विषयों पर अभी भी खुली चर्चा नहीं होती। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, देश में अधिकांश महिलाएं बिना किसी चिकित्सीय सलाह के अपने प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी दवाओं का सेवन करती हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि हार्मोन से संबंधित दवाओं का गलत उपयोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। सामाजिक दबाव, शर्म और अज्ञानता के कारण महिलाएं अक्सर अपनी समस्याओं को छिपाती हैं और बिना चिकित्सक की सलाह के दवाओं का सेवन करती हैं। विशेष अवसरों, यात्राओं या परीक्षाओं के दौरान माहवारी या अपनी सेहत से जुड़ी असुविधा से बचने के लिए वे ऐसी दवाओं का सहारा लेती हैं, जो अत्यंत खतरनाक है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुसार, एस्ट्रोजन युक्त गर्भनिरोधक दवाओं का उपयोग करने वाली महिलाओं को नियमित चिकित्सीय जांच कराते रहना चाहिए। विशेष रूप से पैंतीस वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं, धूम्रपान करने वाली महिलाओं, उच्च रक्तचाप की समस्या एवं मोटापे से ग्रस्त महिलाओं और जिनके पारिवारिक इतिहास में रक्त का थक्का बनने की समस्या है, उनके लिए यह जोखिम और भी अधिक बढ़ जाता है। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि हार्मोन से संबंधित दवाओं का उपयोग केवल चिकित्सीय निगरानी में ही किया जाना चाहिए। * अमेरिकन कालेज आफ आब्स्टेट्रिशियन एंड गायनेकोलाजिस्ट्स' के मुताबिक, मासिक धर्म का दमन चिकित्सीय निगरानी में सुरक्षित हो सकता है, लेकिन यह आवश्यक है कि महिलाएं अपने चिकित्सक से संपूर्ण जानकारी साझा करें और नियमित जांच कराती रहें।

कई बार कुछ घटनाएं एक व्यापक समाज के लिए सबक का काम करती हैं। सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि महिलाओं की सेहत से जुड़ी समस्याओं पर ईमानदारी से चर्चा नहीं करने से महिलाओं सहित समूचे समाज की समस्या और ज्यादा जटिल ही होगी। परिवारों को यह समझना होगा कि महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने कि पुरुषों के देर से इलाज कराने या डाक्टर की सलाह को नजरअंदाज करने से जीवन को खतरा हो सकता है। माता- पिता और परिवारजनों को महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। शर्म या झिझक के कारण इलाज में देरी करना जानलेवा साबित हो सकता है। हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था को महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। दवा की दुकानों में बिना चिकित्सक की सलाह के हार्मोन से संबंधित दवाओं की बिक्री पर सख्त नियंत्रण होना चाहिए। दवा विक्रेताओं को ऐसी दवाओं के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और उन्हें ग्राहकों को चिकित्सीय सलाह लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

महिलाओं को हार्मोन से संबंधित दवाओं के सही उपयोग और संभावित जोखिमों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है। चिकित्सकों को ऐसी दवाओं के नवीनतम दुष्प्रभावों के बारे में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे मरीजों को सही सलाह दे सकें। दूसरी ओर, महिलाओं को भी अपनी सेहत को लेकर जागरूक होने की जरूरत है, ताकि वे अगर किसी दवा का सेवन करती हैं, तो रक्तचाप, रक्त थक्का बनने की प्रवृत्ति और अन्य महत्त्वपूर्ण मानकों की जांच कराना जरूरी मानें पैरों में असामान्य सूजन, दर्द, गर्माहट या त्वचा के रंग में परिवर्तन जैसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। इन लक्षणों के दिखने पर तुरंत चिकित्सकीय सहायता लेनी चाहिए। हालांकि इस समस्या का समाधान केवल चिकित्सा जगत की जिम्मेदारी नहीं है। समाज के प्रत्येक स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी। परिवारों को महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील बनना होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

वीरांगना रानी दुर्गावती: निडरता और नेतृत्व का आदर्श

हर युग में कुछ व्यक्तित्व अपनी वीरता, साहस और बलिदान से इतिहास के पन्नों को अमर कर देते हैं। ऐसी ही एक प्रेरक शख्सियत हैं गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती, जिनका नाम भारत के स्वर्णिम इतिहास में चमकता है। हर साल 5 अक्टूबर को उनकी जयंती न केवल उनके जन्म का उत्सव है, बल्कि उन आदर्शों का स्मरण भी है, जो उन्होंने जीवन भर जिए—नन्हा साहस, अटल न्याय, प्रबल देशभक्ति और निःस्वार्थ नेतृत्व। रानी दुर्गावती की गाथा केवल एक योद्धा रानी की कहानी नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा है, जो आज भी हर भारतीय, विशेषकर महिलाओं और युवाओं को, अपने कर्तव्यों के प्रति दृढ़ता और आदर्शों के लिए प्रेरित करती है।

5 अक्टूबर 1524 को, दुर्गाष्टमी के पवित्र दिन, उत्तर प्रदेश के कालिंजर किले में चंदेल राजवंश के राजा कीर्ति सिंह की पुत्री के रूप में रानी दुर्गावती का जन्म हुआ। उनके नामकरण में ही उनके व्यक्तित्व की झलक थी—दुर्गावती, अर्थात शक्ति और साहस की प्रतीक। बचपन से ही उनमें असाधारण बुद्धिमत्ता, साहस और नेतृत्व के गुण स्पष्ट थे। परंपरागत राजकन्या की शिक्षा के साथ-साथ उन्हें युद्धकला, शस्त्र संचालन, घुड़सवारी और शासन प्रबंधन में भी निपुण बनाया गया। उस युग में, जब महिलाओं को युद्ध और शासन से दूर रखा जाता था, दुर्गावती ने रूढ़ियों को तोड़कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उनके पिता ने उन्हें स्वतंत्रता और साहस के साथ पाला, जिसने उन्हें न केवल अपने परिवार, बल्कि अपने राज्य और प्रजा के प्रति समर्पित एक योद्धा और शासक बनाया।

गोंडवाना के राजा दलपत शाह से विवाह के बाद रानी दुर्गावती ने इस समृद्ध और रणनीतिक राज्य की बागडोर संभाली। गोंडवाना, जो वर्तमान मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में फैला था, अपनी प्राकृतिक संपदा और सामरिक महत्व के कारण कई साम्राज्यों की नजरों में था। दुर्गावती ने अपने पति के साथ मिलकर प्रजा की भलाई और सुरक्षा को प्राथमिकता दी। दलपत शाह की असामयिक मृत्यु के बाद, उन्होंने अपने नाबालिग पुत्र वीर नारायण के संरक्षक के रूप में शासन की कमान संभाली। एक महिला शासक के रूप में, उन्होंने न केवल राज्य की रक्षा की, बल्कि इसे समृद्ध, संगठित और न्यायपूर्ण बनाया। उनकी नीतियाँ प्रजा-केंद्रित थीं, जिनमें शिक्षा, व्यापार और सुरक्षा को विशेष महत्व दिया गया। उनके शासन में सभी को समानता और न्याय प्राप्त था, जो उस युग के लिए एक क्रांतिकारी कदम था।

रानी दुर्गावती की वीरता का सबसे प्रखर प्रमाण उनका मुगल साम्राज्य के खिलाफ अदम्य साहस है। 16वीं सदी में, जब सम्राट अकबर का साम्राज्य अपनी चरम शक्ति पर था, गोंडवाना उनकी नजरों में था। रानी दुर्गावती ने इस खतरे को भाँपकर अपने राज्य की रक्षा के लिए कड़ा संकल्प लिया। उन्होंने अपनी सेना को संगठित किया, रणनीतियाँ बनाईं और स्वयं युद्धभूमि में उतरीं। उनकी वीरता और नेतृत्व ने मुगल सेनाओं को कड़ी चुनौती दी। युद्ध के मैदान में उनकी शौर्यगाथा ने न केवल उनके सैनिकों, बल्कि समस्त भारतवासियों के लिए एक प्रेरणा स्थापित की।

सन् 1564 का युद्ध रानी दुर्गावती के जीवन का वह स्वर्णिम अध्याय है, जो उनकी वीरता और स्वाभिमान को अमर बनाता है। मुगल सेनापति आसफ खान के नेतृत्व में विशाल मुगल सेना ने गोंडवाना पर आक्रमण किया। इस भयंकर चुनौती के सामने रानी दुर्गावती ने अपने पुत्र वीर नारायण, सेनापतियों और प्रजा के साथ मिलकर अदम्य साहस का परिचय दिया। उनकी तीक्ष्ण युद्धरणनीति और अटल संकल्प ने मुगल सेना को बार-बार पीछे हटने पर मजबूर किया। युद्ध के मैदान में, घायल होने के बावजूद, रानी ने हार नहीं मानी। जब विजय की संभावना क्षीण हो गई, तब भी उन्होंने अपने सम्मान और गोंडवाना की स्वतंत्रता को सर्वोपरि रखा। स्वयं अपने प्राणों की आहुति देकर, उन्होंने न केवल अपने स्वाभिमान की रक्षा की, बल्कि प्रजा के प्रति अपनी निष्ठा और देशभक्ति का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया। यह बलिदान केवल युद्ध का परिणाम नहीं, बल्कि साहस, सम्मान और प्रेम की अमर कहानी है।

रानी दुर्गावती केवल एक योद्धा नहीं थीं; वे एक दूरदर्शी शासक, ममतामयी माँ और समाज सुधारक भी थीं। उनके शासनकाल में गोंडवाना शिक्षा, व्यापार और कला का केंद्र बना। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनके राज्य में हर वर्ग को समानता और सम्मान मिले। उनकी नीतियाँ न केवल प्रजा-केंद्रित थीं, बल्कि समय से आगे थीं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि साहस और नेतृत्व लैंगिक सीमाओं से परे हैं। रानी दुर्गावती का शासन आज भी नेतृत्व और शासन प्रबंधन के क्षेत्र में एक प्रेरणादायी मॉडल है, जो हमें निःस्वार्थ सेवा और समावेशी विकास का पाठ पढ़ाता है।

हर साल 5 अक्टूबर को मनाई जाने वाली रानी दुर्गावती की जयंती केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि साहस, बलिदान और नेतृत्व का जीवंत उत्सव है। यह दिन हमें उनके आदर्शों को आत्मसात करने और उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। आज के दौर में, जब लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे वैश्विक चर्चा का हिस्सा हैं, रानी दुर्गावती का जीवन एक सशक्त उदाहरण है कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियाँ हासिल कर सकती हैं। उनकी गाथा हमें सिखाती है कि कठिनतम परिस्थितियों में भी साहस और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना ही सच्चा नेतृत्व है।

रानी दुर्गावती की स्मृति को संजोए रखने हेतु मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में उनके नाम पर विद्यालय, महाविद्यालय और स्मारक स्थापित किए गए हैं। उनकी जयंती पर आयोजित सांस्कृतिक आयोजन, युद्धपुनरावृत्ति और शैक्षिक कार्यक्रम नई पीढ़ी को उनके साहस और बलिदान से परिचित कराते हैं। विद्यालयों में उनकी कथाएँ पढ़ाई जाती हैं, ताकि बच्चे और युवा उनके आदर्शों से प्रेरित हों। उनकी विरासत केवल गोंडवाना तक सीमित नहीं, बल्कि यह समस्त भारतवासियों के लिए एक अनमोल धरोहर है।

रानी दुर्गावती का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो निःस्वार्थ भाव से प्रजा की भलाई और देश के सम्मान के लिए समर्पित हो। उनकी कहानी यह विश्वास जगाती है कि कोई भी चुनौती इतनी बड़ी नहीं, जिसे साहस, दृढ़ निश्चय और सही मूल्यों के साथ पार न किया जा सके। उनकी जयंती हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम उनके आदर्शों को अपनाएँगे और अपने देश व समाज के लिए सकारात्मक योगदान देंगे। रानी दुर्गावती की जयंती पर उनकी अमर गाथा को नमन करते हुए, हमें उनके साहस, बलिदान और नेतृत्व से प्रेरणा लेकर अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित होने का प्रण लेना चाहिए। उनकी स्मृति हमें याद दिलाती है कि सच्ची वीरता और देशभक्ति समय की सीमाओं को लाँघकर हर युग में प्रासंगिक रहती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन व सम्मान समारोह 7 अक्टूबर को

डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद द्वारा आगामी 7 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2025 का भव्य आयोजन उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद स्थित कस्बा मोहम्मदी में किया जाएगा।

संस्था के अध्यक्ष गोविंद गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कृष्णा राज, पूर्व कृषि राज्य मंत्री; लोकेंद्र प्रताप सिंह, सभापति (राज्यमंत्री), पंचायती राज समिति उत्तर प्रदेश; संदीप मेहरोत्रा, चेयरमैन नगर पालिका परिषद मोहम्मदी तथा रिंकू शुक्ला, चेयरमैन छोटी काशी मौजूद रहेंगे। उन्होंने बताया कि

इस वर्ष का यह आयोजन कथाकुंज के संरक्षक प्रो. सुदीप कुमार की स्मृति को समर्पित है। उनकी धर्मपत्नी नीमा पंत, जो संस्था की ब्रांड एंबेसडर हैं, इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहेंगी। सम्मेलन में

देश-विदेश की 21 प्रतिष्ठित शख्सियतों को केतकी साहित्य रत्न सम्मान 2025 (महिला वर्ग) और गोमती साहित्य रत्न सम्मान 2025 (पुरुष वर्ग) से सम्मानित किया जाएगा। चयनित सम्मानितों में शामिल हैं—

राधा गुप्ता 'राधिका', मीनू वर्मा, आरती झा, डॉ. सुरभि सिंह, डॉ. रीमा सिन्हा, रंजना डोगरा, संध्या त्रिपाठी, शिप्रा ज्ञानेंद्र सिंह, शालिनी ओझा, मीनू कुमार, सारिका सरल, इति शिवहरे, आकृति विज्ञा अर्पण, रानी गुप्ता, सुरभि सिंह, श्वेता सुरभि, रीमा सिन्हा, प्रीतम झा, के. पी. सिंह, नीरज वर्मा, विकास मिश्र, पंकज शर्मा, मणि अग्रवाल, तथा विदेश से — वर्जिनिया (अमेरिका) की मंजू श्रीवास्तव और केन्या की अंजली बजाज। श्री गुप्ता ने बताया गत तीन वर्षों में पचास से अधिक साहित्यकारों को इन प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाज़ा जा चुका है। यह सम्मान नवोदित से लेकर वरिष्ठ तक सभी स्तर के रचनाकारों को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाता है। कार्यक्रम के आयोजक एवं संस्था के संस्थापक, वरिष्ठ समाजसेवी कवि गोविंद गुप्ता ने बताया कि समारोह की सभी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं और इस आयोजन को लेकर साहित्यिक जगत में गहरी उत्सुकता है।

एक सीख - शिक्षाप्रद संवाद ... सूरज चाचा इतने पावरफुल है

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

भोर की इस सुहानी लालिमा में उदित्य हो रहें थे सूरज। मां बच्चों को बिस्तर से उठा रही होती है। तभी दादा जी आते हैं, वह कहते हैं बहूं बब्लू व पिंकी अभी तक नहीं उठे। सुबह हो गई है सूरज सिर पे आ गया है और तो उन्हें स्कूल भी जाना है फिर।

बाबू जी उन्हें ही उठा रहीं हूं। मां बच्चों के सिर पर हाथ फेरतीं है, और कहती हैं उठों लाल दादा जी सुबह सैर कर के घर आ गए हैं। तुम्हें बुला रहे हैं, दादा जी का नाम सुनते ही दोनों बच्चों की नींद खुल गई। और वहां दादा जी के पास जाकर प्रणाम करते हैं और कहते हैं दादा जी आप इतनी जल्दी क्यों उठ जाते हो। बच्चों में इस लिए जल्दी सुबह उठता हूं कि मुझे सुबह की शुद्ध हवा और सूरज देवता की वह लालिमा से उत्पन्न उन किरणों को में अपने शरीर पर ले सकूं। सूरज के सुबह के प्रकाश से तन-मन स्वस्थ और शरीर की काया निरोगी रहे। सूरज की इन किरणों से सुबह सुबह अमृत बरसता है बच्चों। यह हमारे लिए बहुउपयोगी है। बच्चे बोलते हैं दादा यह तो हमें

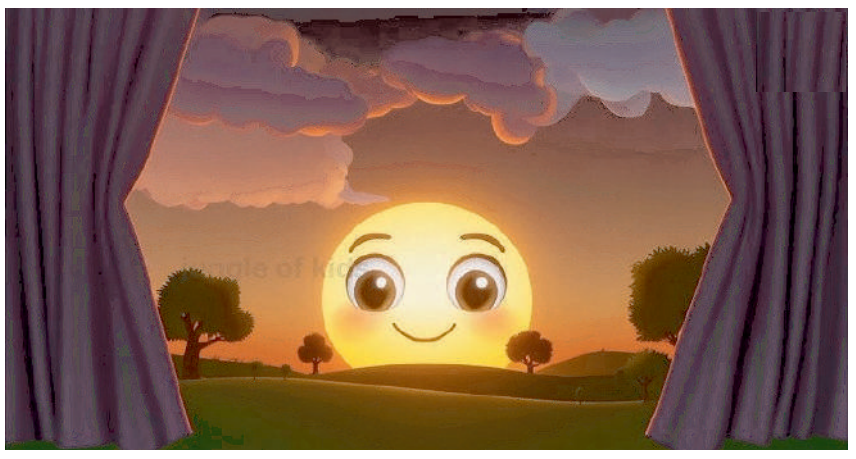

मालूम ही नहीं था कि सूरज चाचा इतने पावरफुल है। जो हमें शक्ति व निरोगी काया भी देते हैं। अरे बच्चों सूरज देवता को हम रोज सुबह नहा-धोकर एक लोटा जल चढ़ाएं तो वह हमें ज्ञान व बुद्धि के साथ साथ शक्ति भी हमें देते हैं। इसलिए हमें सुबह जल्दी उठना चाहिए और सूरज की इस लालिमा का आनंद लेना चाहिए।

पंजाब की तरक्की में सहयोग करने की बजाय पंजाब के दुश्मनों वाली भूमिका निभा रही हैं विपक्षी पार्टियां-मुख्यमंत्री

परिवहन विशेष न्यूज

लेहरा (संगरूर), (जगसीर लोगोंवाल)- पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज विपक्षी पक्ष की ओर से अपने निजी राजीनीति हितों के लिए प्रदेश की तरक्की में रुकावटें पैदा करने की सख्त आलोचना की है।

मुख्यमंत्री ने आज यहां कई विकास प्रोजेक्टों को समर्पित करने के बाद एकत्र लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि विपक्षी पार्टियों के नेताओं ने पंजाब और पंजाबियों के प्रति संकीर्ण सोच रखी हुई है। विपक्षी पक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता बौखलाहट में आकर सरकार को बदनाम करने की बेतुकी कोशिशें कर रहे हैं लेकिन किसी भी मुद्दे की घाट के कारण बुरी तरह असफल रहे हैं।

भगवंत सिंह मान ने कहा कि विपक्षी पक्ष के नेता चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री रिहायश पर वापसी के लिए नजरें गाड़े बैठे हैं, लेकिन उनकी किस्मत रूठी हुई है क्योंकि उन्होंने सत्ता में रहते हुए लोगों की इच्छाओं को लगातार नजरअंदाज किया। एक कलाकार के तौर पर विपक्षी नेता की रैलियों में शामिल होने के पुराने दिनों को याद करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वह उनके बुरे कामों से अच्छी तरह से परिचित हैं और अब उनके पिछले पापों का पर्दाफाश करके लोगों आगे सच्चाई का खुलासा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सूझवान लोग पहले ही इनराजनीतिक नेताओं को इनके गुनाहों के लिए बाहर का रास्ता दिखा चुके हैं और वह उन्हें कभी माफ नहीं करेंगे। भगवंत सिंह मान ने स्पष्ट तौर पर कहा कि इन नेताओं ने प्रदेश और इसके लोगों की पीठ में छुरा घोंपा है और अब वह अपने पापों की कीमत चुका रहे हैं।

अपनी सरकार की प्राप्तियों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि नौजवानों को सरकारी नौकरियां निरोल मेरिट के आधार पर दी गई हैं जिससे विदेश जाने के रुझान को नकेल पड़ी है और नौजवान पीढ़ी में नई उम्मीद जगी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पंजाब बरकत वाली धरती है। उन्होंने आगे कहा कि सरकार लोगों के लंबे समय से लटक रहे मसलों को हल कर रही है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब सरकार प्रदेश की तरक्की और विकास और इसके लोगों की

खुशहाली के लिए अथक मेहनत कर रही है।

शिक्षा के प्रति अपनी वचनबद्धता जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री ने ग्रामीण नौजवानों के लिए बुनियादी शिक्षा यकीनी बनाने के लिए गांवों में नई लाइब्रेरियां और कॉलेज स्थापित करने का ऐलान किया। मुख्यमंत्री ने कहा, ₹मैं अब लोगों के प्यार का कर्ज चुक रहा हूं।₹ भगवंत सिंह मान ने अनुसूचित जाति भाईचारों, खेत मजदूरों और अन्य वर्गों के लिए शुरू की गईं कई भलाई योजनाओं के बारे में और जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि राज्य सरकार ने 4,150.42 करोड़ रुपए की लागत से राज्य में 19,491.56 किलोमीटर ग्रामीण लिंक सड़कों की मुरम्मत और अपग्रेड करने का व्यापक प्रोजेक्ट शुरू किया है। उन्होंने कहा कि इस अभियान का मुख्य उदेश्य लोगों को सुविधाएं प्रदान करना है क्योंकि ये लिंक सड़कें सुचारू यातायात को यकीनी बनाने में बेहद सहायक होता हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि ये लिंक सड़कें राज्य में आर्थिक विकास का केंद्र हैं क्योंकि ये एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को आने-जाने में मदद करती हैं और दूसरी तरफ व्यापार और कारोबार को प्रोत्साहन देती हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने पंजाब मंडी बोर्ड और लोक निर्माण विभाग को काम की गुणवत्ता को यकीनी बनाने के साथ-साथ ये यकीनी बनाने के लिए कहा है कि इस प्रोजेक्ट के लिए निर्धारित हर पैसे की जायज ढंग से वर्तनी की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सड़क सुरक्षा फोर्स (एस.एस.एफ.) की शुरुआत से पंजाब में सड़क हादसों में मौत दर 48-49 प्रतिशत घट गई है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने प्रदेश सरकार के इस प्रयास की प्रशंसा की है और दूसरे राज्यों को इस मॉडल को दोहराने की अपील की है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से की गई अपनी किस्म की ये पहली पहल प्रदेश के इतिहास में एक मील पत्थर है।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने लेहरा में पंजाब स्टेट पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (पी.एस.पी.सी.एल.) के नए कार्यालय कॉम्प्लेक्स का नींव पत्थर रखा। उन्होंने कहा कि इस कॉम्प्लेक्स में 10,000 वर्ग फुट का बिल्ट-अप एरिया होगा और ये 2.34 एकड़ जमीन में फैला होगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस कॉम्प्लेक्स की कुल लागत 4.69 करोड़ रुपए होगी और ये प्रोजेक्ट 18 महीनों के अंदर पूरा होने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कॉम्प्लेक्स में दो सब-डिविजनल कार्यालय (शहरी लेहरागगा और ग्रामीण लेहरागगा) और एक शिकायत केंद्र होगा, जिसका उदेश्य स्थानीय निवासियों को बेहतर सेवाएं प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि एक पी.एस.पी.सी.एल. कार्यालय बहुत पुरानी इमारत से चलाया जाता था और दूसरा किराए की इमारत से चलता था जिस कारण सार्वजनिक सेवाओं और प्रशासकीय काम में काफी मुश्किलें आती थी। भगवंत सिंह मान ने कहा कि अब लोग एक ही छत के नीचे बिजली से संबंधित कई सेवाओं तक पहुंच कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार हर घर को 600 यूनिट मुफ्त बिजली प्रदान कर रही है, जिससे राज्य के लगभग 90 फीसद परिवारों को लाभ हो रहा है जो अब जीरो बिजली बिल प्राप्त कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब ने गोइंदवाल पावर प्लांट खरीदकर इतिहास रच दिया है, जो पहले निजी कंपनी जी.वी.के. पावर की मलकीयत था। उन्होंने कहा कि ये पहली बार है जब किसी सरकार ने निजी मालकी वाली जायदाद खरीदी है और प्लांट का नाम तीसरे सिख गुरू, श्री गुरू अमरदास जी के नाम पर रखा गया है।

कोल्हान रक्षा संघ ने चलाया स्वच्छता अभियान सह फ़ुटबाल टूर्नामेंट -74 टीमों के बीच बांटें टीशर्ट

अनुशासन व स्वच्छता को जीवन में अपनाएं-डिबार जोंकों

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

पाड़्राशाली, खूंटपानी प्रखंड कार्यालय समीप भोया फुटबॉल मैदान में महात्मा गांधी जी के 156वीं जयंती के अवसर पर शनिवार को कोल्हान रक्षा संघ ने एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। साथ ही 74 फुटबॉल टीमों के खिलाड़ियों को शर्ट का वितरण किया। इसके पूर्व करीब सात दर्जन टीमों के बीच फूटबॉल मैच का आयोजन हुआ जहां सात महिला टीमें आकर्षक का केंद्रबिंदु रहीं कोल्हान की माटी में।

गांधी के मार्ग में चलकर साफ सफाई अभियान की शुरुआत सुबह 7 बजे खूंटपानी के भोया फुटबॉल मैदान में की गई। कोल्हान रक्षा संघ सचिव मानसिंह हेम्ब्रम के नेतृत्व में आयोजित साफ सफाई अभियान के तहत न सिर्फ सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई की गई, बल्कि स्थानीय खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें शर्ट भी वितरित की गई। अभियान में कोल्हान रक्षा संघ के दर्जनों सदस्य, स्थानीय युवा, खिलाड़ी और गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। इसी सप्ताह जोरदार फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन कोल्हान रक्षा संघ ने किया था।

कोल्हान रक्षा संघ के पूर्व प्रशासनिक पदाधिकारी अध्यक्ष डिबार जोकों ने कहा कि गांधी जी का सपना था स्वच्छ भारत, और हम इस दिशा में हर वर्ष इस दिन कुछ सकारात्मक करने का प्रयास करते हैं। इस बार हमने खिलाड़ियों को भी शामिल किया और उन्हें खेल सामग्री व शर्ट भेंट की गई ताकि वे प्रेरित हों और अनुशासन व स्वच्छता दोनों को अपने जीवन में अपनाएं। जबकि मानसिंह हेम्ब्रम ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य गांधी जी के स्वच्छता संदेश को जन-जन तक पहुंचाना और नगर को स्वच्छ, सुंदर और रोगमुक्त बनाना रहा। उन्होंने

कहा कि गांधी जी ने हमेशा स्वच्छता को राष्ट्र निर्माण का मूल मंत्र माना था। कोल्हान रक्षा संघ इस विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। वही स्थानीय खिलाडियों ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से न सिर्फ सामाजिक जिम्मेदारी की भावना बढ़ती है, बल्कि खिलाड़ियों को भी सम्मान और प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही 74 फुटबॉल टीमों के खिलाड़ियों को शर्ट का वितरण किया। इस दौरान मुख्य रूप से कोल्हान रक्षा संघ के अध्यक्ष डिबार जोकों, सचिव मानसिंह हेम्ब्रम, पुनम हेम्ब्रम, रविन्द्र मंडल, सिदेश्वर सवैया, पोरेश नायक, जय सिंह हेम्ब्रम, धनेश्वर हेम्ब्रम, विमल साहु, शिवनंद किस्कू, इन्द्र हेम्ब्रम, साधो ईचागुटू, नूनाराम माझी, पूर्व विधायक अनन्तराम टुडू, कार्तिक परिच्छा, कृष्णा चन्द्र हेम्ब्रम, दामोदर सिंह हांसदा, लक्ष्मण टूडू, चन्द्रमोहन मुर्मू, आदि उपस्थित थे।

बोकारो में 11 किलो गांजा, 10 पुड़िया ब्राउन शुगर बेचते तीन धराये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, बोकारो एस पी हरविंदर सिंह ने शनिवार को गांजा और ब्राउन शुगर तस्करी के एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ किया है। इस कार्रवाई में तीन तस्करों को गिरफ्तार किया गया और उनके पास से कुल 11.940 किलोग्राम गांजा सहित अन्य नशीले पदार्थ और सामग्री बरामद की गई। एसपी हरविंदर सिंह ने इस मामले की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि सिजुआ तालाब के पास दो युवक मोटरसाइकिल से गांजा और ब्राउन शुगर की पुड़िया बनाकर बेच रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई। टीम ने घेराबंदी कर दो युवकों को मोटरसाइकिल के साथ पकड़ा। तलाशी में उनके पास से 1.540 किलोग्राम गांजा, 10 पुड़िया ब्राउन शुगर और 850 रुपए नगद मिले।

पूछताछ में गिरफ्तार युवकों ने बताया कि वे बारी कोऑपरेटिव कॉलोनी निवासी अनिरुद्ध साव उर्फ हित से गांजा खरीदते थे। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने अनिरुद्ध साव के घर छापा मारा। वहां से 10.400 किलोग्राम गांजा, एक वेन्यू कार, 7939 रुपए नगद, इलेक्ट्रॉनिक तराजू और अन्य सामग्री जब्त की गई।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान अनिरुद्ध साव (47), गीत फैज अकरम उर्फ बॉबी (25) और गतजुब आलम (23) के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, इन सभी के खिलाफ पहले भी आपराधिक मामले दर्ज हैं। कुल बरामद सामग्री में 11.940 किलोग्राम गांजा, 10 पुड़िया ब्राउन शुगर, दो इलेक्ट्रॉनिक तराजू, एक कार, एक बिना नंबर की मोटरसाइकिल, तीन मोबाइल फोन, 450 ग्राम कटा पॉलिथिन, 1.2 किलोग्राम प्लास्टिक रैपर और कुल 8789 रुपए नगद शामिल हैं।

भारत के मशहूर क्रिकेटर अभिषेक शर्मा की बहन के विवाह में मेयर जतिंदर सिंह भाटिया और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान की शिरकत

अमृतसर, 03 अक्टूबर (साहिल बेरी)

भारतीय क्रिकेट टीम के मशहूर एवं उभरते खिलाड़ी अभिषेक शर्मा की बहन के विवाह समारोह में अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया और पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान ने विशेष रूप से भाग लिया। इस भव्य समारोह में दोनों नेताओं ने नवविवाहित जोड़े को शुभकामनाएँ और आशीर्वाद दिए तथा परिवार को खुशहाल जीवन की कामनाएँ व्यक्त कीं।

इस अवसर पर मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने अमृतसर शहर में चल रहे विकास कार्यों और भविष्य की योजनाओं को लेकर मुख्यमंत्री के साथ विशेष विचार-विमर्श किया। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने मेयर को पूरा विश्वास दिलाया कि अमृतसर के विकास और लोगों की भलाई के लिए राज्य सरकार की ओर से हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

विवाह समारोह में शामिल हुए सभी मेहमानों ने भी नवविवाहित जोड़े को सुखी एवं लंबे वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएँ दीं

आर्चबिशप सारा मल्लली डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, सीएनआई, द्वारा आर्चबिशप सारा मल्लली की ऐतिहासिक नियुक्ति का स्वागत

अमृतसर, 4 अक्टूबर (साहिल बेरी)

डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया (सीएनआई), ने लंदन की बिशप, द मोस्ट रेवरेंड सारा मल्लली की कैंटरबरी की पहली महिला आर्चबिशप के रूप में नियुक्ति की सराहना की है। डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, सीएनआई, के बिशप, द राइट रेवरेंड मनोज चरन ने इस अवसर पर आर्चबिशप मल्लली को हार्दिक बधाई दी।

यह नियुक्ति चर्च ऑफ इंग्लैंड और वैश्विक एंग्लिकन समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, सीएनआई, आर्चबिशप मल्लली के अपने विश्वास के प्रति समर्पण और उनके उत्कृष्ट नेतृत्व की सराहना करती है, और प्रार्थना करती है कि उनका कार्यकाल ज्ञान, करुणा और विश्वास से प्रेरित हो।

बिशप चरन ने कहा, "हम आर्चबिशप मल्लली के लिए विश्वव्यापी एंग्लिकन समुदाय की सेवा के इस नए अध्याय की शुरुआत में हर आशीर्वाद और सफलता की कामना करते हैं।"

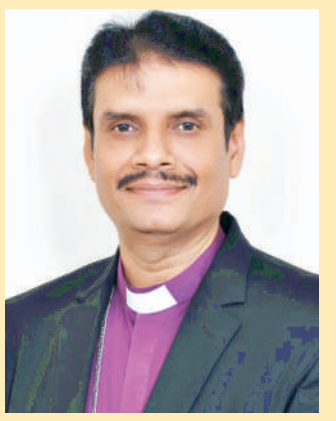

मौसम विभाग की भविष्यवाणी के मद्देनज़र हलका विधायक और डिप्टी कमिश्नर ने रावी के साथ लगते इलाकों का दौरा

ख़तरे वाली कोई बात नहीं पर सतर्कता रखने की ज़रूरत

अमृतसर, 4 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मौसम विभाग द्वारा पंजाब और साथ लगते राज्यों के कुछ हिस्सों में बारिश की संभावना को देखते हुए आज अजनाला हलके के विधायक श्री कुलदीप सिंह ढालीवाल और डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने रावी नदी के नज़दीकी इलाकों का दौरा किया। उन्होंने बताया कि बारिश के दौरान डैमों से पानी छोड़े जाने के कारण रावी और ब्यास नदियों के पानी के स्तर में कुछ उतार-चढ़ाव हो सकता है।

इस मौके पर डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि फिलहाल रावी और ब्यास नदियों का पानी पूरी तरह नियंत्रण में है और अपनी धारा में बह रहा है, लेकिन पहाड़ों में बारिश होने की संभावना के कारण डैमों से पानी छोड़ा गया है, जिससे पानी का स्तर बढ़ सकता है। इसीलिए नदी पार करने से परहेज़ किया जाए। विधायक श्री कुलदीप सिंह ढालीवाल ने भी समूचे निवासियों से अपील की कि इस समय के दौरान नदी पार करने की कोशिश न करें और किसान व पशुपालक अपने पशुओं को नदी किनारे या नदी के अंदर न जाने दें।

डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि ज़िला अमृतसर में रावी नदी में 21 चोआं, खड्डों और नालों के साथ-साथ उज्झ नदी से अनियंत्रित पानी आकर मिलता है। इस कारण घोनेवाल में पानी के सही स्तर की जांच करने के लिए एक गेज लगाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विभाग को अलग-अलग चोआं स्थलों पर गेज स्थापित करने के लिए भी हिदायत दी गई है।

यह उल्लेखनीय है कि अब तक आईएमडी की भविष्यवाणी कठुआ, गुरदासपुर, सांबा आदि में भारी बारिश की संभावना दर्शा रही है, जो रावी नदी की चोआं और खड्डों में पानी भर देती है। ज़िला प्रशासन दिन-रात स्थिति पर नज़र रख रहा है और 24x7 ड्यूटी पर अधिकारी तैनात किए गए हैं।

ज़िला प्रशासन की ओर से ज़िला स्तर पर हेल्पलाइन नंबर 0183-2229125 और अजनाला में हेल्पलाइन नंबर 01858-245510 भी स्थापित किए गए हैं। किसी भी असामान्य स्थिति में इन हेल्पलाइन नंबरों पर संपर्क किया जा सकता है।

आज अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्रीमती परमजीत कौर, एसडीएम श्री रविंदर सिंह और अन्य विभागों के अधिकारी भी इस मौके पर मौजूद रहे।

रेल मंत्रालय का बड़ा फैसला, ब्रह्मपुर सूरत अमृत भारत साप्ताहिक एक्सप्रेस नियमित रूप से चलेगी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वरः रेल मंत्रालय ने पश्चिमी, मध्य और पूर्वी भारत में लंबी दूरी की रेल कनेक्टिविटी में सुधार के लिए ट्रेन संख्या 19022/19021 बरहामपुर-सूरत (उधना)-बरहामपुर अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन सेवा के नियमित संचालन को मंजूरी दे दी है।यह नई रेल सेवा खनन, कपड़ा और व्यापार केंद्रों को जोड़कर आर्थिक और औद्योगिक गतिशीलता को बढ़ाएगी, तथा व्यवसायों और श्रमिकों की आवाजाही को समर्थन देगी।ट्रेन पलासा, विजयनगरम, रायगड़ा, टिटिलागढ़, रायपुर, नागपुर, भुसावल और नंदुरबार सहित प्रमुख स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में 22 आधुनिक श्रेणी के डिब्बे होंगे, जिनमें 11 सामान्य श्रेणी के बैठने के डिब्बे, 8 शयनयान श्रेणी के डिब्बे, 2 सामान सह दिव्यांगजन डिब्बे और 1 पेंट्री कार शामिल हैं। यह सेवा पश्चिम और पूर्वी भारत के बीच रेल संपर्क को मजबूत करके और सुरक्षित, आरामदायक और तेज़ यात्रा विकल्प प्रदान करके हजारों यात्रियों को लाभान्वित करेगी।

अमृत भारत एक्सप्रेस लंबी दूरी की रेल कनेक्टिविटी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अपने आधुनिक डिज़ाइन, किफायती किराए और एलएचबी डिब्बों के साथ, यह सेवा विशेष रूप से मध्यम वर्ग के यात्रियों को लाभान्वित करेगी जो किफायती यात्रा पर निर्भर हैं और साथ ही क्षेत्रीय विकास और जनसंख्या केंद्रित विकास में योगदान देगी।

यह नई ट्रेन सेवा खनन, कपड़ा और व्यापार केंद्रों को जोड़कर आर्थिक और औद्योगिक गतिशीलता को बढ़ाएगी, जिससे व्यापार और श्रम गतिशीलता को बढ़ावा मिलेगा।

पुलिस एसआई परीक्षा में भ्रष्टाचार के खिलाफ बीजद का 6 तारीख को विरोध प्रदर्शन

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वरः पुलिस एसआई परीक्षा घोटाले को लेकर बीजद ने राज्य सरकार पर निशाना साधा है। अगर सीबीआई तुरंत इस घटना की जाँच नहीं करती है, तो मुख्यमंत्री को पद छोड़ देना चाहिए। अगर 6 तारीख तक मामला सीबीआई को नहीं सौंपा गया, तो बीजद विरोध प्रदर्शन शुरू करेगा। बीजद नेता पृथ्वी रंजन गढ़ई और बीजू युवा जनता दल के अध्यक्ष चिन्मय साहू ने आज एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह चेतावनी दी।चिन्मय साहू ने कहा, 7 मार्च को अचानक घोषणा की गई कि एसआई परीक्षा स्थगित कर दी गई है। इसे अज्ञात कारणों से स्थगित किया गया था, लेकिन अभी तक इसका पता नहीं चला है। उस समय भाजपा नेताओं को कम हिस्सा मिला था। इसीलिए कैश फॉर जॉब अभियान शुरू किया गया था। पंचसॉफ्ट को इसकी ज़िम्मेदारी दी गई थी। परीक्षा जानबूझकर त्योहार के दौरान आयोजित की गई थी। यह एक सुनियोजित अपराध है। ओपीआरबी अध्यक्ष के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। अगर वह उनके शरीर को छूते हैं, तो वह सरकार की पोल खोल देंगे। इसीलिए सरकार उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं कर पाई है। अगर सीबीआई जांच तुरंत नहीं हुई, तो बीजू जनता दल और युवा जनता दल 6 तारीख को विरोध प्रदर्शन के लिए सड़कों पर उतरेंगे।

इसी तरह, पृथ्वी रंजन घड़ाई ने सवाल किया कि क्या एसआई परीक्षा घोटाले की जांच पारदर्शी होगी। ओपीआरबी अध्यक्ष और गृह सचिव की जांच क्यों नहीं की जा रही है?

इस बीच, भाजपा ने बीजद को कड़ा जवाब दिया है। भाजपा का कहना है कि बीजद का आंदोलन एक घोटाला है। पहले जब नवीन पटनायक सरकार के मुखिया थे, तब उनके गुर्गे तीसरी मंज़िल से सुपारी लेकर सर्टिफिकेट और नौकरियाँ बेचते थे। वे आकर कहते थे कि वे न्याय देंगे। उन्होंने ऐसी व्यवस्था बना रखी है और मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी उसे ध्वस्त करके युवाओं को न्याय दिलाने का काम कर रहे हैं, ऐसा भाजपा का कहना है।

कुख्यात अपराधकर्मी साजिद अंसारी लोडेड पिस्तौल के साथ गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, महज 70 दिन पहले सरायकेला जेल से छूटा अपराधी साजिद अंसारी उर्फ छोटा साजिद को पुलिस ने हथियार के साथ गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार लुनायत अपने कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी जानकारी दी है। एस पी लुनायत ने शुक्रवार को गुप्त सूचना के आधार पर अपराध कर्मी साजिद अंसारी उर्फ छोटा साजिद को मैदान कपाली से गिरफ्तार किया गया है।

शुक्रवार को जिस गुप्त सूचना प्राप्त हुई उसमें कपाली और आजादनगर का सक्रिय अपराधकर्मी साजिद अंसारी उर्फ छोटा साजिद कपाली ओ०पी० अंतर्गत सातातल्ला मैदान में बैठा हुआ है और इसके द्वारा किसी गंभीर घटना को अंजाम देने की योजना बनाई जा रही है। प्राप्त सूचना से वरीय पदाधिकारीयों को अवगत कराते हुए अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी चाण्डिल के निर्देशन में एक छापेमारी टीम का गठन कर सातातल्ला मैदान, डांगोडीह, कपाली में छापेमारी किया गया। जहां अपराधकर्मी मो० साजिद अंसारी उर्फ छोटा साजिद, उम्र 28 वर्ष, पिता- मो० शाहीद अंसारी, पता- रोड़ नंबर- 01, मोती जनरल स्टोर के सामने, रहमतनगर, डांगोडीह, कपाली, जिला- सरायकेला-खरसावों को अपराध की योजना बनाते अवैध लोडेड पिस्टल के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अपराधकर्मी की निशानदेही पर एक अन्य अवैध लोडेड देशी कट्टा एवं 02 जिंदा गोली बरामद कर विधिवत जप्त किया गया है। गिरफ्तार प्राथमिकी अभियुक्त मो० साजिद अंसारी उर्फ छोटा साजिद के विरूद्ध आयुद्ध अधिनियम के राहत मामला दर्ज कर जेल भेजा गया।

कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने धर्मजीत सिंह @ धर्मा के सनसनीखेज़ हत्या मामले का किया पर्दाफाश

तीन गिरफ्तार, मुख्य साज़िशकर्ता और विदेशी-आधारित हमलावर की हुई पहचान

अमृतसर, 04 अक्टूबर (साहिल बेरी)

कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने धर्मजीत सिंह उर्फ धर्मा की हत्या के मामले को सुलझाकर एक बड़ी सफलता हासिल की है। धर्मा की हत्या 26.09.2025 को छेहरटा, अमृतसर में गोली मारकर की गई थी। घटना के एक सप्ताह के भीतर ही पुलिस ने तीन आरोपियों – नवराज सिंह उर्फ नूर, दलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला और शुभदीप सिंह उर्फ शुभ – को गिरफ्तार कर लिया है।

मुकदमा विवरण

मुकदमा नंबर 193 दिनांक 26-09-2025

धारा 103, 61(2), 3(5) BNS, 25/27 आर्म्स एक्ट

थाना छेहरटा, अमृतसर

यह मामला उस शिकायत पर दर्ज किया गया था जिसमें कहा गया था कि तीन अज्ञात व्यक्तियों ने मोटरसाइकिल पर सवार होकर 26.09.2025 की आधी रात को धर्मजीत सिंह उर्फ धर्मा की हत्या कर दी। घायल को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक धर्मजीत सिंह पर पहले से ही आर्म्स एक्ट और एनडीपीएस एक्ट के 05 मामले दर्ज थे।

जांच विवरण

पुलिस टीम द्वारा सभी पहलुओं से जांच करने के बाद 02.10.2025 और 03.10.2025 को तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ से खुलासा हुआ किः

दलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला और शुभदीप सिंह उर्फ शुभ मुख्य साज़िशकर्ता थे, जो अंकुश उर्फ बाहमन (वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया में) के निर्देशों पर काम कर रहे थे।

दलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला ने नवराज सिंह उर्फ नूर की मदद से मृतक की रेकी की।

शुभदीप सिंह उर्फ शुभ ने हमलावरों – मनकर्ण सिंह, सैम और जोबन – के लिए मोटरसाइकिल और हथियारों की व्यवस्था की।

यह साज़िश एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा थी जिसमें स्थानीय और विदेशी अपराधी शामिल थे और जिनका संबंध संगठित अपराध से था।

गिरफ्तार आरोपी

1. नवराज सिंह उर्फ नूर
निवासीः सुभाष रोड, छेहरटा, अमृतसर
गिरफ्तारी की तारीखः 02-10-2025
पिछला मामलाः नहीं

2. दलविंदर सिंह उर्फ बिल्ला
निवासीः सुभाष रोड, छेहरटा, अमृतसर
गिरफ्तारी की तारीखः 03-10-2025
पिछला मामलाः नहीं

3. शुभदीप सिंह उर्फ शुभ
निवासीः सुभाष रोड, छेहरटा, अमृतसर
गिरफ्तारी की तारीखः 03-10-2025
पिछला मामलाः नहीं
नामज़द आरोपी
मनकर्ण सिंह दियोल, सैम और जोबन

पुलिस टीम

श्री रविंदरपाल सिंह, डीसीपी (इन्वेस्टिगेशन)

झारखंड में महिला मुखिया लपाता, पति ने दर्ज कराई एफआईआर

अपनी इमानदारी व जोश के लिए चर्चित थी 22 वर्षीया मुखिया सपना कुमारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, चोरी हथनी बरामद के बाद झारखंड के बोकारो जिले के गोमिया थाना क्षेत्र से एक कम उम्र की मुखिया ग़ायब है. इस खबर ने सबको चौका दिया है.

महज 22 साल की मुखिया सपना कुमारी पिछले दो दिन से लापता हैं. वह गुरुडीह पंचायत की मुखिया है. 22 साल की कम उम्र में जनता का विश्वास जीतने वाली सपना कुमारी 2022 के पंचायत चुनाव में अपनी ईमानदारी और जोश के लिए चर्चित चेहरा बन गई थीं.

अब पुलिस ने सपना को ढूंढने के लिए छानबीन शुरू कर दी है. उनके गांव में लोग परेशान हो रहे हैं, क्योंकि उन्होंने अपने काम से सभी का दिल जीता है.

हमेशा की तरह सपना 2 अक्टूबर की सुबह घर से निकली थीं. लेकिन उसके बाद जैसे वे हवा में गायब हो गईं. इसके बाद उनकी फैमिली ने फोन लगाया, तो उनका मोबाइल स्विचऑफ मिला. कई घंटे की बेचैनी के बाद उनके पति आशीष कुमार ने उनके लापता होने की गोमिया थाना में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई. बता दें कि सपना के पति पहले विदेश में इंजीनियर रह चुके हैं.

थाना प्रभारी रवि कुमार ने बताया कि मुखिया के लापता होने की खबर मिलते ही एक विशेष टीम गठित कर दी गई है. पुलिस आसपास के इलाकों में खोजबीन कर रही है. स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है और सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं ताकि किसी सुराग तक पहुंचा जा सके.

सपना की तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं. लोग उनकी सलामती की दुआ कर रहे हैं और प्रशासन से जल्द कार्रवाई की मांग कर रहे हैं. परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है. मुखिया के पति का नाम आशीष है, जो विदेश में इंजीनियर था, लेकिन पत्नी के मुखिया का चुनाव जीतने के बाद वापस आ गया और यहां काम देखने लगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023